तूरानी अभिजात्य वर्ग की मुगल साम्राज्य में भूमिका (1525 - 1605 ई०)

Turani Nobility Under the Mugal Empire (1525 - 1605 A-D)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध – प्रबन्ध

निर्देशिका
डॉ० (श्रीमती) रीता जोशी

शोधकर्ता
समर बहादुर सिंह

मध्यकालीन / आधुनिक इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

पूज्य पिता जी स्वर्गीय श्री विरेन्द्र प्रताप सिंह

तथा पूज्य माता श्रीमती मालती सिंह को

सादर समर्पित

प्राक्कथन

शोध कार्य का पहला सबसे महत्वपूर्ण काम है विषय का चयन। मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग तथा विशेष रूप से तत्कालीन विभागाध्यक्ष प्रो0 राधेश्याम सक्सेना जी तथा शोध निर्देशिका डा0 रीता बहुगुणा जोशी का अत्यन्त आभारी हूँ। जिनके प्रयासों के फलस्वरूप यह दुष्कर कार्य आसान हुआ।

यह विषय इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि संक्रमण काल में संस्थाओं का विकास राज्य के स्वरूप राजतंत्रीय परम्पराओं एव शासन पद्धति निर्धारित करने वाला आधार साबित होता है। हमारे अध्ययन काल 1525–1605 ई0 का महत्व इसी में है। क्योंकि यह काल भारतवर्ष में मुगल साम्राज्य की स्थापना एवं सुदृढ़ीकरण का काल था। बाबर की विजयों के फलस्वरूप भारत वर्ष में मुगल साम्राज्य की स्थापना हो गयी किन्तु चार वर्ष के अल्पावधि के शासन में बाबर चार प्रमुख युद्धों में ही व्यस्त रहा । यथा – पानीपात, खॉनवा, चन्देरी, घाघरा। अत. वह प्राशासनिक तन्त्र स्थापित व विकसित करने का अवसर ही नहीं पाया। काबुल में किये गये प्रशासनिक परीक्षण एवं उसकी असफलता का कटु अनुभव भी उसे प्रशासनिक परिवर्तन करने के लिए सम्भवतः विवश कर गया। काबुल की भाँति भारत से निष्कासित न होने की अदम्य लालसी ही उसे एक अभूतपूर्व सेनापति न कि एक सफल प्रशासक के रूप में भारत में पेश करती है।

किन्तु इन्हीं परिस्थितियों में एक नयी मुगल परम्परा का आधार स्थापित कर दिया। पूर्व प्रशासन की अविरलता भारतीय प्रशासनिक परम्परा की एक लम्बी विरासत अखिल रूप से प्रस्तुत होती है। इसी परम्परा के निर्वहन में अकबर ने प्रशासन तन्त्र राजसी सिद्धान्त एवं प्रबन्ध पद्धति में परिवर्तन तो किये किन्तु उनकी पूरी तरह भारतीय परम्पराओं एवं परिवेश में समन्वित भी किया। इस दृष्टिकोंण से बाबर का योगदान एक मील का पत्थर साबित हुआ।

किसी भी प्रशासन में भले ही वह राजतन्त्रीय क्यों न हो अभिजात्य की भूमिका का सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। क्योंकि वही शासक का सहायक एवं अवलम्ब होता है। यही वर्ग शक्ति का आधार और राज की नीतियों को क्रियान्वित करने वाला वर्ग है। अत. स्वाभाविक रूप से समकालीन संस्थाओं का विकास अथवा प्रशासन की धुरी की भूमिका का निर्वहन करता। बाबर पूर्णतः प्रतिकूल परिस्थितियों में एक विदेशी विजेता के रूप में भारत आया था। यहाँ के स्थानीय शासक तत्व अफगान तथा गुजरात उसे सहज स्वीकार न कर सके और येन-केन-प्रकारेण मुगल सत्ता को उखाड़ फेकने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे। किन्तु उसकी सूझ-बूझ सामरिक समक्ष एवं सैन्य कौशल के आगे उनकी योजनाएं साकार नहीं हो सकी। इस प्रतिरोध के प्रयास का परिणाम हुमायूँ को भुगतना पड़ा जिसे अन्ततः भारत से निष्कासित होना पडा।

हुमायूँ ने भारत पुनर्विजय करके बाबर की विजय परम्परा का कुछ सीमा तक पालन किया किन्तु यह विजय भारतीय परिधि तक ही सीमित रही। भारत की वास्तविक पुनर्विजय के साथ–साथ प्रशासनिक पुनर्गठन एवं साम्राज्यीय सुदृढ़ीकरणं का अद्भुत एवं वृहद कार्य अकबर ने काफी कम समय में करके जहाँ यश और कीर्ति कमायी वहीं प्रशासन के नवीन सिद्धान्तों एवं आदर्शो का भारतीय माहौल में समन्वय करके भारतीय जनमानस में उसे ग्राह्य एवं स्वीकार बनाने का अद्भुत कार्य किया। जैसा कि ऊपर वर्णित किया गया कि बाबर प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर रहा था अतः सजातीय तूरानी अमीरों की तरफ साझेदारी सहयोग एवं उनके विश्वास पात्र लोग के साथ वह सफलता पूर्वक प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर सकता था। अतः साथ में आये तूरानी अमीरों को जब वह खानवा युद्ध के पूर्व एवं बाद में भारत रूकने के लिए प्रयासरत है। वहीं इसी प्रत्याशा में वह मध्य एशिया से तूरानी अमीरों को भारत आने का आमंत्रण एवं लालच देता दिखायी देता है। हुमायूँ के काल में तूरानी अमीरों की यह प्रवृत्ति की यह भी शासन के भागीदार है। हुमायूं के लिए महंगी साबित हुई। यही प्रवृत्ति एक पुनः अकबर के शासन काल में दृष्टिगोचर होती है। जिसका सामना वह उदारता के साथ शक्ति संतुलन के सिद्धान्त के साथ अन्य गुटों को प्रश्रय देकर करता है। राजनीति के इन्हीं बदलते समीकरण के चलते जहाँ उमरा का अध्ययन महत्वपूर्ण

हो जाता है वहीं इस उमरा में तूरानी उपवर्ग की संरचना स्वभाव व भूमिकामहत्वपूर्ण होने के साथ–साथ एक दिलचस्प अध्ययन है।

उपरोक्त महत्वपूर्ण एवं दिलचस्प अध्ययन अमीरों की भूमिकाओं एवं उपवर्गों की संरचनाओं के चलते एक जटिल अध्ययन भी है। उन तमाम जटिलताओं के सहज विश्लेषण के लिए मैं अपनी निर्देशिका डा0 (श्रीमती) रीता बहुगुणा जोशी को कोटिशः धन्यवाद देकर भी आजीवन ऋणी रहूँगा। मैं उनके पति इं0 श्री पूरन चन्द्र जोशी के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहूँगा जिनका स्नेह मैं अनवरत रूप से पाता रहा। मैं मध्यकालीन/ आधुनिक इतिहास विभाग के समस्त प्राध्यापकों के प्रति सम्मान प्रकट करता हूँ जिन्होंने समय–समय पर मार्गदर्शन किया। विशेष रूप से डा0 हेरम्ब चतुर्वेदी को हृदय एवं निष्ठा से प्रणाम करता हूँ। उन्होंने विषम परिस्थितियों में प्रोत्साहित किया और मेरे शोध कार्य को उचित दिशा प्रदान की।

शोध कार्य पूर्ण करने में एक शिक्षक को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। महाविद्यालय के प्रशासनिक कार्यों से समय समय पर मुक्त रखने के लिए मैं कालेज की प्रबन्धक डा0 नागेन्द्र स्वरूप, प्राचार्य डा0 एम0के0 सिंह का विशेष रूप से आभारी हूँ। मैं अपने विभागाध्यक्ष प्रो0 पी0एन0 वर्मा,
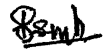
डा0 सुबोध सक्सेना, डा0 प्रशान्त मिश्रा एवं श्री सर्वेश्वर राम मिश्र का आभारी रहूँ। डा0 सुबोध सक्सेना एवं डा0 ज्योति सक्सेना का आभार व्यक्त करता हूँ क्योंकि उन्होंने सम्बन्धित ग्रन्थ अपनी व्यक्तिगत पुस्तकालय से उपलब्ध करायी। तथा अनेक महत्वपूर्ण विश्लेषण एवं सुझावों से सदैव मार्गदर्शन किया।

मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद , डी0ए0वी0 कालेज कानपुर कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर, डी0जी0 कालेज कानुपर, ईश्वरी प्रसाद शोध संस्थान इलाहाबाद, इलाहाबाद संग्रहालय तथा पब्लिक लाइब्रेरी इलाहाबाद के पुस्तकालयाध्यक्षों तथा पुस्तकालय कर्मियों को साधुवाद देता हूं जिनका अनन्य सहयोग इस शोध प्रबन्ध के तैयार होने में मिला है। मैं इस शोध प्रबन्ध का टंकण कार्य करने वाले श्री राकेश कुमार शुक्ला को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

मैं इलाहाबाद स्थित भारतीय इतिहास संस्थान अध्ययन के महासचिव तथा कार्यकर्ताओं के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। जिनके सहयोग से इस शोध प्रबन्ध की परिकल्पना पूर्ण हुई। मेरे अनुज डा0 राहुल दुबे का सहयोग अविस्मरणीय रहेगा।

अन्त में, यह कार्य निश्चित रूप से और दुरूह हो गया होता यदि मेरी पत्नी श्रीमती माधुरी सिंह का पूर्ण सहयोग न प्राप्त होता। शोध की व्यस्तता के कारण अनेक अवसरों पर आवश्यक दायित्वों की पुष्टि न कर पाने पर उन्होंने उसे सहज रूप में लेकर विशेष सम्बल प्रदान किया। पुत्री तन्वी एवं पुत्र मानस ने भी पूरा सहयोग दिया। अपनी तमाम मांगों को सीमित करके समय समय पर पढ़ने बैठकर उत्साहवर्धन किया। परम आदरणीया श्रीमती अरविन्द सिंह, डा0 रीता सिंह, डा0 एन0के0 सिंह, डा0 के0जी0 सिंह, इं0 ए0के0 सिंह, श्री एस0एस0 सिंह, डा0 एम0पी0 सिंह, श्री दिनेश चन्द्र दीक्षित, श्री सियाराम जी एवं मेरे मित्र डा0 ए0के0 चतुर्वेदी, श्री रंजय प्रताप सिंह, वीरेन्द्र देव त्रिपाठी का मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। इन लोगों ने समय समय पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन देकर इस कार्य को पूरा कराने में हर सम्भव सहायता प्रदान की।

साभार

(समर बहादुर सिंह)
शोध छात्र
मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

विषय सूची

*****

मुगलों की स्थापना से पूर्व सामंतों की स्थिति

कुतुबुद्दीन ऐबक की अचानक हुई मौत से दिल्ली राज तंत्र के सामने एक बड़ी चुनौती खड़ी हो गयी। ऐबक द्वारा उत्तराधिकारी की घोषणा न कर पाने के कारण तुर्क मलिकों और अमीरों को अचानक ऐबक का उत्तराधिकारी चुनने की आवश्यकता हुयी।[1] तत्काल निर्णय न लेने पर राज्य उत्तराधिकार के युद्ध की आग में झुलस सकता था। अतः राज्य के हित को ध्यान में रखते हुए आराम शाह को सिंहासन पर बैठाया गया। आराम शाह का व्यक्तित्व विवादास्पद रहा है। उसे ऐबक का पुत्र घोषित करने के सम्बन्ध में इतिहास मौन है। मिनहाज केवल उसकी तीन पुत्रियों का ही उल्लेख किया है, जिनमें से एक का विवाह इल्तुतमिश से हुआ था।[2] चूँकि आराम शाह के चयन में कुछ तुर्क मलिकों की उपेक्षा की गयी थी, इसलिए उसका चयन निर्विरोध नहीं हुआ। परिणामस्वरूप वह आठ माह से अधिक शासन नहीं कर सका।

आराम शाह के गद्दी पर बैठते ही देश के कई भागों में तुर्क अमीर अपनी स्वतंत्रता स्थापित करने का प्रयास करने लगे। कुबाचा ने भक्कर और

---

1. हबीब, निजामी, दिल्ली सुल्तनत (1978), पृ0–180
2. तबकाते नासिरी पृ0– 141

शिउरान पर अधिकार किया।[3] बंगाल में खल्जी मलिकों ने तथा कुछ स्वतंत्र राज्यों ने भी तुर्कों का नियंत्रण मानने से इन्कार कर दिया।[4]

इधर सिपहसालार (सेनापति) अमीर अली इस्माइल ने "अमीरे दाद" तथा कुछ अन्य तुर्क अमीरों और अधिकारियों ने इल्तुतमिश को दिल्ली पर अधिकार करने के लिए आमंत्रित किया।[5] इल्तुतमिश को आमंत्रित करने के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण यह भी था कि कुतुबुद्दीन ऐबक उसे अपना "पुत्र" कहकर पुकारता था और उसे बदायूँ की इक्ता भी प्रदान की थी।[6] इल्तुतमिश बिना किसी अवरोध के 1210 ई0 में दिल्ली के सिहांसन पर आरूढ़ हुआ। आराम शाह ने अमरोहा से सेना एकत्र कर इल्तुतमिश का विरोध करने के लिए दिल्ली प्रस्थान किया परन्तु उसे पराजित होना पड़ा। कुछ अन्य तुर्की सरदारों ने भी उसकी सत्ता का विरोध किया। परन्तु इन सभी का दमन किया गया। इसके बाद

---

3. फरिश्ता भाग–1, पृ0–64

4. वही

5 हबीब निजामी, दिल्ली सल्तनत (1978), पृ0–180

6. वही, पृ0–181

इल्तुतमिश ने दिल्ली, बदायूँ, अवध, बनारस तथा सम्पूर्ण शिवालिक प्रदेश पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया।[7] इल्तुतमिश मध्यकालीन भारत का एक श्रेष्ठ शासक साबित हुआ। उसने भारतीय इतिहास के पन्नों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। वास्तव में वह भारत वर्ष में मुस्लिम प्रभु सत्ता का वास्तविक संस्थापक था।[8] अपने कुशल संचालन से उसने भारत वर्ष में गोरियों द्वारा अधिकृत एक दुर्बल प्रदेश को एक संगठित राज्य अर्थात् "दिल्ली सल्तनत" मे परिवर्तित कर दिया।

राजवंशीय राज्य की स्थापना इल्तुतमिश के लिए राजनीतिक आवश्यकता थी।[9] जिसके लिए उसने ईरान की राजतंत्रीय परम्पराओं और भारतीय वातावरणए में समन्वय स्थापित किया। इल्तुतमिश के द्वारा स्थापित राजतंत्र की शक्ति का आधार सैनिक एवं प्रशासनिक सेवा थी जो दो दलों में विभक्त थी और विदेशियां से भरी हुई थी। प्रथम तुर्क दास अधिकारी (तुर्काने पाक अस्ल) और दूसरा ताजीक अर्थात् कुलीन वंशों के अतुर्क विदेशी (ताजिकाने गुजीदा वस्ल)[10] इल्तुतमिश को शिक्षित दास खरीदने में काफो रूचि थी। इसके तहत

---

7 मिनहाज, पृ0– 170–71

8. आर0पी0त्रिपाठी, सम आस्पेक्टस आफ मुस्लिम एडमिनिस्ट्रेशन इन इण्डिया, पृ0–24

9. हबीब निजामी, दिल्ली सल्तनत (1978), पृ0–192

10. हबीब निजामी, पृ0–192

ईरान के दक्षिणी समुद्र तट के बंदरगाहों से कुछ दास इल्तुतमिश के लिए लाये गये। जिसमें बल्बन ओर उसका चचेरा भाई शेर खाँ शामिल था। यह दास जो अजम के विभिन्न भागों से लाये गये थे और जिन्हें तुर्क समझा जाता था स्वयं को एक दूसरे का भाई समझते थे।[11] इल्तुतमिश के जीवन काल तक तो ये उसके दास थे, परन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात वे अपने को "सुल्तानी" अर्थात् "सुल्तान का दास या अधिकारी जिसे उसने सिहांसन पर बैठाया था", कहने लगे।

दिल्ली सल्तनत का संस्थापक होने के नाते उसकी प्रशासनिक संस्थाओं के विकास में इल्तुतमिश का महत्वपूर्ण योगदान था। उसने एक ऐसा राज्य स्थापित किया जो पूर्णतया भारतीय था, किन्तु उसके उच्चपदीय अधिकारी तुर्क दास और ताजीक थे।[12] किन्तु, स्वयं तुर्क होन के कारण, उसके तुर्क दास अधिकारियों के समर्थन के महत्व को समझा एवं तुर्क दास अधिकारियों को तुर्कए चहलगानी में संगठित किया।

---

11 हबीब निजामी, पृ0–193

12 वही, पृ0– 194

इल्तुतमिश ने अपने पुत्र मलिक सईद नसीरूद्दीन महमूद पर ही विश्वास किया था। साम्राज्य के मलिक और अधिकारी भी उसे ही उत्तराधिकारी समझते थे।[13] परन्तु दुर्भाग्यवश उसकी मौत हो गयी और इल्तुतमिश ने रजिया का चयन किया। यह एक क्रान्तिकारी निर्णय था। इल्तुनमिश ने उसकी योग्यता स्वयं परखी थी, क्योंकि वह अपनी माता तुर्का खातून के साथ "कूश के फिरोजी" में ही रही थी।[14] जब इल्तुतमिश ग्वालियर अभियान पर गया तो उसने दिल्ली का शासन रजिया के जिम्में ही सौंपा था।[15] 1232 ई0 में दिल्ली लौटने पर रजिया के कुशल प्रशासन से प्रभावित होकर ही सुल्तान ने तुरन्त उसे उत्तराधकारी घोषित करने का मनोनयन पत्र तैयार करने का निर्देश दिया।[16] कुछ मलिकों के इस निवेदन पर कि पुत्र के रहते पुत्री को उत्तराधिकारी घोषित करना अनुचित है, इस पर इल्तुतमिश ने कहा कि मेरी मृत्यु के बाद तुम्हें ज्ञात हो जायेगा कि उसके समान कोई और शासन नहीं कर सकता।[17] इस अवसर पर एक मुद्रा प्रचलित की गयी, जिस पर सुल्तान

13· तबकाते नासिरी पृ0–181

14· मिनहाज, पृ0–185

15· फरिश्ता, भाग–1, पृ0–68

16 मिनहाज, पृ00–185

17· वही, पृ0: 185–186

के साथ रजिया का नाम भी अंकित था।[18]

30 अप्रैल 1236 ई0 को इल्तुतमिश का देहान्त हो गया।[19] सुल्तान इल्तुतमिश की मृत्यु के साथ उसके दासों में सत्ता के लिए आकर्षण स्पष्ट दिखाई पड़ता है और उसके चिहलगामी (चालीस दास) में से एक ने रक्तपात के जरिये सत्ता हासिल की और कई चिहलगामी के कई दासों को मौत की नींद सुलाया। ये दास इल्तुतमिश के पालन पोषण में ही इतने सशक्त हुए थे कि उसकी मृत्यु के बाद अपने को सिंहासन की दौड़ में खड़ा कर लिये। अन्त में इन्हीं में से एक ने रजिया से सत्ता हासिल की और सशक्त शासक के रूप में शासन किया।

सुल्तान इल्तुतमिश की मृत्यु के पश्चात मलिकों ने घोषित उत्तराधिकारी को अस्वीकार करते हुए उसके पुत्र रूकनुद्दीन फिरोज शाह को 1236 ई0 में सिंहासनारूढ़ कर दिया। परन्तु उसकी इंद्रिय लोलुप व्यसनों ने उसे योग्य शासक बनने से काफी दूर कर दिया। परिणामस्वरूप शासन पर उसकी माता शाह तुर्कां का नियंत्रण स्थापित हो गया। रूकनुद्दीन की माता शासन

---

18. जे0एम0एस0बी0 (1896), पृ0-66 तथा नेल्सन साइट, पृ0: 40-46

19. मिनहाज, पृ0-176

व्यवस्था संभालते ही अत्याचार करने लगी। उसने इल्तुतमिश के रनिवास की स्त्रियों से दुर्व्यवहार किया और कई का वध करवा दिया।[20] जब इल्तुतमिश के और पुत्र कुतुबुद्दीन को अंधा कराकर उसे मार डाला गया तब मलिकों का शासन पर से विश्वास हट गया और देश के विभिन्न भागों में विद्रोह होने लगे।[21] गयासुद्दीन मुहम्मद शाह ने अवध में, मलिक मुइजुद्दीन ने बदायूँ में, मुल्तान ने मलिक सैफुद्दीन तथा लाहौर में मलिक अलाउद्दीन जानी ने विद्रोह कर दिया। सुल्तान ने उसका दमन करने के लिए दिल्ली से कूच किया किन्तु उसे अधिकारियों का कोई समर्थन नहीं मिला। प्रधानमंत्री निजामुल मुल्क जुनैदी कैलूगढ़ी के निकट सेना से पृथक होकर कोयल भाग गया। तत्पश्चात जुनैदी और सालारी मलिक जानी और कूची की सेनाओं से मिल गये।[22] मलिकों और अमीरों का विद्रोह दावानल की भाँति भड़क उठा। इसी समय तुर्क अमीरों और सुल्तान के घरेलू दासों ने मंसूरपुर और तराइन के निकट ताजीक अफसरों की हत्या कर डाली। साम्राज्य में व्याप्त अराजकता और विद्रोह ने रजिया को अवसर का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। शाह तुर्कों से भी उसके अच्छे सम्बन्ध नहीं थे।[23]

---

20. हबीब निजामी, पृ0–200

21 मिनजाहज, पृ0–183

22. वही

23. वही, पृ0–184

उसनें फरियादी के लाल वस्त्र धारण कर जुम्मे की नमाज के लिए इक्ट्ठा हुई दिल्ली की जनता से अपील की ताकि उसे शाह तुर्कों के अत्याचारों से मुक्ति मिल सके। जन समूह ने महल पर आक्रमण कर दिया और शाह तुर्का बन्दी बना ली गयी।[24] इसी समय फिरोज दिल्ली लौटा लेकिन माहौल उसके विरूद्ध था, सेना तथा अमीर रजिया से मिल गये और उसे सिंहासनारूढ़ कर दिया। रूकनुद्दीन को बन्दी बना लिया गया और 19 नवम्बर 1236 ई0 को उसका बध कर दिया गया।[25]

रजिया के राज्यारोहण में कई आश्चर्यजनक विशेषताएं थी। सल्तनत के इतिहास में पहली बार उत्तराधिकार के सवाल पर जनता ने निर्णय लिया था। रजिया ने जनता से यह वादा कर सिहांसनारूढ़ हुई थी यदि वह उनकी अपेक्षाओं पर खरी न उतरी तो जनता उसे पद्च्युत कर दे।[26] जनता का यह निर्णय शासकीय विषयों में धर्माधिकारियों की उपेक्षा थी, क्योंकि एक स्त्री का सत्तासीन होना इस्लामी परम्परा के विरूद्ध था। दिल्ली की सेना और

---

24. मिनहाज, पृ0-184
25. वही
26. फुतूहुस्सलातीन, पृ0-132

जनता ने रजिया को सिहांसन पर बैठाया था इसलिए स्वाभाविक तौर पर प्रान्तीय राज्यपालों की उपेक्षा कर उन्हें लज्जिन किया गया था। परिणामस्वरूप रजिया को अपने शासनकाल के आरम्भ से ही उनके विरोध का सामना करना पड़ा।[27] उसमें बादशाहों के अनुकूल सभी गुण विद्यमान थे, इसलिए उसने इस सभी समस्याओं का निराकरण सहजता से किया।[28] परन्तु स्त्री होना उसकी सबसे बड़ी समस्या थी, जो उसकी बौद्धिक और मानसिक योग्यताओं के स्वतन्त्र प्रयोग में बाधक बना। उसके शासन काल की घटनाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि उसका विरोध विशेष रूप से जातीय आधार पर हुआ। वह गैर तुर्कों का एक प्रतिस्पर्धी दल बनाकर तुर्क सामंतों की शक्ति संतुलित करना चाहती थी और इसी कारण उसका विरोध होने लगा।[29] रजिया को पहले विरोध का सामना तब करना पड़ा जब इल्तुतमिश के प्रसिद्ध वजीर निजामुल मुल्क जुनैदी ने उसका

---

27. हबीब; निजामी, दिल्ली सल्तनत (1978), पृ0: 202
28. मिनहाज, पृ0–185
29. हबीब निजामी, पृ0–203

राज्यारोहण अस्वीकार कर दिया। प्रसिद्ध तुर्क सामंतों जैसे मलिक अलाउद्दीन जानी, मलिक सैफुद्दीन कूची, मलिक इजुद्दीन, कबीर खॉ अयाज और मलिक ईजुद्दीन, मुहम्मद सालारी ने जुनैदी का समर्थन किया और सबसे मिलकर रजिया का विरोध करने का फैसला किया। परन्तु रजिया को जनता का समर्थन प्राप्त होने के कारण विपल्व नहीं हो सका।[30] रजिया ने विद्रोहियों के विनाश का निश्चय किया। मलिक सैफूद्दीन कूची पकड़ा गया।[31] निजामुल जुनैदी अपना शिविर छोड़कर भाग गया, जबकि अमीर गुप्त रूप से रजिया से मिल गये। मलिक अलाउद्दीन जानी की की हत्या कर उसका कटा हुआ सिर दिल्ली लाया गया।[32] विद्रोहियों का दमन करने के बाद रजिया ने शासन का पुनर्गठन किया। ख्वाजा मुहज्जबुद्दीन को वजीर नियुक्त किया। मलिक सैफुद्दीन के पास सेना की कमान रही। किन्तु शीघ्र ही उसकी मृत्यु के पश्चात मलिक कुतुबुद्दीन हसन गोरी लश्करे– लोइबा नियुक्त किया गया।[33] रजिया ने राजनीतिक दूरदर्शिता से शासन

---

30. हबीब निजामी, पृ0: 203

31 मिनहाज, पृ0: 186–187

32 वही, पृ0–187

33. वही

किया और शीघ्र ही लखनौती से देवल तक सभी मलिकों और अमीरों ने उसकी सत्ता स्वीकार कर ली।[34] इसके बाद रजिया ने कई विद्रोहों का दमन दिल्ली से बाहर जाकर किया। इधर रजिया के विरूद्ध षडयंत्र की योजना बनायी जा रही थी। इन षडयंत्रकारियों में कबीर खॉ प्रमुख था। 1238–39 रजिया ने उसके विरूद्ध कूच किया। तो वह सोदरा की ओर भाग गया। परन्तु बाद में उसने आत्म–समर्पाण कर दिया। परन्तु रजिया के विरूद्ध विद्रोह प्रारम्भ हो चुका था और कई मलिकों ने रजिया के विरूद्ध सामूहिक योजना पर काम करना शुरू कर दिया था। इधर रजिया ने जमाकुद्दीन याकूत हब्सी को अपना विश्वास पात्र बना लिया। यह बात भी अमीरों के गले से नीचे नहीं उतरी। कई अमीरों ने स्वामि भक्ति त्याग दी। रजिया 1240 ई0 में दिल्ली वापस आ गयी और अल्तूनिया से विवाह कर लिया।[35] यह समझौता दोनों के लिए ही लाभप्रद था। सितम्बर/अक्टूबर 1240 में मुइजुद्दीन बहराम ने एक सेना के साथ उसके विरूद्ध कूच किया और रजिया तथा अल्तूनिया पराजित कर खदेड़ दिये गये, जब वे कैथल के निकट पहुँचे तो सैनिकों ने उनका साथ छोड़ दिया और हिन्दुओं द्वारा पकड़े जाने के बाद वे शहीद हुए।[36] रजिया ने 3 वर्ष 6 माह तक शासन किया।[37]

---

34 मिनहाज, पृ0–187

35 वही. पृ0–392

36 हबीब निजामी, पृ0–206

37 मिनहाज, पृ0–392

जब रजिया ताबर हिंदा के दुर्ग में बन्द थी उसी समय 21 अप्रैल 1240 ई0 को मुइजुद्दीन बहराम शाह दिल्ली के सिहांसन पर बैठे। शाही महल में मलिकों और अमीरों ने 5 मई 1240 को उसके प्रति निष्ठा प्रकट की।[38] दरबारी उसे एक सत्तासीन राजकुमार के रूप में ही जानते थे और उन्होंने यह समझने में भयंकर भूल की कि उसे शासन पर नियंत्रण दिये गये बगैर ही सिहांसन पर बनाये रखा जा सकता है। उसने दो माह के ही शासन काल में यह एहसास करा दिया कि वह वास्तविक शासक है। मुइजुद्दीन बहराम ने बद्रुद्दीन सुनकर रूमी को अपना "अमीरे हाजिब" नियुक्त किया। समकालीन दृष्टि से मुइजुद्दीन बहराम शाह के शासन काल की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी इख्तियारूद्दीन कराकुश द्वारा 12 दिसम्बर 1241 ई0 को लाहौर छोड़ना और दूसरे दिन मंगोलों द्वारा उसका लूटा जाना।[39] इधर मंगोलों के आक्रमण ने भी विषम स्थिति पैदा कर दी थी। 1242 ई0 में मंगोल सेनाओं ने लाहौर की ओर कूच किया । इधर कबीर खॉ ने छत्र धारण कर अपने सैनिक एकत्रित किये और धर्मयुद्ध के लिए तेयार हो गया। इस सूचना के बाद मंगोल आक्रमण करने के उद्देश्य से नगर के द्वार तक पहुँच गये।[40] मंगोलों ने नगर पर अधिकार कर

---

38. मिनहाज, पृ0–191

39. वही, पृ0–195

40. वही, पृ0: 392–396

लिया और मलिक कराकुश दिल्ली भाग गया। सुल्तान ने मंगोलों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए और उत्तर – पश्चिमी सीमा की रक्षा के लिए मलिक हसन कुतुबुद्दीन गोरी और ख्वाजा मुहज्जबुद्दीन को अन्य अमीरों के साथ भेजा। इधर एक चाल चलाते हुए मुहज्जबुद्दीन ने सुल्तान के फरमान से अन्य अमीरों का वध करने का आदेश अमीरों को बताकर उन्हें सिंहासन से उतारने में सहयोग का वचन ले लिया। तमाम प्रयासों के बावजूद विद्रोह शान्त नहीं किया जा सका और 10 मई 1242 को अमीरों और तुर्कों ने नगर पर अधिकार कर लिया। बाद में बहराम शाह का वध कर दिया गया।[41]

तुर्क दास अधिकारियों अथवा तुर्की उमरा ने तीन राजकुमारों को मुक्त कर दिया और रूकनुद्दीन फिरोज शाह के पुत्र अलाउद्दीन मसूद को सुल्तान घोषित किया। उसने चार वर्ष 1 माह शासन किया। 1246 ई0 को उसे भी कारागार में डाल दिया गया और सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का पौत्र नसीरूद्दीन महमूद 1246 ई0 में सिंहासनारूढ़ हुआ।[42] इल्तुतमिश की मृत्यु के पश्चात एक दशक में चार राजकुमार सिंहासन पर बैठे और बाद में पद्च्युत कर मार डाले गये। सोलह वर्ष के नसीरूद्दीन के लिए यहएक चेतावनी भी थी और

---

41. हबीब निजामी, पृ0–212

42. वही, पृ0–216

सबक भी। शम्सी मलिक ही उसके समर्थक भी थे और खतरे का स्रोत भी वही थे। नसीरूद्दीन उनकी बात मानने के लिए विवश था, क्योंकि उसके पास और कोई विकल्प भी नहीं था। इस परिस्थिति में उसने सेना के सरदारों की सद्भावना प्राप्त करने का प्रयास किया और धीरे-धीरे वह एक मुक्त शासक की भाँति शासन करने लगा। जब तक शम्सी मलिकों में एक राय रहती थी तब तक तो नसीरूद्दीन उनकी सहमति से शासन चलाता था, परन्तु समस्या तब उत्पन्न होती थी जब ये मलिक दो समानांतर दलों में विभक्त हो जाते थे। चूँकि उसके शासन काल में बहाउद्दीन बल्बन ही मुख्य मलिक था। इसलिए सुल्तान वही करता था जो बलबन चाहता था। उसकी नीति थी कि प्रत्येक वर्ष शरद ऋतु में वह राजकीय पताका मंगोलों, स्वतन्त्र हिन्दू शासकों और विद्रोही मलिकों के विरूद्ध ले जाता था।[43] बल्बन की मजबूत स्थिति का एहसास इसी से लगाया जा सकता है कि शासन के चौथे वर्ष में नसीरूद्दीन ने उसकी पुत्री से विवाह कर लिया।[44] इसी वर्ष बहाउद्दीन बल्बन शासन का संरक्षक अर्थात् "नायबे ममलकत"

---

43 हबीब निजामी, पृ0-218

44. मिनहाज, तुर्क मलिकों की जीवनियां, अध्याय-22, पृ0-24

बनाया गया और उसे सेना तथा शासन पर पूर्ण अधिकार दिये गये।[45] उसके नये पद के अनुरूप उसकी पदवी मलिक से खान कर दी गयी। "उलुग खाँ" अर्थात् सर्वोच्च खान का खिताब समझा गया। उसके छोटे भाई सैफुद्दीन ऐबक को "अमीरे आखूर" से "अमीरे हाजिब" यह पद बल्बन से रिक्त हुआ था। उसे कश्ली खाँ की उपाधि देकर खानों की श्रेणी में सम्मिलित किया गया।[46] "मलिक ताजुद्दीन तबर खाँ "नायबे अमीर हाजिब" तथा अलाउद्दीन आयाज रेहानी "नायबे वकीलेदर" नियुक्त हुआ।

नसीरूद्दीन के शासन काल में एक महत्वपूर्ण विषय तुर्क खानों और मलिको के दलों का सत्ता के लिए संघर्ष है। 1252–53 ई0 में तुर्क और तुर्की मलिकों को बर्दाश्त नहीं कर पाते थे।

उलुग खाँ का मुख्य प्रतिद्वन्दी हुसामुद्दीन कुतलुग था। अधिकांश

---

45. मिनहाज, तुर्क मलिकों की जीवनियाँ, अध्याय–22, पृ0–24

46. वही

लोग उसे तुर्क और तुर्क मलिकों में श्रेष्ठ समझते थे। कुतलुग का मुख्य समर्थक उसका जमाता किश्लू खॉ था। दोनों ही ल यह समझते थे कि उत्तरी भारत वर्ष में तुर्क दास अधिकारियें की स्थिति ऐसो है कि वह गृह युद्ध का खतरा नहीं ले सकते।

27 दिसम्बर 1252 ई0 को शाही सेना उच्छ और मुल्तान के मार्ग से गजनी और मुल्तान की ओर रवाना हुई। इस अभियान में सभी प्रान्तीय खान और मलिक शामिल थे। बयाना से कुतलुग खॉ और बदायूँ से इजुद्दीन किश्लू खॉ व्यास नदी के तट तक उनके साथ गये। इधर इमामुद्दीन रैहान ने गुप्त रूप से सुल्तान और मलिकों का उलुग खॉ के प्रति रूख बदल दिया। उलुग खॉ की हत्या का प्रयास किया गया, परन्तु वह विफल हो गया। अपनी योजना में सफल न होने के बाद विरोधी दल एक मत होकर शाही शिविर में आया और प्रस्ताव किया कि उलुग खॉ को अपनी इक्ता की ओर चले जाना चाहिए सुल्तान ने उलुग खॉ को चले जाने का आदेश दिया और अप्रैल 1253 में उलुग खॉ होजी की ओर चल दिया। कुतलुग किश्लू और इमादुद्दीन को तात्कालिक लाभ मिल गया था, किन्तु कुछ समय के मनन के पश्चात शम्सी मलिकों का रूझान उलुग खॉ की ओर होना ही था।

इख्तियारूद्दीन ऐबक "मूए दराज" को "नायब अमीरे आखूर" के पद से प्रोन्नत कर अमीर आाखूर बनाया गया। इन नियुक्तियों ने उलूग खॉ को सर्वसत्ताधिकारी बना दिया था। उसकी इन आरम्भिक उपलब्धियों ने अन्य तुर्क मलिकों को उसके प्रति ईर्ष्यालु बना दिया।[47] अन्य अमीरों और सामन्तों को सबक सिखाने के साथ ही सत्ता पर बल्बन का नियंत्रण लगातार बढ़ता गया। इस दौरान बल्बन ने कई अभियानों को नेतृत्व किया। जिसमें 1250 में शेर खॉ, 1252 में बिहार के राज्यपाल अलाउद्दीन जानी का पुत्र हुसामुद्दीन, आदि शामिल है। कई बार मलिकों को अपने पक्ष में कर उलूग खॉ ने सुल्तान के लिए भी समस्याएं खड़ी की। इधर बीच उलूग खॉ ने सत्ता की संघर्ष में एक और पादान चढ़ते हुए सुल्तान नसीरूद्दीन को उसे "शाही छत्र" देने के लिए विवश किया।[48] सिहांसन पर उसकी दृष्टि होने की बात कहीं भी छिपी नहीं थी। अपनी सत्ता प्राप्ति की तीव्र आकांक्षा के बीच ही उसने अजोधन के शेख फरीद से भी भैंट की।[49]

---

47 मिनहाज, तुर्क मलिकों की जीवनियां, अध्याय–22, पृ0–24

48 हबीब निजामी, पृ0–230

49 सियरूल औलिया, पृ0–79

1266 ई0 में एक षडयंत्र के तहत नसीरूद्दीन को विष दे दिया गया।[50] 1266–67 में सुल्तान की मृत्यु हो गयी और इसी के साथ शम्सी वंश का पतन हो गया। शासन का नियंत्रण हाथ में होने के कारण उलूग खाँ को 'गयासुद्दीन बल्बन" का खिताब धारण कर सिहांसनारूढ़ होने में कोई समस्या नहीं हुयी। उसने तत्काल पुराने राजवंश को नष्ट करने के लिए प्रभावी कदम उठाया और खुलेआम या षडयंत्रों के तहत इल्तुतमिश के अधिकांश वंशजों को जिन्हें वह सिहांसन के लिए उम्मीदवार समझता था, मार डाला गया।[51] बल्बन ने स्वयं को वंशानुगत शासक की भाँति स्थापित करने की योजना के तहत कार्य करना प्रारम्भ कर दिया और वैसा ही आचरण करने लगा। वह स्वयं को पौराणिक अफरासियाब का वंशज कहता था और यह भी कहता था कि वह ईश्वर का प्रतिनिधि तथा आम आदमी से ऊपर है।[52] सिहांसन पर बैठन के बाद बल्बन को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। अपनी योजना

---

50. ईसामी, पृ0: 156–57

51. फरिश्ता, भाग–1, पृ0–76

52. हबीब निजामी, पृ0–232

के तहत उसने उस अस्त्र को प्रभाव हीन किया जिसका इस्तेमाल उसने स्वयं किया था। मलिकों और अमीरों को उसने यह बताने का प्रयास किया कि सुल्तान की पद उनकी पहुँच से बाहर है उनके सुल्तान और मलिकों के बीच कोई प्रतिस्पर्धा ही नहीं है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उसने दिल्ली के सुल्तान की शक्ति और मान–मर्यादा स्थापित की और नये राजत्व सिद्धान्त का सृजन किया।[53] कानून व्यवस्था ठीक करने के लिए उसने कठोर दण्डों को निर्धारित किया और भ्रष्ट और नृशंस हत्याओं द्वारा शान्ति बनाये रखने का प्रयास किया। कई सैन्य अभियानों का सफलता पूर्वक संचालन किया। उसने शक्ति संतुलन स्थापित करने के लिए योग्य तुर्क सामंतों को मार्ग से हटाया। उसने तुर्कान चिलहगानी के सदस्यों का बर्बरता से विनाश किया जबकि वह स्वयं भी इस दल का सदस्य रह चुका था।[54] बल्बन को अपने जीवन के अन्तिम समय में दैवी आपदाओं का भी सामना करना पड़ा, जब लगभग 80 वर्ष की उम्र में उसके पुत्र मुहम्मद की मृत्यु हो गयी और बल्बन को उसकी सांसारिक

---

53 हबीब निजामी, पृ0–232

54. वही, पृ0: 232–233

आशायें बिखरती नजर आयी। अन्त में बल्बन का साहस टूट गया था और मुहम्मद के ज्येष्ठ पुत्र कैखुसरों को उत्तराधिकारी नियुक्त किया, परन्तु उसकी मृत्यु के बाद मलिको और अमीरों ने अनुभवहीन कैकुवाद को शासक बना दिया। वह आमोद– प्रमोद में व्यस्त रहता था। परिणामस्वरूप शासन का कार्यभार और लोगों को संभालना पड़ा। इस स्थिति का लाभ उठाकर मलिक निजामुद्दीन काफी शक्तिशाली हो गया था। उसने ही कुखुसरों की हत्या भी करवायी थी।[56] कुछ समय तक कैकुवाद ने मदिरा और शिकार त्याग दिया था। परन्तु जल्द ही वह अपने पुराने रूप में आ गया और स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। इस बीच उसने निजामुद्दीन को मुल्तान जाने का आदेश दिया। परन्तु उसने बहाना बना दिया। इस दौरान तुर्क अधिकारियों ने अवसर देखकर निजामुद्दीन की हत्या कर दी। निजामुद्दीन की मृत्यु के बाद कैकुवाद ने सामना से मलिक फिरोज खल्जी को बुलाकर आरिजे – ममालिक नियुक्त किया और शाइस्ता खॉ की उपाधि दी।[57]

---

55. हबीब निजामी. पृ0–253

56. तारीखे मुबारक शाही, पृ0–52
तथा इसामी, पृ0: 190–192

57. हबीब निजामी, पृ0–257

अन्त में दरबारी सामंतों की महत्वाकांक्षायें दो गुटों में बँट गयी। एक का नेता शाइस्ता खॉ तो दूसरे का मलिक ऐतमुर सुखी था। बाद में दोनों दलों के बीच खुलेआम युद्ध हुआ। बाद मे कैकुवाद को पुनः शासन सौंपा गया और फिरोज खल्जी उसकी संरक्षक बना। वह तीन मास तक ही सिंहासन पर रह पाया।[58] फिरोज खल्जी के निर्णयानुसार उसके बीमार और लकवाग्रस्त शरीर को यमुना में फेक दिया गया। उसके साथ ही दास सामंतों का सत्ताधिकार समाप्त हो गया। बल्बन ने अपनी निरंकुशता बनाए रखने हेतु सुनियोजित ढंग से उमरा के संगठन पर प्रहार किये थे, जिसके परिणामस्वरूप तुर्क अमीर श्री हीन एवं शक्तिहीन हो गये । इसी के परिणामस्वरूप, जब खल्जी अमीरों से निर्णायक संघर्ष हुआ तो श्रेष्ठता एवं अधिक दल के आधार पर, खल्जी सतारूढ़ हो गये।

जून 1290 ई0 में शाइस्ता खॉ, जलालुद्दीन, फिरोज खल्जी के नाम से सिहांसनारूढ़ हुआ और खल्जी वंश की स्थापना की। जलालुद्दीन मैत्री पूर्ण स्वभाव का था और यही स्वभाव नई व्यवस्था के लिए एक शुभ

---

58. तारीखे मुबारक शाही, पृ0–61

लक्षण था।[59] असन्तुष्ट नागरिकों का भी उसने पूरा ख्याल किया और इसी कारण से उसने दिल्ली में विलम्ब से प्रवेश किया और कैकुबाद के केलूगढ़ी स्थित अधूरे राजमहल में अपना दरबार स्थापित किया।[60] तत्पश्चात् शासन के पुनर्गठन में उसके सम्बन्धियों और समर्थकों को मुख्य पदों की प्राप्ति हुई। बल्बन के मित्र और दिल्ली के प्रमुख नागरिक मलिकुल उमरा फखरूद्दीन को राजधानी का यथावत कोतवाल बनाये रखा गया। ख्वाजा खतीर प्रधानमंत्री बना रहा।[61] फिरोज एक निष्कपट शासक था, परन्तु छः वर्ष में ही वह मलिकों अमीरों तथा अपने पारिवारिक सदस्यों के द्वारा बिछाये गये जाल में फंस गया और जुलाई 1296 ई0 में उसके भतीजे अलाउद्दीन ने उसकी हत्या करवा दी और स्वयं को शासक घोषित कर दिया।[62]

---

59 हबीब निजामी, पृ0–272

60 वही

61 वही

62 बानी, पृ0–223–226

1296 ई0 जलालुद्दीन के बड़े भाई शिहाबुददीन मसूद के ज्येष्ठ पुत्र अली गुरसास्प अलाउद्दीनिया–वद्दीन मुहम्मद शाह सुल्तान के नाम से गदी पर बैठा। वह धीर, सावधान, साहसी, निष्ठुर और सफल नियोजक तथा संगठन कर्ता था।[63] उसे ईश्वर पर विश्वास था और वह "ईश्वर की जनता" की सेवा करने का इच्छुक था।[64] राज्यारोहण के समय उसकी आयु तीस वर्ष थी।[65] उसने कई सफल सैनिक अभियानों का नेतृत्व किया और राज्य ऊँचे दर्जे की प्रशासनिक व्यवस्था कायम की। उस समय उसकी सेना विश्व की चुनिन्दा सेनाओं में थी।

अपने शासन के दूसरे वष उसने नुसरत खॉ को ख्वाजा खतीर के स्थान पर अपना वजीर नियुक्त किया। अलाउल मुल्क का मलिकुल उमरा

---

63 हबीब निजामी, पृ0–283

64. खैरूल मजलिश, पृ0–341

65 किशोरी सरन, खल्जीज, पृ0–41

के स्थान पर कोतवाल नियुक्त किया गया और समस्त अतुर्क नागरिक व अधिकारी उसके अधीन किये गये।

बाद में अलाउद्दीन ने उस समस्त अधिकारियों को जिनमें ममलूक काल के अधिकारी तथा वे अधिकारी सम्मिलित थे, जो उसके चाचा का परिवार त्याग कर उसके पास आये थे, हटा दिया और संयुक्त शासन समाप्त कर दिया।[66] अपने चाचा के पतन में मामलूक सामंतों की भूमिका से वह भलीभांति परिचित था और उनकी प्रवृत्ति वह जानता था, इसलिए अलाउद्दीन ने शक्ति के प्रयोग से यह स्पष्ट संदेश दिया कि वास्तविक स्वामी सुल्तान ही है। जब अलाउद्दीन का शासन दृढ़ हो गया तो समस्त जलाली मलिक, जो अपने स्वामी से विश्वासघात कर अलाउद्दीन से मिल गये थे ओर उससे पद और इक्ताएं प्राप्त की थी, राजधानी में या सेना में बन्दी बना लिये गये। कुछ की आंखे फोड़ दी गयी और कुछ की हत्या कर दी गयी।[67] अलाउद्दीन द्वारा उन्हे दी गयी सम्पत्ति भी जब्त कर ली गयी। उनके परिवार नष्ट कर दिये गये और उनके

---

66 बरनी, पृ0–257

67 वही, तथा हबीब निजामी, पृ0–288

सैनिक तथा दास आलाई अमीरो क अधिकार में दे दिये गये। अलाउद्दीन के शासनकाल में सिर्फ तीन जलाली मलिकों कुतुबुद्दीन अलवी, मलिक नसीरूद्दीन राना तथा जमाल खल्जी को ही हानि नहीं पहुँचायी गयी।[68] इन तीनों ने सुल्तान जलालुद्दीन का साथ नहीं छोड़ा था और ना ही अलाउद्दीन से कोई धन लिया था। इस दौरान नुसरत खाँ ने मलिकों की धन सम्पत्ति जब्त कर सरकारी खजाने में एक करोड़ रूपया नकद जमा किया।[69] इन कारवाईयों के परिणामस्वरूप अमीरों के घरों में अतिथि सत्कार और रंगरेलिया समाप्त हो गयी। वे बड़े सावधान हो गय और कोई षडयंत्रकारी, बदनाम या धूर्त व्यक्ति को अपने पास फटकने नहीं देते थे। अलाउद्दीन ने हिन्दू प्रणाली को भी अपनाया। अलाउद्दीन ने पहले हिन्दू शासकों और रायों को स्वेच्छा से राजस्व जमा करने की हिदायत दी और शासन के आदेश का अनुपालन न करने वालों को दण्डित किया। अलाउद्दीन ही वह पहला शासक था जिसने आर्थिक सुधारों की ओर ध्यान दिया और बाजार व्यवस्था लागू की। अपने शासन के अन्तिम पांच वर्षो में अलाउद्दीन

---

68 बरनी, तथा हबीब निजामी, पृ0–288

69 वही, पृ0: 250–51

मलिक नायब के प्रति आकर्षित था और उसे उसने साम्राज्य का वरिष्ठ अधिकारी बनाया।[70] हमीद्दीन और ईजुद्दीन को पद्च्युत कर दिया गया और शरफ कायनी का बध कर दिया गया।[71] अपने अन्तिम दिनों में जब सुल्तान अत्यधिक अस्वस्थ हो गया तो मलिक काफ़ूर ही उसके निकट था और परामर्शदाता भी। अलख खॉं की हत्या, खिज्र खॉं का पदच्युत कर कारावास होने की स्थिति में 1316 ई० में अलाउद्दीन के निधन के पश्चात मलिकों और अमीरों की एक सभा में शिहाबुद्दीन उमर का राज्याभिषेक किया गया। बाद में कुछ सैनिकों ने नमक का हक अदा करते हुए मलिक काफ़ूर की हत्या कर दी और मुबारक खॉं को कारागार से मुक्त कर दिया।[72] दूसरे दिन जब अमीर दरबार में एकत्रित हुए तो उन्होंने मुबारक खॉं को "नायबे मुल्क" का पद देने का निश्चय किया।[73]

---

70. हबीब निजामी. पृ0–350

71 वही

72 वही, पृ0–355

73. इसामी, पृ0: 344–47

मुबारक कुछ समय तक रीजेन्ट के पद पर कार्य करनें के पश्चात 18 अप्रैल 1316 ई0 को सिहांसनारूढ़ हुआ।[74] 1320ई0 में षडयंत्र के तहत खुशरों खॉं ने मुबारक शाह की हत्या करवा दी।

मुबारक शाह के बाद नसीरूद्दीन खुसरों खॉ खल्जी वंश के राजकुमारों की हत्या करते हुए अन्ततः सिहांसन पर बैठा।[75] मलिक तुगलक से पराजित होने के बाद खुसरों खॉ को उससे संधि करने के बजाय युद्ध करने की सलाह दी गयी और धन लुटाकर लोगों की निष्ठा खरीदनें का प्रयास किया गया। दोनों लोगों की निष्ठा खरीदने का प्रयास किया गया। दोनों सेनायें आमने–सामने हुई। खुसरो के आक्रमण के बाद तुगलक ने स्वयं केन्द्रीय स्थान ग्रहण किया।[76] खोखर सरदार सहिज राय तुगलक के पीछे खड़े हुए। गुल चन्द्र के नेतृत्व में समस्त खोखर अग्रिम दल में थे। खुसरों के भीषण आक्रमण के बाद भी तुगलक का साहस नहीं डिगा। उसने गुल चन्द्र को खुसरो खॉ पर पीछे से

---

74. नूह–सिपहर, पृ0–51

75. बरनी, पृ0: 405–25

76. हबीब निजामी, पृ0–376

आक्रमण करने के लिए भेजा और स्वयं सामन से आक्रमण किया।[77] खुशरो दो तरफ से घिर जाने के बाद अपने प्राण बचान के लिए भाग खड़ा हुआ। अपने सरदार न देखकर उसके सैनिक भी भाग गये। गुल चन्द्र ने खुसरों के छत्र वाहक को मार डाला और तुगलक के सर पर छत्र फैलाया। युद्ध के पश्चात तुगलक अपने शिविर में लौट आया और दिल्ली के सभी प्रमुख अधिकारी उसके प्रति सम्मान अर्पित करने आये। 6 सितम्बर 1320 को तुगलक हजार सतून महल की ओर जुलूस के साथ चला। वह द्वार पर उतरा और पिछले अपराधों के लिए मालिकों व अमीरों से क्षमा याचना करने के बाद उन्हें अपने साथ बिठाया। सिहांसन रिक्त छोड़ दिया गया।[78] 1320 ई0 में गाजी मलिक ने गयासुद्दीन तुगलक का खिताब धारण कर सिहांसनारूढ़ हुआ और तुगलक वंश की नींव डाली। उसने 1324 ई0 तक शासन किया। 1324 ई0 गयासुद्दीन की मृत्यु के बाद उसके पुत्र उलुग खॉ ने सिहासन ग्रहण किया।[79] मुहम्मद

---

77 हबीब निजामी, पृ0–376

78. वही, पृ0–377

79 वही,पृ0–418

तुगलक एक महत्वाकांक्षी एवं निरंकुश शासक था। उसने 1351 ई0 तक शासन किया और कई विवादों से घिरा रहा। उसके नये–नये प्रयोग सर्वदा असफल सिद्ध हुए। 20 मार्च 1351 ई0 में उसकी बीमारी से मौत हो गयी। 24 मार्च 1351 ई0 को मुहम्मद तुगलक का पुत्र फिरोज शाह गद्दी पर बैठा।

14वीं शदी के मध्य से ही दिल्ली सल्तनत के पतन का चक्र प्रारम्भ हो गया। किसी भी राजनीतिक व्यवस्था की कसौटी उसकी विजय करन की शक्ति नहीं बल्कि प्रशासन की सुव्यवस्था होती है। परन्तु फिरोजशाह के दीर्घकालीन और समृद्धि शाली शासन में यों तो जनता को कष्टों से दूर किया, परन्तु राज सत्ता को शक्ति नहीं प्राप्त हुई।[80] उसके शासन काल में होने वाले विद्रोहों ने साम्राज्य की प्रतिष्ठा समाप्त कर दी थी।[81] फिरोज शाह ने अपने कई सुधारों से अमीरों एवं सामन्त वर्ग को विलाम्पिता का स्वाद चखा दिया था। फिरोज के शासन क

---

80. स्टेनले लेनपूल, मध्यकालीन भारत (दिल्ली) पृ0–102

81. आगा मेहदी हुसेन, तुगलक डायनेस्टी (कलकत्ता, 1963), पृ0:195–257

के अन्तिम समय में इस विलासिता का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा था। मुस्लिम प्रथा के नैतिक पतन के लिए किसी न किसी रूप में फिरोज शाह तुगलक को ही उत्तरदायी माना जा सकता है। सल्तनत की नींव इतनी सुदृढ़ नहीं थी कि वह किसी उदार शासक द्वारा प्रशासित हो सके। फिरोज तुगलक द्वारा गुलामों एवं अमीरों पर राज्य शासन तथा युद्ध का भार सौंपने का बहुत ही कटु परिणाम हुआ।[82] सुल्तान फिरोज शाह ने उस जागीर प्रथा को फिर से जीवन दान दिया जिसे सुल्तान इल्तुतमिश, बल्बन एवं अलाउद्दीन खिल्जी के प्रयासों से समाप्त कर दिया गया था।[83] शक्तिशाली अमीरों तथा सामंतों ने सुल्तान की मृत्यु के पश्चात सल्तनत को छिन्न-भिन्न करने में कोई कोर कसर बाकी नहीं रखी।

जागीर से शक्ति ग्रहण करने वाली सामन्ती प्रथा उदण्डता को प्रोत्साहन देती है, और जब केन्द्रीय शासन इन उद्दण्ड सामन्तों का दमन करने

---

82. अतहर अब्बास रिजवी, तुगलक कालीन भारत (अलीगढ़ 1957), जिल्द-2, पृ0-144

83. इलियट, जिल्द-3, पृ0: 206-207

में असमर्थ हो जाता है, तब स्थिति भयंकर रूप धारण कर लेती है तथा, पृथक्कीकरण एवं विभाजन की प्रवृत्ति को सशक्त करती है। यही परिस्थिति कारक होती है– तुगलक वंश के पतन हेतु । एक–एक कर प्रान्त सल्तनत के प्रभुत्व से मुक्त होने लगे थे। स्वतन्त्र मलिकों तथा फिरोज शाह के तुर्क अमीरों ने राज्य व्यवस्था पर अधिकार जमा लिया था।[84] अधिकार लिप्सु अमीर एवं स्वामिभक्ति विहीन प्रान्तीय प्रतिनिधि विद्रोह का झण्डा बुलन्द करने लगे और अशक्त केन्द्रीय शासन की अवहेलना करने लगे। शायद एक सफल शासक इस विश्रृंखलता को संयत कर सकता था जो दिल्ली सल्तनत को क्रमशः आच्छादित करती जा रही थी, परन्तु फिरोज शाह तुगलक की मृत्यु के पश्चात दिल्ली को कोई भी निपुण एवं योग्य शासक प्राप्त न हुआ जो इस विघटन को नियंत्रित कर सकता।

फिरोज तुगलक की मृत्यु के पश्चात जो सुल्तान दिल्ली सल्तनत पर बैठे थे वे मुस्लिम संप्रभुता का प्रतिनिधित्व नहीं करते थे। उस समय मुस्लिम

---

84 रिजवी, तुगलक कालीन भारत, जिल्द–2, पृ0–230

सम्प्रभुता का प्रतिनिधित्व तो बंगाल, जौनपुर, गुजरात और मालवा जैसे प्रान्तीय राज्यों के सुल्तान थे।[85] सल्तनत की कुर्सी पर अयोग्य शासको के विराजमान होने से राजतंत्र पर अमीरों की स्थिनि मजबूत हो गयी थी और शासक मात्र अमीरो के हाथ की कठपुतली बनकर रह गया था। फिरोज तुगलक की मृत्यु से उत्पन्न अराजकता से अफगान अमीरों ने पूर्ण रूप से लाभ उठाया और सल्तनत के समानान्तर शक्ति वृद्धि में संलग्न हो गये। फिरोज के बाद उसका पौत्र तुगलक शाह गयासुद्दीन तुगलक की उपाधि धारण कर सिंहासन पर बैठा।[86] गयासुद्दीन अनुभवहीन नवयुवक था। उसने प्रशासकीय कार्यों की अपेक्षा विलास पूर्ण जीवन में अधिक रूचि ली, जिससे अमीर एवं अधिकारी वर्ग निर्भय होकर स्वेच्छाचार करने लगा और सत्ता पर शासक का निमंत्रण समाप्त हो गया।[87]

---

85 केoएमo पणिकर, भारतीय इतिहास का सर्वेक्षण (बम्बई, 1957), पृ0–128 ।

86. मुहम्मद जकी, तारीखे मुहम्मदी, संक्षिप्त अनुवाद (अलीगढ़), पृ0–19

87 डे0वी0, तबकाते अकबरी, सं0 अनुवाद, जिल्द–1 (कलकत्ता–1973) पृ0– 262 ।

एक अन्य घटनाक्रम में नये सुल्तान ने अकारण ही अपने भाई सालार शाह को बन्दीगृह में डाल दिया और उसके दासों ने अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया। जफर खाँ के पुत्र अबूबक्र के साथ भी निर्मम व्यवहार किया गया। परिणामस्वरूप ये शहजादे अपनी सुरक्षा के लिए दरबार से भाग खड़े हुए तथा विद्रोह करने को विवश हो गये।[88]

नायब वजीर मलिक रूकनुद्दीन एवं अन्य अमीरों ने फिरोजाबाद में मलिक मुबारक कबीर (अमीर–उल–उमरा) की हत्या कर दी एवं सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक के महल से बाहर निकल आने पर उसकी भी हत्या कर दी तथा उसका सिर दरबार के सामने लटकवा दिया।[89] यह घटना उस समय अमीरों के दुस्साहसी तथा नियंत्रण से बाहर हो जाने की ओर संकेत करती है। उमरा इतना अनियंत्रित एवं उग्र पूरे सल्तनत काल में कभी भी नहीं रहा। यह एक नए परिवर्तन के स्पष्ट संकेत थे।

---

88. जे0 ब्रिग्स, तारीखे फरिश्ता, अं0 अनु0, जिल्द–1 (कलकत्ता, 1966), पृ0–271

89. तबकात, जिल्द–1, पृ0–262

सन् 1389 ई0 में जफर खॉं का पुत्र अबूबक्र सिंहासनारूढ़ हुआ। सुल्तान मुहम्मद के साथ हुए युद्ध में भी सुल्तान की सेना में विद्रोह के कारण ही अबूबक्र की विजय हुई। इस युद्ध ने भी इस तरफ इशारा कर दिया कि शासक को निरकुंश एवं नियंत्रण विहीन अमीरों और सैन्य अधिकारियों की उंगली पर नाचना होगा। अपनी स्थिति सुदृढ़ न पाकर एक बार फिर अमीरों एवं सेना ने पाला बदल दिया और सुल्तान मुहम्मद के पक्ष में सम्मिलित हो गयी। अबूबक्र बन्दी बना लिया गया। दिल्ली का राज्य सुल्तान मुहम्मद को प्राप्त हो गया।[90]

इसी समय समाना के अमीरों ने अपने गवर्नर सुल्तान शाह खुशदिल के प्रति विद्रोह कर उसकी हत्या कर दी, और उसका सिर नसीरूद्दीन मुहम्मद के पास भेज दिया जिसे उन्होंने दिल्ली का सिंहासन प्राप्त करने हेतु पुनः प्रयास करने के लिए आमंत्रित किया था।[91]

जब मलिक सुल्तान शाह की मृत्यु की खबर नासिरउ्दीन मुहम्मद को नगर कोट में मिली तो वह वहॉं से जालन्धर की ओर रवाना हुआ और

---

90. सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, उत्तर तैमूर कालीन भारत, जिल्द-2, (अलीगढ़-1959), पृ0-254

91. कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, जिल्द-3, पृ0-190

समाना के जिले में गया। इसी समय दिल्ली के अन्य कई अमीर और मलिक भी अबूबक्र का साथ छोड़कर उससे आ मिले।[92] अबूबक्र ने फिरोजाबाद के युद्ध में मेवात के सरदार बहादुर नाहिर की सहायता से सुल्तान नसीरूद्दीन को पराजित किया। नसीरूद्दीन अपनी सैनिक शक्ति बढाने के उद्देश्य से दोआब की ओर गया। वहाँ से उसने अपने पुत्र शहजादा हुमायूँ को सेना एकत्रित करने के लिए समाना भेजा। इस घटनाक्रम के दारान जलेसर में नगराधिकारी, मलिक सरबर मलिक–उस–शर्क, मुल्तान का जागीरदार नासिर–उल–मुल्क, बिहार का जागीरदार स्वामुल मुल्क तथा राय सरवर और अन्य राणा सुल्तान से आ मिले। पानीपत के समीप युद्ध हुआ, परन्तु इस बार भी भाग्य थे अबूबक्र का साथ दिया। शहजादा हुमायूँ पराजित हुआ।[93]

इसी दौरान राजधानी में अबूबक्र की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर मुहम्मद, नसीरूद्दीन महमूद के नाम से 1390 ई0 में दिल्ली के सिहांसन पर बैठ गया। अबूबक्र को मेरठ के किले मे कैद कर लिया गया। चार वर्ष के शासन के बाद 1394 ई0 में नसीरूद्दीन महमूद की मृत्यु हो गयी। नसीरूद्दीन

---

92 ईलियट, जिल्द–4, पृ0–16

93. तबकाते अकबरी, जिल्द–1, पृ0–282

के शासन काल में कई विद्रोह हुए और दिल्ली राज्य के चारों ओर अराजकता फैल गयी, जिससे प्रत्येक बड़ा अमीर सिंहासन का इच्छुक हो गया।[94] हिन्दू सरदारों ने हर जगह उपद्रव खड़े किये, बड़े जागीरदारों पर से राज्य का नियंत्रण समाप्त हो गया।

नसीसरूद्दीन मुहम्मद का उत्तराधिकारी हुमायूँ, अलाउद्दीन सिकंदर शाह की उपाधि धारण कर सिंहासनारूढ़ हुआ, परन्तु मात्र छः माह में ही उसकी मृत्यु हो गयी और उसका भाई महमूद तुगलक 1394 ई0 में गद्दी पर बैठा।[95] वह एक निर्बल तथा शक्तिहीन शासक था। उस समय राज्य के चारों तरफ सर्वत्र अराजकता फैली हुई थी। प्रत्येक अमीर जो अपने आपको सर्वत्र शक्तिशाली समझता

---

94 ई0सी0 बेली, दि लोकल मोहम्मडन डायनेस्टीजः गुजरात, दिल्ली–1970), पृ0–78

95 जार्ज रैकिंग, मुन्तखब–उत–तवारीख, अंक अनु0, जिल्द–1, दिल्ली–1973), पृ0–348

था, सुल्तान के प्रति राज भक्ति त्याग कर अपने को स्वतन्त्र घोषित करने लगा।[96]

स्मिथ ने इस अराजकता का उल्लेख करते हुए कहा है कि साम्राज्य की स्थिति अब नियंत्रण से बाहर थी। प्रत्येक प्रान्त का गवर्नर यथार्थ स्वतन्त्रता का उपभोग कर रहा था। वे वस्तुत. स्वायत्त–शासी शासकों में परिणित हो गये। प्रत्येक अमीर सुल्तान बन बैठा।[97]

महत्वाकांक्षी अमीरों ने राजधानी को विद्रोह का केन्द्र बना दिया था।[98] 1412 ई0 में सुल्तान महमूद की मृत्यु हो गयी और अमीरों एबं मलिकों ने दौलत खॉ के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट की। 1413 में खिज्र खॉ ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। दौलत खॉ विवश होकर समर्पण कर दिया और

---

96 हेनरी वेवरीज, ए कम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री आफ इण्डिया, जिल्द–1, दिल्ली–1974), पृ0–113

97 बी0ए0 स्मिथ, दि आक्सफोर्ड हिस्ट्री आफ इण्डिया (आक्सफोर्ड,1970) पृ0–260

98. ब्रिग्स, जिल्द–1, पृ0–276

1414 ई0 में खिज्र खाँ ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया।[99]

तुगलक वंश के समय से शुरू हुए अमीरों के दबदबे ने सल्तनत को निरन्तर विघटन की ओर घसीटा। सैय्यद शासकों ने भी इसमें कोई सुधार की कोशिश नहीं की। लोदियों के सत्ता ग्रहण करने तक दिल्ली सल्तनत में अमीरों की स्थिति काफी मजबूत थी। यद्यपि राजवंशों के परवर्तन के साथ-साथ इन अमीरों की संरचना निरन्तर बदलती रही। यदा-कदा उनमें नवीन जातीय तत्व भी प्रवेश करते रहे। परिणाम स्वरूप पूरे सल्तनत काल में अमीरों के वर्ग स्थापित हुए जो समय-समय पर सत्ता परिवर्तन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे । इल्बरी तुर्कों के शासन काल (तेरहवीं सदी) में इन अमीरों का संयुक्त परिवार था। इसमें प्रभावशाली सदस्यों में तुर्क, खल्जी और ताजिक शामिल थे।[100] फिरोज तुगलक के शासन काल में भारतीय मुसलमानों को उमरा वर्ग में रखा

---

99. हबीब निजामी, पृ0-523

100. एस0बी0पी0निगम, नावेल्टी अन्डर द सल्तनत आफ देहली, पृ0-106

गया था, ये खान व मलिक थे। फिरोज ने मंगोलों को भी उमरा वर्ग में शामिल रक्खा था।[101] सैय्यद वंश के पतन के समय अफगान अमीरों का वर्चस्व था। सुल्तान बहलोल के सत्तारूढ़ होने के समय अफगानिस्तान के पश्तो भाषा क्षेत्र में अनेक अफगान भारत आये थे और उन्हें अनुदान में भूमि, जागीरें पद व प्रतिष्ठा प्राप्त हुई थी। लोदी शासन काल में अफगान व गैर अफगान के रूप में अमीरों का वर्ग स्थापित था। उसके शासन काल में हिन्दू सरदारों को भी उमरा वर्ग में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। सुल्तान सिकन्दर ने वंश के आधार पर अमीरों का निर्धारण किया।[102] सुल्तान इब्राहिम ने भी इसी नीति का अनुसरण किया। उसने भी विभिन्न जातीय तत्वों को उमरा वर्ग में स्थान दिया।

1451 ई0 में बहलोल लोदी दिल्ली के सिंहासन पर बैठा और लोदी वंश की स्थापना की। बहलोल ने अड़तीस वर्षों तक शासन किया। तुगलक

---

101 राधेश्याम, सल्तनत कालीन सामाजिक तथा आर्थिक इतिहास, पृ0-122

102 वही. पृ0-123

की विकेन्द्रीकरण की ओर बढ़ती प्रवृत्ति के दौरान बहलोल ने स्थिति कुशलता से संभाली। अपने विरोधियों से निपटने के लिए उसने अफगान सैनिक शक्ति का उपयोग किया, परन्तु उसने अपनी शाही सत्ता उन्हें समर्पित नहीं की, यद्यपि उसने अफगान भावनाओं के प्रति गहरे सम्मान का प्रदर्शन किया।[103] उसके शासन के दोरान जौनपुर के शर्की और दोआब के राजपूत सरदार उसके लिए सबसे बड़ी समस्या थे जिसे उसने सफलता पूर्वक निपटाया। चौदहवीं शताब्दी के अन्तिम पच्चीस वर्षों में राजपूतों का दमन उसने अफगानों के सहयोग से किया।[104]

बहलोल सरल एवं आडम्बर रहित व्यक्ति था। वह जनता के आदेश स्वयं सुनता था और यह कार्य अमीरों एवं वजीरों के लिए नहीं छोड़ता था।[105]

---

103. हबीब निजामी, पृ0–584

104 नीरद भूषण राय– ''न्यामतुल्लाज हिस्ट्री आफ दि अफगान्स, पृ0–56

105 तारीखे दाऊदी, पृ0–10

जब उसने दिल्ली के शासकों के कोष पर अधिकार किया था तो अपने लिए केवल एक अनुपातिक भाग ही लिया।[106] अमीरों से तालमेल बनाये रखने के लिए उसने अपना भोजन महल में बनवान के स्थान पर बारी–बारी से अमीरों के यहाँ से भेजे गये भोजन ही करता था। घुड़सवारी भी वह अमीरों से उपलब्ध सवारी से ही करता था।[107]

बहलोल ने समानता के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया और बन्धुत्व की भावना से राजत्व का निर्धारण किया। दरबार में वह सिहासंन पर नहीं बैठता था और उसने उन्हें खड़ा रहने वसे भी मना कर दिया था। सभी अमीर कालीनों पर एक साथ बैठते थे और प्रत्येक अमीर को सुल्तान "मसनदे अली" कहता था।[108] यद्यपि कुछ अमीरों को खड़े रहने का आदेश भी दिया जाता था।[109]

---

106 फरिश्ता, पृ0–1179, तारीखे दाऊदी, पृ0–11

107 हबीब निजामी, पृ0–586

108 वही

109. वाकियाते मुश्ताकी, पृ0–9

12 जुलाई 1489 को इटावा से दिल्ली लौटते समय बीमार होने के बाद बहलोल की मृत्यु हो गयी।[110]

बहलोल की मृत्यु के पश्चात बहलोल के पुत्र निजाम खॉ ने 16 जुलाई 1489 को सत्ता की बागडोर संभाली।[111] सत्ता संभालने में अमीरों के तीन गुटों में विभाजित होने के बाद निजाम ने बारबक शाह और आजम हुमार्यूं से सत्ता हथियाने में सफलता प्राप्त की। राज्यारोहण के पश्चात निजाम खॉ "सिकन्दर लोदी" के सामने सबसे बड़ी चुनौती अफगान सरदारों से अपनी सत्ता मनवाना तथा सगे सम्बन्धियों को अधीनता स्वीकार करन के लिए विवश करना था। सिकन्दर ने सबसे पहले बारबक शाह और आजम हुमायूँ को समर्पण के लिए बाध्य किया, फिर उसने एक महत्वपूर्ण सरदार ईसा खॉ लोदी जिसने

---

110 हबीब निजामी, पृ0-584

111 वही, पृ0-587

राज्यारोहण के समय सिकन्दर का प्रबल विरोध किया, उसे पराजित किया।[112] बारबक को आत्म समर्पण कराने के पश्चात उसे जौनपुर का शासक बनाया गया। इसके बाद सिकन्दर ने तातार खॉ और सुल्तान अशरफ को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। कई सफल अभियानों का नेतृत्व करने वाले सिकन्दर ने जौनपुर, ग्यालियर, धौलपुर, मंडालय तथा ग्वालियर के विरूद्ध अभियान संचालित किया।

सिकन्दर ने अमीरों के प्रति भी अपनी नीति निर्धारित की जो बहलोल की नीति से सर्वथा भिन्न थी। बहलोल कालीन पर बैठता था किन्तु सिकन्दर ने सिहांसन पर बैठना आरम्भ किया। सुल्तान की श्रेष्ठ स्थिति स्थापित करने के लिए उसने शाही फरमानों के स्वागत का सुपरिचित नियम स्थापित किया।[113] अमीरों को यह एहसास कराया जाता था कि वे सुल्तान के अधीन हैं और उनका

---

112. हबीब निजमी, पृ0—587

113 तबकाते अकबरी, भाग—1, पृ0—321

पद और अधिकार पूर्णत सुल्तान की इच्छा पर निर्भर है। जिनके पास जागीर थी, उन्हें नियमित रूप से "दिवाने विजारत" में हिसाब देना पड़ता था।[114] सिकन्दर के प्रभावशाली शासन ने अमीरों पर तो लगाम कसी परन्तु जनता के लिए समृद्ध सुनिश्चित की गयी।[115] 21 नवम्बर 1517 ई0 को गले के कैंसर की वजह से सिकन्दर की मृत्यु हो गयी।[116]

सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात 22 नवम्बर 1517 ई0 को उसका ज्येष्ठ पुत्र इब्राहिम सिहांसनारूढ़ हुआ।[117] परन्तु राजनीतिक अमीरों को सत्ता एक व्यक्ति के हाथों में केन्द्रित रहना पसन्द नहीं आया। परिणामस्वरूप सत्ता दो भागों में विभाजित की गयी परन्तु अमीरों की यह कवायद सफल नहीं हो

---

114. तबकाते अकबरी, भाग–1, पृ0–321

115. हबीब निजामी, पृ0: 594–95

116. वही, पृ0– 594

117 वही, पृ0–596

पायी। इब्राहिम अपने अमीरों और मलिकों से अच्छा सम्बन्ध नहीं रख सका। उसके उद्दण्ड स्वभाव ने उसे अमीरों से विमुख कर दिया।[118] इब्राहिम ने बहलोल द्वारा स्थापित राजत्व की अवहेलना की तथा सुल्तान ही सर्वोपरि के सिद्धान्त को अमल में लाया। उसने अमीरों में विस्फोटक स्थिति उत्पन्न कर दी थी।

मियाँ भुवा लोदी सुल्तान का वयोवृद्ध तथा सम्मानित अमीर था। उसे बंदी गृह में डाल दिया गया।[119] बंदी गृह में मियां भुवा की मृत्यु ने उसके परिवार में असंतोष पैदा कर दिया तथा पुराने अफगान अमीरों को भी रूष्ट कर दिया गया। धीरे-धीरे इब्राहिम ने एक के बाद एक पुराने अमीरों को बंदी गृह में डाल दिया। आजम हुमायूँ शेरवानी को बंदी गृह में डाल दिये जाने का समाचार जब उसके पुत्र इस्माल खॉ को मिला तो उसने कड़ा मानिकपुर में विद्रोह कर दिया।

---

118 हबीब निजामी, पृ0-596

119. वही, पृ0-599

मियाँ भुवा तथा आजम हुमायूँ को बन्दी गृह में मौत के बाद बिहार के राज्यपाल दरिया खॉ नूहानी, अमीरूल उमरा खाने जहाँ लोदी तथा हुसैन फरमुली ने विद्रोह कर दिया। चंदेरी के राज्यपाल हुसेन फरमुली का सुल्तान के इशारे पर वध किये जाने से अमीर और भी विरोधी हो गयी। इसके बाद दरिया खॉ नूहानी की मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र बहादुर विद्रोह का केन्द्र बिन्दु बना।

इब्राहिम ने अपने अमीरों को संशक्ति कर दिया था। अपनी रक्षा के लिए उनके पास विद्रोह ही एक मात्र करता रास्ता था।[120] अन्ततः इन्ही विद्रोही अमीरों के निमंत्रण पर भारत आये बाबर ने 1526 ई0 में भारत पर विजय प्राप्त कर 1192 से चली आ रही सत्ता को समाप्त कर दिया।

---

120. हबीब निजामी, पृ0–601

***

1525–1555 ई0 में तूरानी अमीरों की भूमिका

दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी से क्षुब्ध पंजाब के अमीरों ने काबुल में बाबर को पत्र लिखकर, उसे भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण दिया।[1] स्थिति का जायजा लेने के लिए बाबर ने अपने कुछ अमीरों को आलम खॉ के साथ भेजा। इस दल ने सियाल कोट, लाहौर तथा कुछ अन्य क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया और बाबर को स्थिति से अवगत कराया। बाबर ने 16 दिसम्बर 1525 ई0 को भारत विजय के लिए प्रस्थान किया।[2] 19 अप्रैल 1526 ई0 को बाबर की सेना ने पानीपत के मैदान में दूसरी ओर डटे । इब्राहिम लोदी की सेना को बार–बार उकसाने का असफल प्रयास किया। अन्ततः कुछ दिनों बाद युद्ध प्रारम्भ हुआ। प्रातः शुरू हुए युद्ध में हजारों अफगान सैनिक हताहत हुए। स्वयं सुल्तान इब्राहिम लोदी भी रणभूमि में ही मारा गया।[3] 1526 ई0 में बाबर ने

---

1 हबीब निजामी, दिल्ली सल्तनत (1978), पृ0–601

2. वही

3. तारीखे खाने जहानी, भाग–1, पृ0–259

दिल्ली पर अधिकार कर लिया। 27 अप्रैल को दिल्ली में बाबर के नाम का खुत्बा पढ़ा गया।

मुगल काल में अमीर वर्ग के संगठन व संरचना में जहाँ एक तरफ स्वरूप में परिवर्तन आता है वहीं दूसरी तरफ इसके संगठन में स्थायित्व की प्रवृत्ति भी दिखायी पड़ती है, जो सल्तनत कालीन अमीर वर्ग से सर्वथा भिन्न थी। एक संस्था के रूप में अमीर वर्ग मुगल प्रशासनिक व्यवस्था की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। मुगलकालीन अमीर वर्ग बादशाह द्वारा नियुक्त होने के कारण अमीरों के पदों में वृद्धि, कमी एवं पदमुक्ति का अधिकार पूर्णत. बादशाह के पास निहित था। यह मान्यता कि मुगल अमीर वर्ग की सदस्यता कुछ खास वर्गों तक ही सीमित थी, एक विवादास्पद विषय है।[4] मुगल अमीर वर्ग का एक संस्था के रूप में विकास चंगेज खॉ द्वारा निर्मित संगठन में तलाश किया जा सकता

---

4 घनश्याम दत्त शर्मा, मध्यकालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक संस्थाएं (1990), पृ0–104 (देखें, आर0पी0 खोसला, मुगल किंग्शिप एण्ड नोबिलिटी, पृ0: 225–270)

है। उसने अमीर वर्ग का संगठन व स्थापना इस तरह से की थी कि उस पर शासक का अधिकार असीमित रहे।[5] प्रारम्भ में अमीर वर्ग में मंगोल जाति से ही चयन किया जाता था। परन्तु अमीर तैमूर के शक्ति प्राप्त करने के पश्चात धीरे–ध्णीरे गैर मंगोलों को भी चंगेजी परम्परागत अमीर वर्ग में शामिल किया जाने लगा। आगे चलकर यह प्रवृत्ति और अधिक विकसित रूप में देखने को मिली।[6]

बाबर द्वारा सत्ता स्थापित करने के बाद उसके अमीर वर्ग में तूरानी मिर्जा, मंगोल, उजबेग आदि का समावेश देखने को मिलता है। हिन्दुस्तान में आधिपत्य स्थापित करने के समय चगताई अमीर संगठन के स्वरूप को बाबर साथ में लाया था। वस्तुतः यह कहना कठिन है कि बहुजातीय आधार वाले इस अमीर वर्ग में समान उद्देश्य के प्रति कटिबद्धता का अभाव था। बाबर द्वारा नियुक्ति एवं स्थानान्तरण के अधिकार के चलते वे शासक के प्रति निष्ठावान बनें रहने को विवश थे।

---

5. वही,

6 वही, पृ0–105

बाबर के शासनकाल में मुगल अमीर वर्ग अपने विकास के प्रथम चरण के कुछ वर्षों में एक सुसंगठित बहुजातीय समूह में उभर कर सामने आया। इस अमीर वर्ग में तूरानी (मध्य एशियाई), ईरानी (फरशियाई) शेखजादा (भारतीय मुसलमान) तथा राजपूत शामिल थे। परन्तु इनमें तूरानी अमीरों को प्रधानता प्राप्त थी।[7] यद्यपि अपने तीन साल आठ माह के शासन काल में अमीरों को निश्चित भूमिका नहीं तय कर सका लेकिन उसने राजत्व सिद्धान्त की स्थापना की, जिसमें बादशाह को सर्वोपरि बताया गया था। 1529 ई0 में उसने अपने पुत्र हुमायूँ को एक पत्र लिखा था, उसमें भी उसने राजत्व सिद्धान्त पर प्रकाश डाला।[8] उसने लिखा कि बादशाह के पद से बड़ा कोई पद नहीं है। उसने हुमायूँ को सुझाव दिया कि वह अमीरों से परामर्श लेकर कार्य किया करे। उसने उसे

---

7. वही, पृ0–105, तथा आर0पी0 खोसला, मुगल किंगशिप एण्ड नोबिल्टी (1976), पृ0–227

8 वही एवं राधेश्याम, मध्यकालीन प्रशासन, समाज संस्कृत, पृ0–75

यह भी सुझाव दिया कि वह अमीरों को आदेश दे कि वे दिन में दो बार राज्य कार्य हेतु उसके सम्मुख उपस्थित हुआ करे।[9]

यद्यपि बाबर अपने वंश के गौरव तथा शासक की सर्वोच्चता में दृढ़ विश्वास रखता था, फिर भी उसने अपने राजत्व सिद्धान्त को मानवता का अमली जामा पहनाया।[10] वह अपने अमीरों से मिलता जुलता था, उनके निमंत्रण स्वीकार करता था, उनके साथ मदिरापान करता था, उनके साथ मदिरा गोष्ठियों का आयोजन किया करता था, उनके साथ सैर–सपाटे पर जाता था और उनके सुख–दुख में भाग लेता था। वह जानता था कि सामन्ती युग में सम्राट की प्रतिष्ठा सामन्तों के सहयोग पर निर्भर करती है।[11]

---

9 वही

10· वही

11· वही

बाबर ने जिस समय भारत में अपना शासन स्थापित किया। उस समय चारों तरफ अव्यवस्था का आलम था, प्रान्तों में कई शासक स्वायत्ता स्थापित करने में जुटे थे, इसलिए अपने लगभग चार वर्ष के शासन काल में वह विरोधियों को कुलचने तथा अपने साम्राज्य की सीमा बढ़ाने में ही लगा रहा। न तो उसे समय ही मिला और न ही अवसर कि वह अपने राज तंत्र को कुशल शासन प्रबन्ध प्रदान कर पाता। एक योद्धा को कुशल प्रबन्ध प्रदान कर पाता। एक योद्वा एवं सेनानायक की भाँति वह निरन्तर युद्धों में ही व्यस्त रहा।[12]

1526 ई0 में भारत पर आधिपत्य स्थापित करने वाला बाबर जब सर्वप्रथम आगरा पहुँचा तो उसके सामने अनेक समस्यायें खड़ी थी। जिनमें सर्वप्रमुख वे अफगान अमीर थे[13] जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों पर छोटे - छोटे दुर्ग बना

---

12. एस0आर0 शर्मा, भारत में मुगल साम्राज्य, पृ0-42

13. इलियट, डाउसन, पृ0-233

लिया था और अपनी आत्म रक्षा का प्रबन्ध कर बाबर का आदर्श स्वीकार करने से मना कर दिया था।[14]

कासिम सम्भाली सभल में, निजाम खॉ बयाना में और राजा हसन खॉ मेवाती स्वयं मेवात में ही था। गंगा के दूसरी तरफ का सम्पूर्ण प्रदेश जो कन्नौज कहलाता था वह नासिर खॉ लोहानी और मारूफ फरमूली जैसे बागी अफगानों के अधिकार में था।[15] इन लोगों में कितने ही दूसरे अमीर भी शामिल थे, जो इब्राहिम की मृत्यु से पहले ही खुल्लम–खुल्ला विद्रोह किया करते थे। जब बाबर ने इन शासकों को हराया तो वह कन्नौज से दो चार मील दूर के क्षेत्रों पर अपना अधिकार कर लिये। स्थिति उस समय और बिगड़ गयी जब अत्यधिक गर्मी के कारण बाबर के कई आदमी मर गये। उसके कई बेगों और श्रेष्ठ तूरानी अथवा मध्य एशियाईग अमीरों ने वापस जाने की इच्छा जाहिर कर

---

14 एस0आर0 शर्मा, पृ0–26

15. वाक्यात: ए–मुश्ताकी, इलियट डाऊसन, पृ0: 548–49

दी। इस स्थिति में बाबर ने किसी तरह अपने बेगों को तो वापस जाने से रोका, परन्तु अफगानों का दमन स्थगित करना पड़ा।[16] यही नहीं, मुगल अमीरों द्वारा अफगान बाहुल्य क्षेत्रों में नियुक्ति से इन्कार करने पर, अफगानों को ही अपने अमीर के रूप में मान्यता प्रदान करने को वह विवश था। इसी क्रम में शेरशाह भी उसकी सेवा में रहा था।

बाबर ने अपनी आत्म कथा "बाबरनामा" में कई ऐसे अमीरों के नाम का उल्लेख किया है, जिन्हें उसने हिन्दुस्तान में नियुक्त किया था। उसने 25 फरवरी 1526 की उस घटना का जिक्र किया है जब हामिद खाॅ से मुकाबले के लिए हुमायूँ को भेजा गया था। इसमें उसने दाहिने भाग की सेना में हुमायूँ के साथ खुशरो, हिन्दू बेग, अबुल अजीज, मोहम्मद अली जंग तथा मध्य भाग में शाह मंसूर बरलास, किता बेग और मुहिब अली आदि अमीरों को भेजे जाने की बात कही है।[17] बाबर के शासन काल में निरन्तर स्वायत्त शासकों को

---

16 आर0एस0 शर्मा, पृ0–27

17. बाबरनामा, अनु0 केशव प्रसाद ठाकुर (1968), पृ0–326

अधीनता स्वीकार कराने का संघर्ष चलता रहा, इसलिए उसके प्रमुख अमीरों और सामंतों का उल्लेख उसके द्वारा संचालित अभियानों के संचालन में ही अधिकतर दिखाई पड़ता है। नवम्बर 1526 की एक घटना का जिक्र करते हुए बाबर ने अपनी आत्म कथा –बाबरनामा" में लिखा है कि हुमायूँ ने मेंहदी ख्वाजा के साथ फतेह खॉ शेरवानी को उसके पास भेजा, मेंहदी ख्वाजा फतेह खॉ को डलमऊ से लेकर रवाना हुआ था। बाबर ने फतेह खॉ के साथ सहानुभूति पूर्ण व्यवहार किया। उसने उसके पिता का इलाका उसे सौंपते हुए उसे आदर में कुछ और सामान दिया।[18] बाबर ने लिखा है कि हिन्दुस्तान में जब अमीरों को उनके अच्छे कार्यो के लिए सम्मानित किया जाता है तो उनको आजम हुमायूँ, खाने जहॉ, खाने खाना आदि उपाधियॉ भी दी जाती है।[19] इस घटना से बाबर की हिन्दुस्तानी अमीरों के प्रति दृष्टिकोंण का पता चलता है, बाबर को यह मालूम था कि सामंतों से टकराकर उनके क्षेत्र पर आधिपत्य

---

18 बाबरनामा, पृ0–383

19. वही, तथा आर0एस0 शर्मा, पृ0–47

कर शासन व्यवस्था स्थापित करना आसान नहीं है, इसलिए उसने इस नीति का अनुसरण किया कि जो सामान्यतया उसका आधिपत्य स्वीकार कर ले। उसे उसके क्षेत्र का शासन प्रबन्ध सौंप दिया जाय। क्षेत्रीय सामंता और अमीर के साथ उसने यही नीति अपनाई और उन्हें यथासमय आदर सम्मान प्रदान किया। बाबरनामा में उल्लेख है कि इस समारोह की व्यवस्था की गयी और मदिरा की गोष्ठी में फतेह खॉ शेरवानी को मदिरा प्रदान की गयी।[20] बाबर मदिरा गोष्ठी का आयोजन अमीरों के स्वाभिमान को ध्यान में रखकर करता था।

30 नवम्बर की एक घटना का जिक्र करते हुए बाबरनामा में लिखा गया है कि बाबर ने जौनपुर में हुमायूँ को एक पत्र लिखकर जौनपुर, अमीरों के हाथ सौंपकर लौट आने की बात कही है।[21]

---

20 बाबरनामा तथा आर0एस0 शर्मा, पृ0-47

21 वही

बाबर के प्रमुख तूरानी अमीर जो बाबर के साथ आये थे, बाबर उन्हें अपनी सेनाओं का संचालन करने का दायित्व सौंपता था। यद्यपि अपने लगभग चार वर्ष के शासन काल में बाबर को अधिकतर क्षेत्र पूर्ववर्ती सामंतों तथा अमीरों के ही हवाले रखना पड़ा, परन्तु उसने अपने साथ आये तूरानी सामंतों को भी सदैव खुश रखने का प्रयास किया और उन्हें पद, सम्मान और परगने प्रदान किये। क्योंकि, भारत वह काबुल से आया था और अनेक वर्षों तक काबुल में राज्य किया था, अतः अफगान अमीरों की संख्या, स्थानीय अफगानों की नियुक्ति के कारण काफी बढ़ गयी थी।

ग्वालियर पर आक्रमण के समय भी बाबर ने अपने अच्छे अमीरों का उल्लेख किया है।[22] वहाँ के आस-पास के राजाओं से किले को खतरा होने पर वहाँ का अधिकारी तातार खाँ घबरा गया और उसने किले का अधिकार बाबर को सौंप दिया। इस समय का उल्लेख करते हुए बाबर ने लिखा है कि उन दिनों हमारे सभी अच्छे अमीर हमसे दूर थे। ऐसी हालत में हमने रहीम दाद

---

22. बाबरनामा तथा आर0,एस0 शर्मा, पृ0-47

के साथ भीरा के आदमियों तथा होरिया लोगों को सैनिकों के साथ ग्वालियर रवाना किया। मुल्ला अपाक और शेख मुरन को ग्वालियर भेजा गया। नाटकीय घटनाक्रम के बाद ग्वालियर का किला मुल्ला अपाक के नियंत्रण में आ गया।[23]

बाबर ने हिसार फिरोजा में इन अफगानों को दण्डित करने का निर्णय लिया। हमीद खॉ सारंग जानी के नेतृत्व में लूटपाट कर हमले प्रारम्भ कर दिये थे। 21 नवम्बर को हमीद खॉ को रोकने के लिए बाबर ने चीन तीमूर सुल्तान चागलाई, अहमदी परवानची, अबुल फतह तुर्कमान, मलिक दाद करारानी तथा मुल्तान के मुजाहिद खॉ को नियुक्त किया। इस आक्रमण में बहुत से अफगानी मारे गये।[24]

---

23 बाबरनामा तथा आर0एस0 शर्मा, पृ0–386

24. वही, पृ0–387

इन घटनाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि बाबर के साथ सभी वर्ग के लोग थे, परन्तु बाबर किसी भी महत्वपूर्ण अभियान का दायित्व अपने सबसे विश्वसनीय तथा नजदीकी उन अमीरों को सौंपता था जो उसके साथ आये थे। इन अमीरों के नेतृत्व में ही स्थनीय शासकों तथा सैनिकों की नियुक्ति की जाती थी। बाबार की सेना में इस समय काफ ेसंख्या में भारतीय सम्मिलित हो चुके थे। बाबर किसी भी कार्यवाही से पूर्व अपने प्रमुख अमीरों से विचार विमर्श कर योजना बनाता था।

जनवरी 1527 में मेंहदी खाजा के आदमियों ने सूचना दी कि राणा सांगा तेजी से इस तरफ बढ़ रहा है। यह भी ज्ञात हुआ कि हसन खॉ मेवाती राणा सांगा की मदद करेगा।[25] इन समाचारों को सुनकर बाबर ने बियाना की मदद करने की योजना बनायी और कुछ खास अमीरों जिसमें मोहम्मद सुल्तान मिर्जा, युनूस अली, शाह मनमूर बरलास, कित्ता बेग, किसमती और बूजका

---

25 बाबरनामा, अनु0 केशव प्रसाद ठाकुर, पृ0· 390–91

की अधीनता में एक सेना बियाना की ओर रवाना किया।[26] हसन खाँ मेवाती का लड़का नाहर खाँ इब्राहिम लोदी के साथ हुए युद्ध में ही कैद कर लिया गया था। अपने अमीरों के परामर्श से बाबर ने नाहर खाँ को छोड़ दिया और उसे खिलअत प्रदान कर जाने की इजाजत दी गयी। परन्तु हसन खाँ से सकारात्मक रूख की आशा बेकार निकली और मौका पाते ही वह राणा सांगा से जा मिला।[27] इस घटना ने बाबर को इब्राहिम के शासन काल के अमीरों से और भी अधिक सावधान रहने की चेतावनी दे दी। इस कथन की सत्यता इस बात से स्पष्ट होती है कि फरवरी राणा सांगा के विरूद्ध अभियान में बाबर हिन्दुस्तान के अमीरों पर विश्वास नहीं किया और उनको दूसरे स्थानों पर काम करने के लिए भेजा गया।[28] आलम खाँ को रहीम दाद की सहायता के लिए ग्वालियर जाने का

---

26 बाबरनामा, अनु0 केशव प्रसाद ठाकुर, पृ0: 391

27. वही

28. वही, पृ0–393

और मकन, कासिम बेग सम्भली तथा हमीद, उसके छोटे– बड़े भाइयों एवं मोहम्मद जैतून को सम्बल जाने का आदेश दिया गया।[29]

बाबर अपने अमीर योद्धाओं का प्रयोग करना भलीभाँति जानता था और उसे यह ज्ञात था कि किस व्यूह रचना से वह दुश्मन के दाँत खट्टे कर सकता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मार्च 1527 ई0 की उस घटना से मिलता है, जब बाबर ने अपने असीम विश्वास पात्रों की व्यूह रचना राणा सांगा से युद्ध करने के लिए की थी। बाबर ने काफिर (राणा सांगा) की सेना के साथ युद्ध करने के लिए अपनी पंक्तियाँ इस प्रकार सुव्यवस्थित की थी कि उनको देखकर पृथ्वी से आकाश तक उनकी प्रशंसा होने लगी। सेना की इस व्यवस्था में मुकर्रिबुल हसरतुस सुल्तानी, एत्मादुद्दौल तुल खाकानी (बादशाह के अत्यन्त विश्वास पात्र) निजामुद्दीन अली खलीफा ने बहुत अधिक परिश्रम किया था।[30]

---

29 बाबरनामा, अनु0–केशव प्रसाद ठाकुर, पृ0–393

30 बाबरनामा, पृ0–409

बाबर ने स्वयं को केन्द्र में रखा। केन्द्र के बायें तरफ चीन तीमूर सुल्तान, सुलेमान शाह, ख्वाजा दोस्त खाबन्द, दरवेश मोहम्मद सारवान, अब्दुल्लाह किताबदार, निजामुद्दीन दोस्त ईशक आका को नियुक्त किया गया था। केन्द्र के बायी ओर ही सुल्तान अलाउद्दीन आलम खॉ, शेख जैन ख्वाफी, कमालुद्दीन मुहिब अली, आरा हश खॉ आदि नियुक्त किये गये।[31] केन्द्र के दाहिनी तरफ मोहम्मद हुमायूँ तथा हुमायूँ के दाहिने हॉथ की तरफ कासिम हुसेन, निजामुद्दीन अहमद, हिन्दू बेग, खुशरो कुकुल्दास, सुलेमान आका आदि स्थापित थे। इस्लामी सेना के बायी तरफ सैयद मेहदी ख्वाजा, मोहम्मद सुल्तान मिर्जा, आदिल सुल्तान, अबुल अजीज (मीर आखूर), मोहम्मद अली जंग आदि नियुक्त हुए।[32] इनमें से अधिकांश बाबर के अत्यधिक विश्वास पात्र थे तथा बाबर के साथ आये थे। जिन हिन्दुस्तानी अमीरों जैसे इस जानिब कमाल खॉ और जमाल खॉ को नियुक्त किया गया, वह भी बाबर के विश्वास पात्र लोगों के साथ ही रहे। पूरे युद्ध के दौरान बाबर के उन अमीरों जिनमें अधिकांश तूरानी महत्वपूर्ण

---

31 बाबरनामाः पृ0ः 411–412

बिन्दुओं पर तैनात रहे।[33] यह व्यूह रचना बाबर के अमीरों के प्रति दृष्टिकोंण को समझने के लिए पर्याप्त है कि उसका तुरानी अमीरों पर कितना विश्वास था। युद्ध के बाद की गयी नियुक्तियाँ भी बाबर के दृष्टिकोंण को दर्शाती है। बियाना के प्रबन्ध का अधिकार ईशक आका को दिया गया, जबकि मेंहदी ख्वाजा के लड़के जफर ख्वाजा को इटावा सौंपा गया।[34] इस प्रकार बाबर अपने सम्पूर्ण शासन काल में तुरानी अमीरों पर बहुत दायित्व सौंपता था। यद्यपि उसके 3 वर्ष 8 माह के शासन के दौरान अमीरों का अन्य वर्ग भी अपनी – अपनी भूमिका का निर्वाह करता रहा।

सल्तनत काल की ही भाँति मुगल काल में भी हिन्दू वर्ग भी किसी न किसी रूप में प्रशासन से सम्बद्ध रहा। बाबर के शासनकाल में इनकी नियुक्तियाँ दीवानी अधिकारियों के रूप में हुई तथा वे वित्तीय विभाग में कार्य प्रशासन

---

33 बाबरनामा, पृ0: 411–412

34 वही, पृ0–420

की इकाइयों में कार्यरत रहे।[35] हिन्दू शासकों को भी जो बाबर की अधीनता स्वीकार करते रहे, उन्हें पर्याप्त सम्मान प्राप्त हुआ।[36] एक स्थान पर इसका उल्लेख करते हुए बाबर ने लिखा है कि उसने एक बार तुर्की और हिन्दू अमीरों को बुलाया और नदी किस प्रकार पार की जाय इस विषय में उनसे परामर्श किया।[37]

कम से कम छः हिन्दू राजाओं ने जिनमें रणथम्भौर का राजा राणा सांगा का द्वितीय पुत्र राजा विक्रमाजीत भी सम्मिलित था, उसकी अधीनता स्वीकार की थी।[38] मुगल अमीर वर्ग में विभिन्न जाति व धर्म के लोगों का समावेश वास्तव में ऐतिहासिक परिस्थितियों का परिणाम था, यद्यपि सुनिश्चित शाही

---

35 राधेश्याम, पृ0-195

36. भारत में मुगल साम्राज्य- आर0एस0 शर्मा, पृ0-47

37. वही

38 इलियट एण्ड डाउसन, पृ0-262-81 तथा एस0एम0 एडवर्डसन बाबर एस डायरिस्ट एण्ड डिसपाट, पृ0: 40-41

नीति ने इसके विकास में अवश्य योगदान दिया।[39]

अन्ततः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि, बाबर के काल में "तूरानी" अथवा मध्य एशियाई अमीर सर्वप्रमुख थे, जो बाबर के सहधर्मी होने के साथ-साथ, हमवतन थे; दूसरा प्रमुख वर्ग, "इरानी" कहलाता था। ईरान या फारस से सम्बद्ध अफगानिस्तान के क्षेत्र में इनका बाहुल्य था अतः बाबर के लम्बे शासकाल में वे, उसकी सेवा में नियुक्त हो चुके थे। साथ ही, फारस के शाह की सहायता प्राप्ति के बाद ही बाबर दोबारा काबुल बिजिट कर पाया था। अतः इस द्वितीय काल में, ईरानी अमीरों की संख्या में वृद्धि निश्चित ही थी। फिर "हिन्दुस्तान- विजय" के उपरान्त जब तूरानी वापस लौटने का हठ कर रहे थे, ईरानी यहाँ रहने को भी तत्पर दिखे अतः तूरानियों की तुलना में उनकी संख्या एवं प्रतिशत में वृद्धि स्वाभाविक थी।

---

39 घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0-107

उपरोक्त विवरण एवं विश्लेषण से यह भी सुस्पष्ट एवं सुस्थापित हो जाता है कि, अफगानिस्तान के शासन के चलते ही बाबर के अन्तर्गत अफगान अमीर तो पहले से ही बड़ी संख्या में कार्यरत थे, फिर, भारत की परिस्थितियों में स्थानीय अफगान अमीरों को जब उसने मुगल सेना में सम्मिलित किया तो उनकी संख्या भी निरन्तर बढ़ती गयी।

अन्य स्थानीय सरदारों को भी बाबर ने मुगल आधिपत्य की स्वीकारोक्ति के उपरान्त, स्वायत्त–शासन के अधिकार दे दिये थे अत भारतीय, विशेषतया राजपूत अमीर मुगल सेना में बाबर के काल से ही सम्मिलित किये जाने लगे थे। अतः "तूरानी", "ईरानी", "अफगान", "राजपूत" व "अन्य" गुट अमीरों के इसी काल में निर्मित होने लगे थे।[40]

---

40. देखिये, आर0पी0 खोसला, पूर्वोद्धत, रशब्रुक विलियम्स, "एन एम्पायर बिल्डर आफ द सिक्सटीन्थ सेन्चुरी, अकबर अली मुगल नोबिलिटी अण्डर औरंगजेब, सतीश चन्द्र, पार्टीज एण्ड पालिटिक्स एट द मुगल कोर्ट आदि ।

भारत में मुगल साम्राज्य की नींव बाबर ने बड़े परिश्रम से डाली थी, परन्तु अपने शासनकाल में वह उसे स्थिरता प्रदान नहीं कर सका।[41] यद्यपि बाबर के शासनकाल में तो इसका असर नहीं दिखाई पड़ा। परन्तु उसके पुत्र हुमायूँ को अव्यवस्थित शासन व्यवस्था ने 15 वर्षो तक निर्वासित जीवन जीने के लिए मजबूर कर दिया।

29/30 दिसम्बर 1530 ई0 को बाबर की मृत्यु के चार दिनों के पश्चात तेईस वर्ष की अवस्था में हुमायूँ आगरा में गद्दी पर बैठा। इसी दिन उसके नाम और उपाधि का खुत्बा पढ़ा गया।[42]

यद्यपि बाबर को उमरा वर्ग को संगठित करने का अवसर नहीं मिला, परन्तु उसके पुत्र एवं उत्तराधिकारी हुमायूँ ने अपने अमीरों का संगठन बनाया

---

41. आर0एन0 शर्मा, पृ0–50

42. इलियट एण्ड डाउसन, पृ0–118 तथा मुगल कालीन भारत, हुमायूँ भाग–1, अनुवादक सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृ0–503

और उन्हें तीन वर्गो में विभाजित किया। (1) अहले दौलत, (2) अहले सआदत तथा (3) अहले मुराद ।[43] हुमायूँ ने अपने भाइयों, सम्बन्धियों, अमीरों, वजीरों तथा समस्त सैनिकों को अहले दौलत की श्रेणी में, दूसरी श्रेणी अहले सआदत में प्रतिष्ठित सद्र, उत्कृष्ट मशाहिक, सैय्यद, काजी, विद्वान कवियों, आदि को रखा। हुमायूँ ने तीसरी श्रेणी अहले मुराद में संगीत वादकों को रखा।[44]

बाबर की मृत्यु के समय मुगल वंश पहले के मुसलमान राजवंशों की भाँत अच्छी तरह से जम नहीं पाया था। हिन्दुस्तान की भूमि में उसकी जड़ अभी गहरी नहीं गयी थी।[45] परिणामस्वरूप हुमायूँ को अमीरों और सामंतों का

---

43. राधेश्याम, पृ0–209

44. वही,

45 मेलीसन, अकबर, पृ0–49

वह सहयोग नहीं मिल सका, जो बाबर टौबिले व्यक्तित्व से प्राप्त कर लेता था। इसी का प्रतिफल था, कि हुमायूँ को अपने जीवन के पन्द्रह वर्ष निर्वासितों की भाँति जीवन जीना पड़ा।

हुमायूँ ने अपने दरबार के तीन भागों को बारह उपभागों में विभाजित किया था।[46] प्रत्येक वर्ग में पदानुसार नियमावली का अनुसरण होता था। हुमायूँ के साथ 1555 ई0 में भारत आये अमीरों में फारसी अथवा. ईरानी एवं तूरानी अमीरों की प्रधानता थी।[47] इस अवधि में अमीरों की संख्या–51 थी, जिनमें तूरानी

---

46. घनश्याम दत्त शर्मा, मध्यकालीन भारतीय, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थाएं (1990), पृ0–105

47. इक्तिदार आलम खॉ, द नोबिलिटी अण्डर अकबर एण्ड द डेवलपमेन्ट आफ हिज रीलिजियस पालिसी, जनरल आफ द रायल एशियाटिक सोसायसटी लन्दन, 1968

अमीरों की संख्या 27 यानि 52 9% थी, इरानी अमीरों की संख्या 16 यानि 31 37% थी तथा अवर्णित अमीरों की संख्या 8 यानि 15 68% थी।[48] अकबर के शासनकाल में हुमायूँ के उन अमीरों का वर्चस्व रहा जो हुमायूँ के हिन्दुस्तान से ईरान भागने तथा पुन. हिन्दुस्तान जीतने के समय उसके साथ थे। इनमें ईरानियों की संख्या सर्वाधिक थी।

राजनय एवं प्रशासन तंत्र में सल्तनत काल में किये गये प्रयोग एवं इनसे प्राप्त अनुभव तथा मध्य एशियाई मंगोलिया में विकसित परम्परा मुगल साम्राज्य के लिए नीति स्रोत बने रहे। उत्तर पश्चिमी सीमा तथा आन्तरिक सुरक्षा, शान्ति एवं स्थायी राज्य व्यवस्था की समस्याओं, जिन्हें सल्तनत काल में सुलझाने का प्रयास किया था, के अतिरिक्त मुगलों को राजनय के सिद्धान्त सम्बन्धी समस्या का भी सामना करना पड़ा, जो तुर्क अफगान शासनकाल में प्रतिपादित परस्पर विरोधी सिद्धान्त पर आधारित थी।[49] मुगलों ने इन समस्याओं को एक भिन्न

---

48. इक्तिदार आलम खाँ, द नोबिलिटी अण्डर अकबर एण्ड द डेवलपमेन्ट आफ हिज रीलिजियस पालिसी, जनरल आफ द रायल एशियाटिक सोसायटी, लन्दन, 1968

49. घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0–28

दृष्टिकोंण से लिया तथा राजनय के सिद्धान्त एवं प्रशासन तन्त्र में समयानुसार महत्वपूर्ण सुधार प्रस्तावित किये।

बादशाह अथवा सम्राट को ईश्वर का प्रतिनिधि होने का विचार भारतीय मुस्लिम राज्य में सर्वविदित है। इसके अतिरिक्त हुमायूँ स्वयं को मानवता का केन्द्र मानता था।[50] इन दोनों सिद्धान्तों का समन्वय मुगलों के राजनय सिद्धान्त में देखने को मिलता है। जो प्रकृति में भिन्न दिखते हुए भी मूलतः भिन्न नहीं था।

जब हुमायूँ कांधार व काबुल की विजय की ओर अग्रसर हुआ था, तब उसके आस–पास ईरानी, अमीरों का जमघट प्रारम्भ हो गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि काबुल विजय के पश्चात जब हुमायूँ के पुराने अमीरों ने पुनः उसकी सेवा में स्थान प्राप्त किया तब अमीर वर्ग में अन्तर्द्वन्द्व प्रारम्भ हो गया था।[51]

---

50. घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0–28

51. वही, पृ0–105

फारस के साथ भारतीय शासकों के दीर्घकाल से चले आ रहे सम्बन्ध, ईरानी अमीरों का उच्च पदों पर आसीन होना तथा बाद में अकबर द्वारा संरक्षण दिया जाना आदि कारणों ने इन्हें भारत आने के लिए प्रोत्साहित किया।[52] इस प्रकार मुगल अमीर वर्ग अपने विकास के प्रथम चरण, बाबर तथा हुमायूँ के शासन काल में एक सुसंगठित बहुजातीय समूह के रूप में संगठित हो चुका था।[53] इस अमीर वर्ग में तूरानी, ईरानी, अफगान, शेखजादा (भारतीय मुसलमान) आदि शामिल थे। परन्तु इन सभी में तूरानी अमीरों का प्रभुत्व था। हुमायूँ की मृत्यु के समय 1556 ई0 में मुगल प्रशासन में कुल 51 अमीर थे। जिनमें से तूरानी अमीरों की संख्या 27 थी जो आधे से ज्यादा थी।[54]

---

52. अफजल हुसेन, ग्रोथ आफ ईरानी एलिमेन्ट इन अकबर नोबिलिटी, इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, 1975, पृ0: 173–74

53 घनश्याम दास शर्मा, पृ0–107

54 इख्तिदार आलम खाँ, जनरल आफ द रायल एशियाटिक सोसायटी, लन्दन, 1968

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि हुमायूँ के शासनकाल में अमीरों की स्थिति बार–बार परिवर्तित होती रही। एक तरफ जहाँ तूरानी और ईरानी अमीरों का वर्चस्व रहा, वहीं दूसरी ओर पूर्व काल में आहत हुए अफगान अमीरों का षडयंत्र जारी रहा, जिसके परिणामस्वरूप ही हुमायूँ को अपने राज्य से भी हाथ धोना पड़ा तथा शेरशाह सूरी ने सूर राजवंश की सत्ता स्थापित की और हुमायूँ को जीवन के पन्द्रह वर्ष निर्वासितों की भाँति भटकना पड़ा।[55]

बाबर तथा हुमायूँ के शासन काल की घटनाओं से एसा प्रतीत होता है कि इस काल में विदेशी अमीरों तथा स्थानीय अमीरों, जिनमें भारतीय मुसलमान तथा अफगान शामिल थे, के मध्य वर्चस्व के लिए संघर्ष जारी रहा।

बाबर के साथ आये हुए अधिकतर अमीर तूरानी थी, जबकि हुमायूँ के शासन काल में तूरानी के साथ–साथ उन ईरानी अमीरों का भी वर्चस्व

---

55. इक्तिदार आलम खाँ, जनरल आफ द रायल एशियाटिक सोसायटी,

बढ़ता गया जो हुमायूँ के साथ निर्वासन काल में तथा उसके बाद सत्ता प्राप्ति के संघर्ष में उसके साथ थे। अकबर तथा उसके बाद के शासनकाल में इन तुरानी तथा ईरानी अमीरों को जो पिछली दो तीन पीढ़ियों से भारत में ही रह रहे थे उन्हें मुगल कह कर सम्बोधित किया गया।[56] वस्तुत मुगल किसी विदेशी शक्ति के प्रतिनिधि नहीं थे। एक बार शाही सेवा स्वीकार करने वाले मुगल अमीरों ने भारत को ही अपना मूल देश स्वीकार किया।[57]

मुसलमान अमीरों के अतिरिकत इस काल में हिन्दू अमीरों का स्थान भी महत्वपूर्ण था। इस काल में हिन्दू अभिजात वर्ग कभी भी एक संगठित इकाई के रूप में नहीं रहा। जैसे स्वायत्त शासक, विभिन्न श्रेणियों के हिन्दू अमीर, इत्यादि। स्वायत्तशासकों को राजा, राना, राय, रावल, जमींदार आदि शब्दों से

---

56. सतीश चन्द्र, पार्टिज एवं पालिटिक्स एट दी मुगल कोर्ट, पृ0–16

57 वही, तथा घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0–109

सम्बोधित किया जाता था।[58] इस काल में राज्यों के अन्तर्गत स्वायत्त शासकों का अस्तित्व प्रकाश में आता है। जौनपुर राज्य में हिन्दू अमीरों को प्रश्रय प्राप्त था तथा शासन में उनकी सहायता की जाती थी।[59] प्रशासन में मुसलमानों की प्रधानता के बावजूद उनकी स्थिति प्रतिष्ठित बनी रही। इस काल में हिन्दू जमींदारों की स्थिति दो बातों पर निर्भर करती थी। प्रथम कि वह शासक के प्रति कितने निष्ठावान हैं तथा द्वितीय कि उनकी व्यक्तिगत स्थिति कैसी है।[60] अधिकांश हिन्दू जमींदार व अमीर केन्द्र के प्रति निष्ठावान बने रहे तथा राज्य की कृपा अर्जित करते रहे। कुछ विद्रोही शासकों का भी उल्लेख प्राप्त होता है, जो केन्द्र द्वारा समय--समय पर दण्डित किये गये।

---

58 डा0 हेरम्ब चतुर्वेदी, (शोध ग्रन्थ), दि सोसायटी आफ नार्थ इण्डिया इन द सिक्सटीन सेन्चुरी एस डिपेक्ट थ्रू कन्टेम्परेरी हिन्दी लिटरेचर, अध्याय-2,3, पृ0: 65-138

59 राधेश्याम, पृ0-270

60 वही, पृ0-218

मुगल अमीर वर्ग में अफगान अमीरों ने कोई स्थायित्व प्राप्त नहीं किया। बाबर की हिन्दुस्तान में विजय के उपरान्त कुछ अफगान अमीरों ने विजेता मुगल शासक के साथ शान्ति समझौता कर लिया था। अल्पकालीन सूर शासन तथा मुगल सत्ता की पुर्नस्थापना ने मुगल शासकों के मन में अफगानों के प्रति सन्देह उत्पन्न कर दिया था।[61] वास्तव में दिल्ली सुल्तानों की तरह मुगलों के मन में भी अफगानों के प्रति तिरस्कार की भावना व्याप्त थी।[62] सोलहवीं सदी के पूर्वान्ह में भी यदि भारतीय मुसलमानों में ऐसा कोई गुट था जिसने अभी भी जनजातीय संगठन का आधार अंगीकार कर रखा था तो वे अफगान ही थे।[63] अफगानों की स्वाभाविक कमजोरी उनके जनजातीय कबीलों के बीच एकता का अभाव था। इसी कारण से वे सुव्यवस्थित मुगल सेना का संयुक्त रूप से प्रतिरोध भी नहीं कर सके थे।[64]

---

61 घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0–110

62. वही, पृ0–111

63 सतीश चन्द्र, पार्टिज एवं पालिटिक्स एट दी मुगल कोर्ट, पृ0:16–20

64. वही तथा घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0–111

अफगान
वस्तुतः बाबर तथा हुमायूँ के शासनकाल के दौरान/ विद्रोह का रूख अख्तियार करते रहे, जिससे स्थानीय स्तर की समस्याएं पैदा हुई। मुगलों की अफगानों के प्रनि नीति नकारात्मक रही। परन्तु उनके शाही सेना में प्रवेश कर पर रोक नहीं थी। फिर भी मुगल दरबार में अफगान गुट का कोई अस्तित्व नहीं था।[65]

उपरोक्त विश्लेषण की पृष्ठभूमि में यदि हम हुमायूँ की शासनकाल की कुछ प्रमुख घटनाओं का बारीकी से अध्ययन करें तो तूरानी उमरा की भूमिका एवं समसामयिक परिवेश में उनके योगदान पर पर्याप्त प्रकाश पड़ सकता है। इस घटना क्रम में प्रथम प्रमुख घटना तो बाबर की मृत्यु और स्वयं के राज्यारोहण के मध्य चार दिनों की अवधि में हुए षडयंत्र से तूरानी अमीरों का मन्तव्य व उनकी महत्वाकांक्षा स्पष्ट हो जाती है।[66]

---

65. वही

66 आर0एस0अवस्थी, दि मुगल एम्परर हुमायूँ, पृ0–46

बाबर की मृत्यु के समय मीर खलीफा ने एक षडयंत्र रचा।[67] वह चाहता था कि हुमायूँ और उसके भाइयों को राज सत्ता नहीं मिले। बाबर की बीमारी के समय चारों राज कुमारों के आगरा से बाहर रहने के कारण मीर खलीफा ने बादशाह के प्रतिनिधि के रूप में फरमान जारी करता था।[68] इस दौरान मीर खलीफा ने अमीरों के बीच यह विवाद पैदा कर दिया कि आगरे के सिहांसन पर कौन बैठेगा। षडयंत्रकारी चाहते थे कि मीर मोहम्मद मेंहदी ख्वाजा को बाबर के बाद राजगद्दी दी जाये। यह बाबर का बहनोई था और खानुवा के युद्ध में इसने मुगल सेना के बायें भाग का नेतृत्व किया था। बाबर की मृत्यु के बाद चार दिनों के समय में खलीफा का प्रयास था कि वह किस तरह से हुमायूँ को सिहासंन से दूर रखे परन्तु बाबर के कुछ प्रमुख अमीरों ने अन्ततः मीर खलीफा के इस प्रयास को असफल करते हुए हुमायूँ की ताजपोशी की।

---

67. अकबरनामा, भाग-1, पृ0-117

68. तबकाते अकबरी, भाग-2, पृ0-29

इसी प्रकार दूसरी प्रमुख घटना के सन्दर्भ में हम मिर्जा बन्धुओं के विद्रोहों का विस्तृत अध्ययन कर सकते हैं। जब मिर्जा हुसेन मिर्जा तथा जमा मिर्जा ने न केवल विद्रोह किये अपितु वे भाग कर उसके शत्रु गुजरात के अफगान शासक बहादुरशाह के यहाँ शरण लेने जा पहुँचे।[69] बहादुर शाह के साथ हुमायूँ की बैमनस्यता को इस प्रकार बढ़ाने में उन्होंने उत्प्रेरक का कार्य किया।[70] उन दिनों सुल्तान सिकन्दर लोदी के लड़के सुल्तान महमूद ने बीयन और बायजीद की सहायता से तथा अफगान सरदारों की सहायता से विरोध का झण्डा खड़ा कर दिया और जौनपुर तथा उसके पास के इलाकों पर अपना अधिकार कर लिया। हुमायूँ ने उसका दमन करने के लिए कूच किया और उस पर विजय प्राप्त कर वापस आगरा लौट आया।[71] इसी समय मोहम्मद जमाँ मिजा ने, जो शुरू में बल्ख से स्वर्गीय बादशाह की शरण में आया था, विरोध खड़ा कर दिया, परन्तु उसे

---

69. एस0आर0शर्मा, पृ0: 59–60 तथा आर0एस0 अवस्थी, पृ0:69–70

70. आर0एस0 अवस्थी, पृ0–68

71 इलियट एण्ड डाउसन, भाग–4, पृ0–350 तथा अकबरनामा, भाग–1

पकड़कर बयाना के किले में भेज दिया गया।[72] मोहम्मद जमा मिर्जा हुमायूँ की सौतेली बहन का बेटा था। उसकी आँखे फोड़ने का भी हुक्म दिया गया, परन्तु यादगार बेग के नौकरों ने नश्तर लगाते समय उसकी पुतलियों को बचा लिया। कुछ अर्से बाद वह भाग निकला और गुजरात के शासक सुल्तान बहादुर के पास पहुँच गया। इसी समय मोहम्मद सुल्तान मिर्जा अपने दो लड़कों के साथ जिनका नाम उलूग मिर्जा और शाह मिर्जा था। कन्नौज पहुँचकर विद्रोह खड़ा कर दिया।[73]

उधर राज्य का विभाजन करते समय हुमायूँ ने बड़ी भूल कर दी थी और दगाबाज कामरान के अधिकार में ऐसा हिस्सा दे दिया था जो बाबर के राज्य का प्राण था। ऐसा करके हुमायूँ ने स्वयं के लिए रास्ता बन्द कर दिया था क्योंकि उसके राज्यों से अफगान की पहाड़ियों का भाग पृथक हो गया।[74]

---

72 रशुब्रुक्स विलियम्स, पृ0-162 तथा आर0एस0 अवस्थी, पृ0-69

73 आर0एस0शर्मा, पृ0-61 तथा आर0एस0अवस्थी, पृ0-70

74. ईश्वरी प्रसाद, पृ0-326 तथा आर0पी0 अवस्थी, पृ0-73

जैसी ही कामरान ने लाधान व पेशावर पर अधिकार किया, उसने हुमायूँ सम्पर्क अपने पैतृक निवास मध्य एशिया से काट दिया अतः जो तूरानी अमीर अधिक संख्या में उसकी सेवा में आने को तत्पर थे, वो ऐसा नहीं कर सके।[75]

इधर हुमायूँ ने गुराज के सुल्तान बहादुर शाह से मोहम्मद जमाँ मिर्जा के प्रत्यर्पण की माँग की जिसे बहादुरशाह ने ठुकरा दिया।[76] परिणामस्वरूप उसे गुजरात अभियान के लिए विवश होना पड़ा। मूक रूप से यह विवशता तूरानी अमीरों की ही देन थी। इस विजय के बाद भी इन अमीरों ने उसके प्रतिनिधि व छोटे भाई अस्करी के लिए भी समस्याएं उत्पन्न की।[77]

हुमायूँ के शासन काल में तूरानी अमीरों की मानसिकता एवं भूमिका का अन्दाजा हुमायूँ के बंगाल अभियान के दौरान भी सुस्पष्ट हो जाता है। जहाँ

---

75. एलफिंस्टन हिस्ट्री आफ इण्डिया, पृ0–441 तथा आर0पी0अवस्थी, पृ0 73–74

76. आर0पी0अवस्थी, पृ0: 78–81, तथा अकबरनामा भाग–1, पृ0–126

77 वही

वे अपनी महत्त्वाकांक्षाओं के चलते व स्वार्थपूति हेतु प्रायः केन्द्रीय नीति के विरूद्ध कार्यों में लिप्त पाये गये। बंगाल से हुमायूं के प्रतिनिधि व छोटे भाई हिन्दाल के पलायन का सबसे बड़ा कारण यही अमीर और उनकी स्वार्थ लिप्सा थी।[78]

बंगाल के शासक का शेर खॉ से मिलकर अफगानी सेना की मजबूत करना और बंगाल से हिन्दाल का पलायन करना और बाद में आगरा पहुँच कर विद्रोह करना तूरानी अमीरों की भूमिका को भलीभॉति दर्शाता है। जैसा कि उपरोक्त विवरणों से एवं उसके भाइयों के साथ उसके पारस्परिक सम्बन्धों से सुस्थापित होता है।

इन सम्बन्धों की जटिलता को तूरानी अमीरों की स्वार्थपरता ने और भी जटिल बना दिया था तथा हुमायूँ के पतन में इस विशेष वर्ग का महत्वपूर्ण योगदान था।

---

78 आर0पी0 अवस्थी, पृ0:73–80 तथा आर0एस0शर्मा, पृ0: 67–71

अकबर के शासन काल (1556 – 1605 ई0) में तूरानी अमीरों की भूमिका

साम्राज्य प्राप्ति के अभियान में हुमायूँ के होनहार पुत्र अकबर ने अल्पायु में ही अपने पिता का व्यापक सहयोग किया और कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपनी सेना का नेतृत्व किया। इसी क्रम में सरहिन्द विजय का नायक घोषत किया गया।[1] अकबर की सरहिन्द विजय के बाद सुल्तान सिकन्दर सूर भाग कर शिवालिका की पहाड़ियों में छिप गया। मीर अब्दुल मआली को उसका पीछा करने के लिए भेजा गया, परन्तु उसे सफलता नहीं मिली और धीरे–धीरे सिकन्दर पुन शक्तिशाली हो गया। जब इसकी सूचना हुमायूँ को मिली तो उसने बहराम खॉ को अकबर के साथ सूबेदार का अन्त करने के लिए भेजा।[2]

जब अकबर इन कार्यो में व्यस्त था उसी समय हुमायूँ बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गयी। इसकी सूचना अकबर को पंजाब में दी

---

1 एस0आर0 शर्मा, भारत में मुगल साम्राज्य, पृ0–154

2 इलियट एण्ड डाउसन, पृ0–239

गयी। शोक की रस्म अदा करने के बाद बैरम खॉं की अध्यक्षता में सरदारों ने शहजादा अकबर को उत्तराधिकारी घोषित किया। 14 फरवरी 1556 ई0 को अकबर कालानोर में सिंहासनारूढ़ हुआ।[3]

नि:संस्देह अकबर भारत वर्ष के शासकों में श्रेष्ठ था। उसने कट्टर पंथी नीति का परित्याग कर सभी धर्मो के प्रति आस्था प्रकट की ओर अपनी शासन व्यवस्था में सभी धर्म के लोगों का समन्वय स्थापित किया। अकबर के शासन काल में अमीरों का संगठन काफी सुव्यवस्थित स्थिति में था। वास्तव में एक संस्था के रूप में अमीर वर्ग इसी शासन काल में स्थापित हुआ। अकबर के शासन काल में अमीरों की स्थिति का मूल्यांकन इस प्रकार किया जा सकता है।

---

3 इलियट एण्ड डाउसन, पृ0-241

अकबर के शासन काल में फारस से भारत आने वाले अमीरों की संख्या उन्हें प्राप्त उच्च पदों के अनुसार काफी अधिक थी। अकबर ने फारस से आने वाले अमीरों को अपने प्रशासन में उनके पूर्ववत पदों के समकक्ष पद प्रदान किये। अबुल फजल ने उन अमीरों की सूची दी है, जिन्हें वकील, वजीर, बख्शी एवं सदर के पदों पर नियुक्त किया गया था।[4] आगे

पद	नियुक्तियाँ	तूरानी	ईरानी	भारतीय	अनुलेखित
वकील	7	5	2	–	–
वजीर	10	2	7	1	–
बख्शी	15	3	8	2	2
सद्र	7	–	2	5	–

4. अफजल हुसेन, ग्रोथ आफ ईरानी एलिमेन्ट इन अकबर नोबिलिटी, इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, 1975, पृ0= 173–74

तालिका 5 में अमीरों की पदस्थिति स्पष्ट रूप से दी गयी है।

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि अकबर के प्रशासन में लम्बे समय तक ईरानियों का वर्चस्व बना रहा। मुगल अमीर वर्ग में ईरानी अमीरों का वह दल प्रमुख स्थान प्राप्त किये हुए था जो हुमायूँ के हिन्दुस्तान से ईरान भागने पर तथा पुन. हिन्दुस्तान जीतने पर उसके साथ था।[6] ईरान के इस केन्द्रीय दल का उच्च पदों पर नियुक्त होना तथा सफविद ईरान में उत्पन्न परिस्थितियों के कारण पैदा हुई स्थिति से वहाँ के अमीरों का भारत में संरक्षण प्राप्त करना, दो ऐसे महत्वपूर्ण तथ्य थे जिनके कारण ईरानी अमीर वर्ग की मुगल अमीर वर्ग में निरन्त वृद्धि होती रही।[7] यद्यपि अभी भी वह तूरानी अमीरों की संख्या से

---

5. घनश्याम दत्त शर्मा, मध्यकालीन भारतीय, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थाएं (1990), पृ0–106

6. वही

7 घनश्याम दास शर्मा, पृ0–106

काफी पीछे थी। इख्तिदार आलम खॉ द्वारा दी गयी ताकिला से तूरानी अमीरों की प्रभावशाली स्थिति का ज्ञान होता है, परन्तु साथ ही यह भी पता चलता है कि किस प्रकार इन प्रभावशाली तूरानियों के मध्य इरानियों ने अपना स्थान बनाया।[8]

मुगल अमीर वर्ग में विभिन्न जाति व धर्म के लोगों का समावेश वास्तव में ऐतिहासिक परिस्थितियों का परिणाम था, यद्यपि, सुनिश्चित शाही नीति ने इसके विकास में अवश्य योगदान दिया।[9] अकबर की नीति इन सभी तत्वों को एक शाही सेवा में संगठित करना था। इसीलिए वह एक सेनापति के अधीन विभिन्न जाति के लोगों को नियुक्त करता था तथा प्रत्येक संगठन के गुणों को पूर्ण आदर प्रदान किया जाता था। इस तरह अकबर के शासनकाल में

---

8 वही तथा इख्तिखार आलम खॉ, द नोबिलिटी अण्डर अकबर एण्ड द डेवलपमेन्ट आफ हिज रिलिजियस पालिसी, जनरल आफ द रायल एशियाटिक सोसायटी, लन्दन, पृ0–1968

9. घनश्याम दास शर्मा, पृ0–106

अमीर वर्ग के संगठन की एकता में भिन्नता का समावेश था। भिन्नता का यह तत्व भावना प्रधान था किन्तु इससे मानसिक उत्तेजना भी इससे पैदा हुई। 1581 ई० का विद्रोह इसी मानसिक कष्ट की अभिव्यक्ति थी।[10] बादशाह द्वारा किसी वर्ग विशेष को प्राथमिकता दिये जाने के साथ अमीर वर्ग के जातीय गुटों में एक दूसरे के प्रति श्रेष्ठता की भावना (वैमनस्यता) उजागर हो जाती थी। इख्तिदार आलम खाँ ने एक तालिका के द्वारा इस समय के अमीरों की स्थिति का चित्रण किया है।[11]

---

10. घनश्यामदास शर्मा, पृ०-106

11. इख्तिदार आलम खाँ, द नोबिलिटी अण्डर अकबर एण्ड द डेवलपमेन्ट आफ हिज रिलिजियस पालिसी, जनरल आफ द रायल एशियाटिक सोसायटी, लन्दन, 1968

ावधि	अमीरों की कुल संख्या	तूरानी	ईरानी	भारतीय मुसलमान	राजपूत व अन्य हिन्दू	अ
1555	51	27 (52 9%	16 (31 37%)	–	–	8 (
1565–75 500 एवं अधिक	96 176	38 (39 58%) (38 6%)	37 (38 54%) (27·27%)	9 (9 39%) (14 2%)	8 (8 33%) (10 22%)	4 ((
1580	272	66 (24·26%)	47 (17·27%6	44 (16 1%)	43 (15 83%)	7 (
1575–95 1000 एवं अधिक	87	32 (38·78%)	24 (21·58%)	14 (16 09%)	14 (16·09%)	3 (
500 एवं अधिक	184	64 (34·78%)	47 (25·54%)	34 (18·48%)	30 (16·30%6	9 (

सामयिक ऐतिहासिक परिस्थितियों एवं निश्चित राजनीतिक उद्देश्यों के साथ अकबर के शासनकाल में जिस अमीर वर्ग का उद्भव हुआ वह जहाँ एक तरफ उदार निरंकुश राज्य के स्वरूप को प्रकट करता है, वहीं दूसरी तरफ व्यापक समन्वय का चित्र भी प्रस्तुत करता है।[12] जिन विभिन्न धर्मो एवं जातीय वर्गो के समावेश से मुगल कालीन अमीर वर्ग अस्तित्व में आया उसके उद्भव का श्रेय अकबर को ही है।[13]

आईन में दी गयी मंसबदारों की सूची के आधार पर कहा जा सकता है कि 70 प्रतिशत से कुछ कम अमीर जन्म से विदेशी थे तथा उन परिवारों से सम्बन्धित थे, जो या तो हुमायूँ के साथ अथवा अकबर के सिंहासनारूढ़ होने के पश्चात भारत आये थे।[14] 5000 या इससे अधिक के

---

12. घनश्याम दास शर्मा, पृ0–108

13 वही

14 वही, तथा इख्तिदार आलम खाँ

मनसबदारों में तूरानी तथा ईरानी अमीरों की कुल संख्या कुल अमीरों की संख्या का 1565 ई0, 1575 ई0 के मध्य 78.12 प्रतिशत तथा 1575 ई0 से 1595 ई0 के मध्य 64 36 प्रतिशत था।[15] अकबर के उत्तराधिकारियों के साथ भी मुगल काल में विदेशी अमीरों की संख्या बनी रही। यद्यपि अकबर के शासनकाल की तुलना में इनके अनुपात में कमी दृष्टिगोचर होती है। अकबर के शासनकाल के पश्चात विदेशों से आने वाले अमीरों की संख्या में काफी कमी हो गयी थी।[16]

अकबर के बाद विदेशी अमीरों की संख्या में यह गिरावट उच्च मंसबदारों के सम्बन्ध में और भी अधिक देखने को मिलती है।[17] उल्लेखनीय है कि उन अमीरों को जिनके पूर्वज दो तीन पीढ़ी से हिन्दुस्तान में आकर बस गये थे जो अपने स्थान से सम्बन्ध विच्छेद कर भारत में बस

---

15. वही, तथा इख्तिदार आलम खाँ ।
16. मु0 अथर अली, द मुगल नोबिलिटी अण्डर औरंगजेब, पृ0–17
17. वही, तथा घनश्याम दास शर्मा, पृ0–108

गये थे। उन्हें विदेशी नहीं कहा जा सकता है। कुछ लेखकों ने इस अमीर वर्ग को विदेशी एवं भारतीय में विभक्त किया है। जो उचित नहीं कहा जा सकता है। सतीश चन्द्रा के अनुसार मुगल शब्द उस समय ईरान व तूरान से आने वाले लोगों के लिए सामान्यत: प्रयुक्त किया गया था।[18] वस्तुत: मुगल किसी ऐसी विदेशी शक्ति के प्रतिनिधि नहीं थे। जिसके आर्थिक एवं राजनीतिक उद्देश्य देश के बाहर केन्द्रित हों। एक बार शाही सेना में भर्ती होने के बाद मुगलों ने भारत को अपना निवास स्थान बना लिया तथा उनका अपने मूल स्थान से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।[19] वास्तव में शाही सेवा की एक शर्त यह भी थी कि सम्बन्धित व्यक्ति अपने परिवार को हिन्दुस्तान में ही रखे। चूँकि सेवा काल जीवन पर्यन्त होता था, इसलिए पदमुक्त होने के बाद अपने मूल देश में वापस जाने का

---

18. सतीश चन्द्र, पार्टिज एवं पालिटिक्स एट दी मुगल कोर्ट, पृ0-16

19. वही

सवाल ही नहीं था। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी मुगल अमीर का दरबार में पृथक वर्ग नहीं था।[20] इस तरह विदेशी शब्द को सही अर्थों में प्रयुक्त करने पर ईरानी तथा तूरानी अमीरों की संख्या में निरन्तर गिरावट दिखायी पड़ती है।[21]

भारतीय मुसलमान जिन्हें शेख जादाओं के नाम से जाना जाता था।[22] अधिकांशतः कुछ प्रमुख कबीलों से सम्बद्ध थे जैस बरहा के सैय्यद एवं कम्बूज।[23] अकबर के शासन काल के उत्तरार्द्ध में शासन काल के प्रारम्भ की तुलना में भारतीय मुसलमानों की संख्या में वृद्धि हुई। उल्लेखनीय है कि 1580–81 ई0 के विद्रोह के दौरान भारतीय मुसलमानों एवं राजपूतों ने संयुक्त रूप से अकबर का साथ दिया था। इस तथ्य से स्पष्ट है कि विद्रोह के बाद

---

20. वही तथा घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0–109

21. वही

22. वही, पृ0–110

23. वही, पृ0–111

के वर्षों में भारतीय अमीरों को शाही सहयोग में अधिक दायित्व पूर्ण पाया गया और इसी कारण अमीर वर्ग में इनका अधिक प्रभाव स्थापित हुआ।[24]

अमीर वर्ग के अन्तर्गत भारतीय मुसलमानों का प्रादुर्भाव भारतीय साम्राज्य में मुस्लिम वर्ग के सभी वर्गों का समर्थन प्राप्त करने की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण कदम था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अकबर की नीति भारतीय मुसलमानों के सभी वर्गों में अपने प्रभाव को स्थापित करने की थी।[25] भारतीय मुसलमानों की मुगल अमीर वर्ग में प्रवेश की नीति अकबर के बाद भी जारी रही।

---

24. घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0– 111

25. वही

अकबर ने मंसब व्यवस्था के जरिये विभिन्न जातीय तत्वों को व्यवस्थित किया तथा उनमें सद्भावना स्थापित की। जिससे अमीर वर्ग की कार्य क्षमता में वृद्धि की जा सके, साथ ही वह पूर्णतः शाही अनुकम्पा पर भी निर्भर रहे।[26] अकबर चाहता था कि अमीर वर्ग के विभिन्न जातीय, धार्मिक एवं प्रान्तीय गुटों के मध्य शक्ति संतुलन इस सीमा तक बनाये रखा जाय कि बादशाह अमीर वर्ग के किसी एक गुट पर निर्भर न रहे। अकबर का राजपूतों के साथ समझौता काफी बड़ी हद तक तूरानी अमीर वर्ग की शक्ति को संतुलित करने के उद्देश्य पर आधारित था।[27] किसी एक की स्वामि भक्ति के प्रति अकबर पूर्णतः आश्वस्त नहीं था। वस्तुतः यह समझौता राजपूतों की व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की प्राप्ति एवं सम्बन्धित राजपूत राज्यों में सुव्यवस्था स्थापित करने के लिए सार्थक प्रमाणित हुआ जिसकी उपलब्धि आप्राप्य थी। इस तरह अकबर द्वारा राजपूत शासकों

---

26. घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0-112

27. जी0डी0 शर्मा, राजपूत पालिटिक्स, पृ0. 53-55

के साथ सहयोग की नीति ने मुगल साम्राज्य के अमीर वर्ग की संरचना में नवीन तत्व की स्थापना की जिसके अनुसार राजपूत राजा एवं उनके बहुत से सरदार अमीर वर्ग के अंग बन गये थे।[28] अकबर के शासनकाल के दौरान 1575–1595 ई0 के मध्य अमीर शासनकाल के दौरान 1575–1595 के मध्य मुगल अमीर वर्ग के बीच हिन्दू शासकों (मंसबदारों) तथा राजपूतों की स्थिति काफी स्पष्ट थी। इस दौरान 500 तथा इससे अधिक स्थिति काफी स्पष्ट थी। इस दौरान 500 तथा इससे अधिक के कुल 184 मंसबदारों में से राजपूत मंसबदारों की संख्या 27 थी और इसके अतिरिक्त 3 अन्य हिन्दू मंसबदार भी थे।[29]

अकबर की यह नीति वास्तव में मुगल नीति की आधार शिला रही। तुर्कों के आगमन से पूर्व ही उत्तरी भारत में राजपूत शासक वर्ग की डोर संभाले

---

28 जी0डी0शर्मा, राजपूत पालिटिक्स, पृ0:53–55

29 अथर अली, पृ0–21

हुए थे।[30] इसके अतिरिक्त ये राजस्थान में राजवंशों के सृजनकर्ता थे और उत्तरी भारत के विस्तृत क्षेत्र में राजपूत अपना प्रभाव स्थापित किये हुए थे। इस प्रकार अकबर का राजपूतों के साथ समझौते का महत्व केवल कुछेक स्थानीय राजपूत शासकों के साथ आपसी सुविधा तक ही सीमित नहीं था, वरन् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम अमीर वर्ग को मिश्रित करने के उद्देश्य में एक महत्वपूर्ण एवं दूरगामी कदम था।[31] निःसंदेह अकबर पूर्व मुगल शासकों के लिए तूरानी उमरा वर्ग द्वारा बार-बार उपस्थित की जाने वाली समस्याओं से अवगत था और वह हुमायूँ के समय के षडयंत्रों का अनुभव अभी तक कर रहा था, इसी दृष्टि से उसने तूरानियों को संतुलित करने के लिए अपने शासन में ईरानियों को बढ़ावा दिया और इन्हें नियंत्रित करने के लिए हिन्दू तथा राजपूत शासकों को भी शक्ति

---

30 जी0डी0 शर्मा, राजपूत पालिटिक्स, पृ0: 53-55

31. घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0-113

प्रदान की।[32] यद्यपि उसने अपनी इस नीति का प्रचार इस प्रकार किया कि वह धार्मिक रूप से सहिष्णु है, परन्तु यदि गौर किया जाय तो उसकी इस नीति के पीछे उसका प्रशासनिक दिमाग काम कर रहा था और उसने अपने दरबार में संतुलन स्थापित करने के लिए ही ऐसा किया।[33]

अकबर ने यद्यपि अपने आपको भारतीयता के माहौल में पूरी तरह आत्मसात कर लिया था, तथापि वह मुस्लिम एवं भारतीय शासकों की विश्वव्यापी साम्राज्य स्थापित करने की पारम्परिक कल्पना का त्याग नहीं कर सका और

---

32. इक्तिदार आलम खॉं, द नोबिलिटी अण्डर अकबर एण्ड द डेवलपमेन्ट आफ हिज रीलिजियस पालसी, जनरल आफ द रायल एशियाटिक सोसायटी, लन्दन, 1968

33. अफजल हुसैन, ग्रोथ आफ ईरानी एलिमेन्ट न अकबर नोबिलिटी, इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, 1975, पृ0:173-74

विश्व व्यापी राजनय के सिद्धान्त की ओर अग्रसर हुआ।[34] इसमें कोई सन्देह नहीं कि अबुल फजल द्वारा प्रस्तुत आदर्श को अकबर का पूर्ण समर्थन प्राप्त था ता अकबर को अपने दीर्घकालीन शासन काल में इसे क्रियान्वित करने का पूरा मौका भी मिला। परन्तु यहाँ यह भी गौर तलब है कि इन सिद्धान्तों का पालन तथा राजतंत्र के माध्यम से आदर्श की प्राप्ति, विशेषकर अलिखित संविधान एवं कार्यशील सुरक्षा की अनुपस्थिति में, बादशाह के स्वभाव तथा तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर करते थे।[35] अकबर ने उक्त आदर्श को प्राप्त करने के लिए एक सुव्यवस्थित प्रशासन तन्त्र

---

34. आर0पी0 त्रिपाठी, सम आस्पेक्ट आफ दि मुस्लिम एडमिनिस्ट्रेशन पृ0: 141–43 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, अकबर द ग्रेट, भाग–2 पृ0: 19–20

35. इब्न हसन, द सेण्ट्रल स्ट्रक्चर आफ मुगल एम्पायर, पृ0: 62–63

की स्थापना की।[36] प्रशासनिक तन्त्र का ढाँचा तैयार करते समय भी अकबर ने अपने अमीरों के बीच शक्ति संतुलन स्थापित करने का पूरा प्रयास किया। चूँकि अकबर यह जानता था कि किसी एक वर्ग के हाथों में शक्ति सौंप देने से वह उस वर्ग के हाथ की कठपुतली बन जायेगा इसलिए उसने किसी वर्ग विशेष कर तूरानियों को शक्ति का केन्द्र बिन्दु नहीं बनने दिया तथा प्रशासन में प्रत्येक वर्ग को स्थान दिया।[37]

मुगल बादशाह निरकुंश एवं स्वेच्छाचारी राजनय का द्योतक था, तथापि राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए उसने अपने पूर्ववर्ती सुल्तानों

---

36 वही तथा घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0–31

37. ए0एल0 श्रीवास्तव, अकबर द ग्रेट, भाग–2, पृ0–19–24 तथा जी0डी0 शर्मा, राजपूत पालिटिक्स, पृ0: 53–55

के समान अपने विश्वासपात्र एवं योग्य व्यक्तियों को विभिन्न विभागों में दीवान (प्रमुख) के पदों पर नियुक्त किया।[38] अकबर पहला मुस्लिम शासक था जिसने शाही कार्य विधि से सम्बन्धित संस्थाओं की विधिवत रचना की। इस कार्य से उसने जन साधारण तथा अमीर वर्ग में विश्वास की भावना पैदा किया। अकबर के शासन काल का प्रारम्भ भिन्न परिस्थितियों में हुआ था। उसकी अल्पवयस्कता के काल में बैरम खॉ उसके संरक्षक के रूप में वकील के पद पर कार्यरत था और अकबर के नाम पर राज्य के प्रमुख के रूप में अधिकारों का उपभोग करता था।[39] बैरम खॉ के पतन के पश्चात पहले माहम अनगा तत्पश्चात मुनीम खॉ वकील के रूप में प्रशासन को निर्देशित करते रहे, किन्तु इनका प्रभाव बादशाह से द्वितीय रहा।[40] ये सभी तूरानी अमीर थे।

---

38. आइने अकबरी, ग्रन्थ, 1–2, अनु0 हरिवंश राय शर्मा (1966) पृ0–245

39. वही, पृ0–245

40. वही

अकबर द्वारा पुनर्निर्मित मन्त्रिपरिषद में दीवान, मीर बख्शी, मीर सामान तथा काजी व सड का स्थान प्रमुख था, जो क्रमश. राजस्व, सेना, नागरिक कार्य व कारखानों तथा न्यायिक व धार्मिक विभाग के अध्यक्ष होते थे।[41] मंत्रियों के अधीन कार्यरत मुस्तौफी, प्रमुख काजी, प्रमुख मुफ्ती, प्रमुख मुहतसिब, आदि कुछ महत्वपूर्ण अधिकारी बादशाह तक सीधी पहुँच रखते थे।[42] बाबर तथा हुमायूँ के शासनकाल में जहाँ एक ओर बागडोर तूरानी अमीरों के हाथ में थी[43] वहीं दूसरी ओर अकबर ने विभिन्न विभागों की स्थापना कर उसके प्रमुखों का पद धीरे-धीरे उन वर्गों के हाथों में भी सौंपा।[44] ये लोग जो अकबर के

---

41. वही

42. घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0-35

43 आर0पी0 खोसला, मुगल किंगशिप एण्ड नोबिलिटी (1976), पृ0-227

44. वही, तथा आइने अकबरी, पृ0-245

विश्वसनीय थे तथा शासन प्रबन्ध में अकबर के संतुलन के सिद्धान्त को स्वीकार करते थे।

अकबर के शासन काल में सबसे प्रमुख पद राज्य के वकील या प्रधानमंत्री का होता था। जिस पर राज्य के सम्पूर्ण विभागों की देखरेख का उत्तरदायित्व था। अकबर की अल्पायु में बैरम खॉ उसका वकील था।[45] यह तूरानी था। उसके पश्चात बैराम बेग का पुत्र मुनीम खॉ वकील के पद पर नियुक्त हुआ।[46] इसके पश्चात अत्गा खॉ, बहादुर खॉ, ख्वाजा जहॉ, खानखाना मिर्जा खॉ तथा खान आजम मिर्जा कोका की इस पद पर नियुक्ति हुई।[47]

---

45. आइने अकबरी, पृ0–232

46 वही

47. वही, पृ0–245

अकबर के शासनकाल में दूसरा महत्वपूर्ण पद वजीर का था। अकबर के काल में इस पद को दीवान कहकर सम्बोधित किया जाता था। अकबर के समय में इसे अर्थ मंत्री भी कहा जाता था। जो राजस्व एवं वित्त की देखरेख करता था। इस काल में मीर अजीज उल्ला तुरबती, ख्वाजा जमालुद्दीन, महमूद खुरासानी, ख्वाजा मुईनुद्दीन फरन्खूदी, ख्वाजा अब्दुल मजीद आसफ खॉ, वजीर खॉ, मुजफ्फर खॉ, राजा टोडर मल, ख्वाजा शाह, मंसूर शिराजी, कुलीज खॉ तथा ख्वाजा शम्सुद्दीन ख्वाफी इस पद पर नियुक्त किये गये।[49]

इसके पश्चात मीर बख्शी का स्थान था। मुगल काल में मीर बख्शी दीवाने अर्जे अथवा सैन्य मंत्रालय का प्रमुख होने के नाते उससे सम्बन्धित सभी

---

48. घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0–35 तथा आर0पी0 खोसला, पृ0: 260–271

49. आइने अकबरी, ग्रन्थ–1,2 पृ0–245

अधिकारों का उपभोग करता था, किन्तु उसका प्रभाव अपने विभाग से बाहर भी था।[50] बादशाह के निकट सीधी पहुँच होने के कारण उसकी प्रतिष्ठा काफी बढ़ गयी थी। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि मीर बख्शी मुगल सेना का सर्वोच्च सेनापति नहीं था, अपितु वह बादशाह का प्रमुख सैनिक परामर्शदाता था। वह मंसबदारों के सैनिक दलों का मुख्य अधीक्षक था, तथा उनके वेतन का निर्धारित किया करता था। साथ ही वह मंसबदारों के सैनिकों का प्रतिवर्ष निरीक्षण भी करता था। मुगल काल में ख्वाजा जहा, ख्वाजा ताहिर सिजिस्तानी, मौलाना हवी विहजादी, मौलाना दखेश मुहम्मद मशहदी, मौलाना इश्की मुकीम खुराशान, सुल्तान महमूद बदख्शी, लश्कर खॉ, शाहवाज खॉ, राय पुरूषोत्तम, शेख फरीद बुखारी, काजी अली बगदादी, जाफर बेग आसफ खॉ, ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद तथा ख्वाजगी फतेह उल्ला मीर बख्शी के पद पर तैनात रहे और अपनी

---

50. घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0-37

सेवाएं मुगल प्रशासन को उपलब्ध करायी।[51] मीर बख्शी एक तरह से साम्राज्य की धुरी थी। केन्द्र के बाहर नियुक्त सभी वाकिया नवीस उसके प्रतिनिधि होते थे। सूबे का बख्शी अपने क्षेत्र में वाकिया नबीसों का प्रमुख होता था। सूबों के बख्सियों द्वारा केन्द्र को भेजी गयी सूचनाएं मुख्यतः सूबों में नियुक्त मंसबदारों के कार्यों एवं उनकी गतिविधियों से सम्बन्धित सूचनाएं प्रदान करती थी।[52] इस प्रकार मीर बख्शी साम्राज्य के विभिन्न भागों में नियुक्त मंसबदारों की कार्य विधि एवं कार्य क्षमता के विषय में अपना मत प्रकट कर सकता था।

अगला प्रमुख अधिकारी सद्र था।[53] यह बादशाह एवं जनता को जोड़ने वाला माध्यम, शरा का प्रवर्तक एवं उलमा का प्रतिनिधि माना जाता था।

---

51. आइने अकबरी, ग्रन्थ 1,2 पृ0-245

52. घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0-39 तथा आइने अकबरी, पृ0-245

53 वही

यह बादशाह का प्रमुख परामर्शदाता होता था। मुगल काल में इस पद पर मीर फतेह उल्ला, शेख गदाई, ख्वाजगी मुहम्मद सालिह, मौलाना अब्दुल बाकी, शेख अब्दुल नवी, सुल्तान ख्वाजा तथा सद्र जहाँ नियुक्त हुए।[54] अकबर स्वयं इस विभाग के कार्यों में रूचि रखता था तथा उसने इसमें होने वाली अनियमितताओं एवं घूसखोरी के बढ़ते हुए प्रभाव को कम करने के लिए कई महत्वपूर्ण सुधार किये। ऐसा प्रतीत होता है कि काजी एवं सद्र का कार्य एक ही व्यक्ति के अधीन होता था।[55] अतः मुगल काल में काजी और सद्र के दो पृथक विभाग नहीं थे। काजी–उल–कजात (प्रमुख काजी) साम्राज्य में उच्चतम न्यायाधीश होता था।[56]

---

54. आइने अकबरी, पृ0–245

55. पी0शरण, प्राविंशियल गर्वनमेन्ट आफ दि मुगल्स, पृ0–347

56. वही तथा इब्नहसन, पृ0"315

इस प्रकार विभिन्न विभागों में नियुक्तियों का सर्वेक्षण करने से ऐसा प्रतीत होता है कि अकबर का शासनकाल आते-आते तूरानी अमीरों का वह वर्चस्व नहीं रह गया था, जो बाबर ता हुमायूं के शासन काल में था।[57] तथापि अभी भी तूरानियों की स्थिति महत्वपूर्ण थी और उनका योगदान आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य था। वस्तुतः तूरानियों के वर्चस्व में कमी करने के पीछे कई प्रमुख कारकों की मुख्य भूमिका थी। इनमें से एक था ईरानी अमीरों द्वारा अकबर को निःसंकोच समर्थन देना । भारत की स्थानीय प्रवृत्ति ने भी शक्ति संतुलन की दृष्टि से अकबर को अमीर वर्ग में अन्य जातियों के समावेश के लिए विवश किया था।[58] वास्तव में अकबर के शासन काल में फारस से भारत आने वाले अमीरों की संख्या

---

57. इक्तिदार आलम खाँ, द नोबिलिटी अण्डर अकबर एण्ड द डेवलपमेन्ट आफ हिज रीलिजियस पालिसी, जनरल आफ द रायल एशियाटिक सोसायटी, लन्दन, 1968

58. अफजल हुसेन, ग्रोथ आफ ईरानी एलिमेन्ट इन अकबर नोबिलिटी, इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, 1975, पृ0: 173-74

उन्हें प्राप्त उच्च पदों के अनुसार काफी थी। अकबर ने फारस से आने वाले अमीरों को अपने प्रशासन में उनके पूर्ववत पदों के समकक्ष पद प्रदान किये।[59] अबुल फजल ने आइने अकबरी में उन अमीरों की सूची दी है जिन्हें वकील, वजीर, बख्शी एवं सदर के पदों पर नियुक्त किया गया था।[60]

मुगल कालीन अमीर वर्ग अपने संस्थागत रूप से एक लम्बी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है, जिसकी जड़े मध्य युग के दौरान पश्चिमी एशिया में हुयी राजनीतिक और आर्थिक उथल पुथल में, भारत की उस अनोखी सामाजिक स्थिति में जिसकी वजह से एक ताकतवर राजनीतिक सत्ता की आवश्यकता

---

59. वही

60. आइने अकबरी, भाग 1,2 पृ0–245

ने जन्म लिया। भारत में तुर्की सुल्तानों के अनुभवों में, मुगल शासक इस देश में अपने साथ जो तुर्की मंगोल परम्पराएं लेकर आये थे उनमें तथा अन्ततः अकबर की राजनीतिक प्रतिभा तथा उसके शासन काल की अन्य परिस्थितियों में खोजी जा सकती है।[61]

1560 से 1575 ई0 में जब मुगल शासन व्यवस्था में राजपूतों और भारतीय मुसलमानों का दखल हुआ और उच्च पदों पर ईरानियों को नियुक्त किया जाने लगा तो तूरानी रंग धीरे-धीरे फीका पड़ने लगा, साथ ही शासन व्यवस्था में चगताई परम्पराएं धीरे-धीरे लुप्त होने लगी।[62] अकबर ने शाही सेवा में हिन्दुओं को सम्मिलित किया। फलस्वरूप उसके अमीर वर्ग में काबिल हिन्दुओं

---

61. हरिश्चन्द्र शर्मा, मध्यकालीन भारत (खण्ड-2) (1993) पृ0-68

62. वही, पृ0-69 तथा अफजल हुसैन, पृ0: 173-74

को स्थान मिला। इस वर्ग में टोडर मल तथा बीरबल जैसे लोगों की सेवाएं मुगल शासन को प्राप्त हुई।[63] टोडरमल राजस्व सम्बन्धी मामलों के विशेषज्ञ थे और दीवान के पद तक पहुँचे।[64] अकबर ने सुलह-ए-कुल की नीति चलायी। जिसका उद्देश्य था विभिन्न धार्मिक मान्यताओं सुन्नी (तूरानी और अधिकांश शेख जादे), शिया (ईरानी) तथा हिन्दू (राजपूतों) को मिलाना और उनमें पाये जाने वाले साम्प्रदायिक मतभेदों को दूर करना ताकि वे मतभेद शाही तख्त के प्रति वफादारी में बाधा न उत्पन्न करें।[65]

अकबर ने मनसबदारी व्यवस्था, नियमित पदोन्नति, अनुशासन और शाही सेवा में उपयुक्त भर्तियों के माध्यम से अमीर वर्ग के संगठन पर पूरा

---

63. वही

64 आइने अकबरी, पृ0-245

65. हरिश्चन्द्र वर्मा, पृ0-69

ध्यान दिया। मुगलिया अमीर वर्ग का संगठन मंसबदारी व्यवस्था के ढॉचे में ही होता था।[66] मीर बख्शी और अन्य प्रधान अमीर जिन उम्मीदवारों के बारे में सिफारिश करते थे उन्हें अमीर का दर्जा देने पर बादशाह विचार करते थे। केवल वे ही किसी अमीर की पदोन्नति, अवनति अथवा बर्खास्तगी कर सकते थे। किसी को दण्डित करने का अधिकार भी बादशाह के ही हॉथों में था।[67]

मंसबदारों को वेतन का भुगतान या तो नगद होता था या इसके लिए उन्हें अन्य वित्तीय सुविधाएं प्रदान की जाती थी। जिन्हें नकद वेतन मिलता था वे "नकदी" कहलाते थे। और दूसरे प्रकार के लोग "जागीरदार" या तुपुलदार"

---

66. महेन्द्र पाल सिंह, अकबर रिजम्पसन आफ जागीर्स, इण्डियन हिस्ट्री, कांग्रेस, 1966, पृ0: 208–211

67. हरिश्चन्द्र वर्मा, पृ0–71

होते थे।[68] ऐसे अमीरों की संख्या भी बड़ी मात्रा में थी जिनका वेतन आंशिक रूप से नकद और आंशिक रूप से जागीर के तौर पर दिया जाता था। वेतन के अलावा बादशाह कभी-कभी उन्हें पदवियां, सनद, पोशाकें और इनामात या भेंटे बक्स कर सम्मानित भी करते थे। इनसे उन्हें अपने दायित्वों का निर्वहन करने के लिए पोत्साहित किया जाता था।[69]

अमीर वर्ग की कार्य दक्षता को सुनिश्चित करने के लिए बादशाह उन पर अनेक तरीकों से नियंत्रण रखता था। सैनिक दायित्वों के निर्वहन में किसी तरह का अपवंचन न हो, इसके लिए अकबर ने घोड़ों को दागने और लोगों

---

68. हरिश्चन्द्र वर्मा, पृ0-72

69. वही, तथा मोर लैण्ड, ऐग्रेरियन सिस्टम, पृ0-96 तथा इरफान हबीब, एग्रेरियन सिस्टम आफ मुगल इण्डिया, पृ0:262-271

के लिए चेहरा प्रथा शुरू की।[70]

अकबर द्वारा अपने शासन काल के ग्यारहवें वर्ष में उमरा तथा शाही सेवकों के लिए निश्चित संख्या में सवार रखने की व्यवस्था के विवरण से स्पष्ट होता है कि अकबर ने द्विपद, जात व सवार का निर्माण अपने शासन के ग्यारहवें वर्ष में किया था।[71]

अकबर के शासन के दौरान अमीरों को दरबार में उपस्थित के समय एक शिष्टाचार का पालन करना पड़ता था और अलग-अलग अवसरों पर उसे शंहशाह को भेंट या नजराना देना पड़ता था जिसे पेशकश कहते थे।[72] इन विस्तृत

---

70. हरिश्चन्द्र वर्मा, पृ0-72, तथा घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0-73

71. ए0एल0 श्रीवास्तव, अकबर द ग्रेट, भाग-2, पृ0: 216-238

72. हरिश्चन्द्र वर्मा, पृ0-74

दरबारी शिष्टाचारों का वास्तविक उद्देश्य यह था कि इनसे अमीरों पर शंहशाही प्रतिष्ठा और सत्ता की महत्ता का प्रभाव बना रहे।[73]

इस प्रकार अकबर के शासनकाल में अमीरों की स्थिति तथा उनके उदभव का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस काल तक अमीर वर्ग में स्थायित्व आ गया था तथा उनका संगठन सल्तनत कालीन अमीर वर्ग की अपेक्षा अधिक सशक्त था। एक संस्था के रूप में अमीर वर्ग मुगल प्रशासनिक व्यवस्था की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।[74]

फारस के साथ भारतीय शासकों के दीर्घकाल से चले आ रहे सम्बन्ध, ईरानी अमीरों का उच्च पदों पर आसीन होना और वह भी बड़ी संख्या में तथा

---

73. वही

74. घनश्याम दत्त शर्मा, पृ0–104

अकबर द्वारा ईरानी अमीरों को संरक्षण दिया जाना तथा फारस की संस्कृति एवं परम्पराओं ने इन्हें भारत की ओर आने के लिए प्रोत्साहित किया। ईरान से इनके भारत की ओर मुखातिब होने का एक प्रमुख कारण सोलहवीं शताब्दी में सफविद फारस में असामान्य धार्मिक स्थिति का होना था।[75] ईरानियों का इस प्रकार अधिक संख्या में भारत आने तथा शाही सेवा में अपनी सेवाएं अर्पित करने से अकबर के शासन काल में तूरानी अमीरों की स्थिति निरन्तर नीचे की ओर बढ़ने लगी। 1565 ई0 के आस पास अमीर वर्ग में भारतीय मुसलमानों के बढ़ते प्रभाव से तथा उसके बाद अन्य हिन्दू जातियों के समावेश से केन्द्रीय तथा प्रान्तीय दोनों ही स्तर पर उन तूरानियों का प्रभाव जो बाबर तथा हुमायूँ के शासन काल में शिखर पर था लगभग बराबरी के स्तर पर आ गया था। अकबर की यही योजना भी थी कि वह अपने शासन में सभी जातियों का समावेश करे ताकि उसे किसी एक वर्ग के हाथ की कठपुतली बनकर न रहना पड़े।[76] अकबर की नीति विभिन्न

---

75. वही, पृ0–105

76. वही, पृ0–107

जाति व धर्म के लोगों का समावेश वास्तव में ऐतिहासिक परिस्थितियों का परिणाम था। यद्यपि सुनिश्चित शाही नीति ने इसके विकास में अवश्य योगदान दिया। सामयिक ऐतिहासिक परिस्थितिचों एवं राजनीतिक उद्देश्यों के साथ अकबर के शासन काल में जिस अमीर वर्ग का उद्भव हुआ वह जहाँ एक तरफ उदार निरंकुश राज्य के स्वरूप को प्रकट करता है, वहीं दूसरी तरफ राष्ट्रीय समन्वय का चित्र भी प्रस्तुत करता है । विभिन्न धर्मों एवं जातीय वर्गों के समावेश से मुगलकालीन अमीर वर्ग अस्तित्व में इसके उद्भव का श्रेय अकबर को ही है।

****

अध्ययन काल के प्रमुख तुरानी अमीर एवं उनका सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश

मुगल काल में प्रारम्भ से अन्त तक तूरानी अमीरों की भूमिका महत्वपूर्ण रही। बाबर ने जब हिन्दुस्तान में अपनी सत्ता स्थापित की तब उसके साथ कई तुरानी अमीर भारत आये और यहाँ की शासन व्यवस्था में अपनी गहरी पैठ बनायी। हुमायूँ के शासनकाल में भी इन अमीरों का वर्चस्व बरकरार रहा। यद्यपि समय-समय पर इन अमीरों की स्वार्थलिप्सा भी सामने आयी और मुगल शासकों को उनके द्वारा उत्पन्न समस्याओं का सामना करना पड़ा। अकबर के शासन काल में इन तुरानी अमीरों की शक्ति को संतुलित करने का प्रयास किया गया और कई अन्य जातियों के अमीर शाही सेवा में शामिल हुए। इसके बावजूद कुछ महत्वपूर्ण पदों पर उनकी शक्तिशाली स्थिति बरकरार रही। 1525 से 1605 ई0 के काल के बाद कुछ महत्वपूर्ण अमीरों का विवरण निम्नवत है –

यूनूस खॉं

चगताई खान का वंशज था। बाबर के नाना थे। युनूस खॉं और ईशान बगा खॉं बेस खॉं के बेटे थे। युनूस खॉं की मॉं तीमर बेग के एक तुर्कस्तान

कीपचाक शेख नीरूद्दीन बेग की पुत्री थी। युनूस खाँ की मृत्यु 892 हिजरी सन् 1487 ई0 में हुई थी।[1]

हाफिज मोहम्मद बेग दुल्दाई :

यह मेरे पिता का अमीर था। वीरदी बेग के मर जाने के बाद मेरे पिता के द्वारों की रक्षा करने के लिए भेजा गया। अन्दीजान के बेगों से उसकी नहीं पटी। बाद में समरकन्द चला गया। मेरे काबुल पर अधिकार करने के पहले वह हिन्दुस्तान की तरफ से मक्का के लिए रवाना हुआ था। परन्तु रास्ते में उसकी मृत्यु हो गयी।[2]

---

1. बाबरनामा– रूपान्तरकार केशव प्रसाद ठाकुर, पृ0:31–32
2. वही, पृ0 : 34–35

<u>ख्वाजा हुसेन बेग</u> :

ख्वाजा हुसेन बेग नाम का अमीर था वह अच्छे स्वभाव का था, उसके चरित्र एवं व्यवहार की सभी लोग प्रशंसा करते थे। उस समय एक प्रथा थी जिसके अनुसार शराब पीने के समय तूइयूक नामक एक गाना गाया जाता था। ख्वाजा हुसैन बेग उसे गाना जानता था।[3]

<u>शेख मजीद बेग</u> :

सर्वप्रथम शेख मजीद बेग को बाबर का उलका बनाया गया था। उसका प्रबन्ध बहुत अच्छा था। वह बाबर मिर्जा की आधीनता में भी रह चुका था। मेरे पिता के यहाँ वह सबसे बड़ा अमीर था। वह भयानक रूप से व्यभिचारी था।[4]

---

3. बाबरनामा– रूपान्तरकार केशव प्रसाद ठाकुर, पृ0–35

4. वही

अली मजीद कुचीन :

बाबर के पिता का अमीर । उसने अपने जीवन में दो बार विद्रोह किये। पहले उसने अक्शी में किया था और दूसरी बार उसने ताशकीट में किया था। वह अत्यन्त विश्वासघाती, कृतघ्न और नालायक आदमी था।[5]

हसनबिन याकुब :

वह सदा प्रसन्न रहता था। कामकाज करने में बड़ा तेज था। वह शेर भी सीखता था। लड़ाई में शूरवीर, वाण चलाने में बहुत अभ्यासी था। चौगान बहुत अच्छा खेलता था। मेढ़क पॉद में वह बहुत चतुर था।[6]

कासिमबेग कलीच :

उसके सम्पूर्ण जीवन में मैने उसका विश्वास किया और कभी उसमें कमी नहीं पायी। वह पराक्रमी एवं परिश्रमी था। वह निडर एवं साहसी भी

---

5. बाबरनामा- रूपान्तरकार केशव प्रसाद ठाकुर, 1968, पृ0-35

6. वही

था। वह तलवार चलाने में बहुत होशियार था। यासी के युद्ध में बड़ी वीरता का प्रदर्शन किया। किसी समस्या का वह स्वयं निर्णय करता था। उसकी सूझ–बूझ बहुत अच्छी थी उसके परामर्श बहुत महत्व के होते थे।[7]

बाबा बेग या बाबा कूसी :

बाबा बेग या बाबा कूसी अमीर शेख अली बहादुर का वंशज था। वह अपनी सेना को बहुत व्यवस्थित रूप से रखा करता था और सैनिकों के सामान के प्रति बहुत सावधान रहता था। अपने कर्मचारियों पर कड़ी नजर रखता था वह न तो नमाज पढ़ता था न रोजे रखता था। उसका चरित्र अत्याचार से भरा था।[8]

---

7. बाबरनामा– रूपान्तरकार केशव प्रसाद ठाकुर, 1968, पृ0:35–36

8. वही, पृ0–36

अलीदोस्त तगाई :

अली दोस्त तगाई तमान के बेगों में से था। बाबर ने उसके प्रति अत्यन्त सहानुभूति पूर्ण व्यवहार किया। वह दावा करता था कि मैं पत्थर से बल निकाल सकता हूँ। वह अच्छा शिकारी था। परन्तु चरित्र अच्छा नहीं था। वह लोभी, अत्याचारी, विश्वासघाती, लडाकू था।[9]

वैस लागरी :

वैस लागरी समरकन्द का रहने वाला था। तूकची बोल से सम्बन्धित था। छापामार युद्धों में मेरे साथ था। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता था कि उसके परामर्श बड़े उपयोगी होते थे। वह सूझ-बूझ का आदमी था।[10]

---

9. बाबरनामा- रूपान्तरकार केशव प्रसाद ठाकुर, 1968, पृ0:36-37

10. वही, पृ0-37

<u>मीरगवास तगाई</u>

अली दोस्त का छोटा भाई । बाबर के पिता अपने अन्तिम दिनों में उसका बड़ा विश्वास करने लगे थे। वह सदा प्रसन्न रहता था। उसका मनोरंजन सबको अच्छा लगता था। परन्तु कुछ अर्थों में वह निडर होकर अनाचार भी करता था।[11]

<u>अलीदरवेश खुरासानी</u> :

खुरासान का रहने वाला था। अली दरवेश परिश्रमी और पराक्रमी था। वीरावारान के युद्ध में उसने अपने शौर्य का परिचय दिया था। नस्तालीक भाषा वह बड़ी सुन्दर और साफ लिखता था। वह स्वभाव से लोभी एवं चापलूस भी था।[12]

---

11. बाबरनामा– रूपान्तरकार केशव प्रसाद ठाकुर, 1968, पृ0–37

12. वही, पृ0–38

<u>कम्बर अली मुगुल</u> :

उसे अख्तची कहा जाता था। अमीर पद पर पहुँचने तक वह एक अच्छा कार्यकर्ता था। लेकिन अमीर हो जाने के बाद वह बहुत आलसी, निकम्मा हो गया।[13]

<u>दोस्त वेग</u> :

दोस्त वेग बहुत अच्छा आदमी और शूरबीर था वह लगातार उन्नति करता गया। अमीर के पद पर पहुँचने से पूर्व, घरेलू नौकर की हैसियत से उसने अच्छी सेवायें की। दोस्त बेग की बहादुरी की बहुत सी कहानियां हैं। दोस्त वेग के मर जाने के बाद उसके अधिकार का इलाका उसके छोटे भाई को दे दिया गया।[14]

---

13. बाबरनामा – रूपान्तरकार केशव प्रसाद ठाकुर, 1968, पृ0–38

14 वही, पृ0: 284–85

<u>ख्वाजा कलाँ</u> :

ख्वाजा कलाँ वह तूरानी अमीर था जो हिन्दुस्तान से जाना चाहता था। परन्तु साबर ने उसे रोकने के तमाम प्रयास किये। उसके लिये कहा गया आगरे के खजाने से काबुल, गजनी, खुरासान, कंधार आदि स्थानों को जो धन उपहार भेंट में जाना है ख्वाजा कला लेकर जाय और ठीक तरफ से जिसके लिए जो उपहार है पहुँचा दे। बाबर ने उसको गजनी, गीर्दिज और सुल्तान मसौदी हजारा प्रदान किया। ख्वाजा मीर मीतान को काबुल जाने का आदेश दिया गया। ख्वाजा कला को हिन्दुस्तान का कोहराम नामक क्षेत्र भी दिया गया। परन्तु बाबर के उन उपहारों के बावजूद उसकी हिन्दुस्तान छोड़कर जाने की जिद बाबर को भी आक्रोशित कर दिया।[15]

---

15. बाबरनामा– रूपान्तरकार केशव प्रसाद ठाकुर, 1968, पृ0:372–373

<u>अबुल मआली, मीर शाह</u> :

यह तर्मिल का सैयद था। युवावस्था में हुमायूँ का परिचति हुआ। इसे फर्णद की उपाधि मिली। भारत के आक्रमण में उसने प्रसिद्ध पाई विजय के बाद कुछ अन्य अमीरों के साथ पंजाब भेजा गया। यह हुमायूँ का कृपा पात्र था। अत. अकबर ने अपने दरबार में बुलाया और कृपा के साथ बर्ताव किया। अकबर के राज्यारोहण के समय बैराम खॉ ने इसके अन्दर विद्रोह के लक्षण देखकर राजगद्दी के तीसरे दिन उसे दरबार में कैद कर लाहौर भेज दिया।[16]

<u>बैराम खॉ</u> :

बैराम खॉ आत्मज सैफ अली बेग का जन्म बदख्शॉ में हुआ था। अपने पिता की मृत्यु के बाद वह बल्ख में विद्यार्जन के लिए गया। 16 वर्ष की अवस्था में हुमायूँ की सेना में भर्ती हुआ। कन्नौज के युद्ध में भाग लिया।

---

16. मआसिरूल उमरा भाग–2 अनु0– ब्रजरलदास (सं0–1995),

मालवा में उसकी शेरशाह से भेंट हुई। कुछ दिनों के बाद हुमायूँ के पास पहुँच गया। दोनों फारस के बादशाह के पास पहुँचे जिसने उसे खाँ की उपाधि दी। भारत के पुनर्विजय में हुमायूँ की बहुत सहायता की। 163 हि0 में वह अकबर का संरक्षक नियुक्त किया। अकबर के राज्यारोहण के बाद वह "वकील" और "खानखाना" नियुक्त हुआ। कुछ समय बाद अकबर रूष्ट हो गया और बैराम खाँ ने विद्रोह कर दिया और पराजित हुआ। अकबर ने उसे क्षमा कर दिया और मक्का हज करने के लिए भेज दिया। गुजरात के अन्तर्गत नहर बाबापाटन में मुबारक नामक एक व्यक्ति ने उसे मार डाला। अब्दुर्रहीम खानखाना बैराम के पुत्र थे।[17]

तर्दीबेग तुर्किस्तानी :

हुमायूँ के दरबार का तूरानी अमीर । जब हुमायूँ भारत से भाग रहा था तो यह भी उसके साथ था किन्तु वह सब साथियों से अधिक अस्वाभाविक था। जब

---

17. आइने अकबरी, अनु0-हरिवंशराय शर्मा (1966), पृ0-232

वे लोग राजा मालदेव के राज्य से होकर जा रहे थे तो उसने हुमायूँ को अपना घोड़ा देना अस्वीकार कर दिया था और अमरकोट में उस धन का एक अंश देना अस्वीकार कर दिया। जो उसने सम्राट के दरबार में एकत्र किया था। कन्दहार में उसने सम्राट का साथ छोड़ दिया और अस्करी से मिल गया। जब हुमायूँ भारत आया तो तर्दीवेग ने क्षमा याचना की। हुमायूँ ने क्षमा कर मेवात की जागीर दी। अकबर ने पाँच हजारी बनाया और दिल्ली का सूबेदार नियुक्त किया। वैराम खॉं ने तर्दीबेग की हत्या करा दी। बैराम से अकबर के असन्तुष्ट होने का यह भी एक कारण था।[18]

<u>खान जमान शैवानी</u> :

उसके पिता हैदर सुल्तान उजबक शवानी हुमायूँ के साथ भारत आया और कन्दहार की विजय में बहुत वीरता दिखायी। सुल्तान हैदर के दो पुत्र थे- अली कुली खॉं और बहादुर खॉं । अली कुली खॉं ने काबुल और भारत

---

18. आइने अकबरी, अनु0 -हरिवंश राय शर्मा (1966) पृ0-232

की विजय में बहुत वीरता से युद्ध किया। इसने हेमू को पानीपत के निकट पराजित किया और खाने जमान की उपाधि धारण की। भारत में मुगल की पुर्नप्राप्ति का सबसे अधिक श्रेय बैराम खॉ को है और उसके पश्चात खान जमान को। उसे सम्भल की जागीर मिली और अकबर के शासन के तीसरे वर्ष उसने विद्रोह कर दिया। परन्तु बाद में आत्मसमर्पण कर दिया। 10 वर्ष बाद फिर विद्रोह परन्तु मुनीम खॉ के समझाने पर फिर समर्पण किया। तीसरी बार फिर विद्रोह । अकबर उसे पराजित करने मानिकपुर आया। एक हाथी ने खान जमान को अधमरा कर दिया । एक सैनिक ने उसका सिर काट लिया। वह कवि भी था और सुल्तान उसका उपनाम था।[19]

<u>शमसुद्दीन मुहम्मद अतंग खॉ</u> :

गजनी के एक सरस किसान मीर यार मुहम्मद का पुत्र था। कन्नौज के युद्ध में पराजित होकर हाथी पर गंगा पार किया। वहॉ किनारा बहुत ऊँचा

---

19. आइने अकबरी, अनु0– हरिवंश राय शर्मा (1966), पृ0–232

था। ऊपर चढ़ने के लिए शम्सुद्दीन ने सहारा दिया। हुमायूँ ने उसे अपनी सेवा में रख लिया। उसकी स्त्री को अमरकोट में अकबर को दूध पिलाने के लिए नियुक्त किया। जब हुमायूँ फारस गया तब अकबर का पालन–पोषण शम्सुद्दीन ने किया। अकबर ने उसे खुश आबकी जागीर दी। वह पंजाब का गनर्वर नियुक्त हुआ। उसने बैराम खॉ को जमघट में पराजित किया। इस विजय के उपलक्ष्य में आजम खॉ की उपाधि दी। बाद में वह मुनीम खॉ के स्थान पर वकील पद पर किया। जिससे असन्तुष्ट होकर हत्या करवा दिया।[20]

मिर्जा सुलेमान :

साधारणतया यह वालिये बदरू खॉ की उपाधि से विख्यात थे। जब बदख्शॉ इनके हाथ से निकल गया तो यह हिन्दुस्तान चले आये और अकबर ने इन्हें पॉच हजारी बना दिया।[21]

शेख अबुल फैज फैजी फैयाजी :

शेख मुबारक नागौरी का बड़ा पुत्र था। जो अपने समय के विद्वानों में परिश्रम तथा धर्म भीरूता के लिए प्रसिद्ध था। उसके पूर्णरूपेण यमन प्रान्त

20 आइने अकबरी अनु0 हरिवंश राय शर्मा (1966) पृ0–232

के साधुओं से अलग होकर संसार भ्रमण करने लगा। कहते हैं अन्त में अपने पुत्रों के परिश्रम से इसे मन्सब मिला। आखिरी अवस्था में आँख की कमजोरी के कारण 1513 ई0 में लाहौर में मृत्यु हो गयी। [22]

अबू तुराब गुजराती मीर :

यह शीराज का सलामी सैयद था। अकबर के गुजरात विजय के समय सन्निकट आया तथा राजभक्ति प्रकट हुई और उस पर कृपाएं हुई। तब से उस पर बराबर कृपा बनी रही। 1577 ई0 में हज के यात्रियों का मुखिया बनाया गया और पाँच लाख रूपये तथा दस हजार खिलअत उसे मक्का के भिखमंगे को बाँटने के लिए दिये गये। अकबर के काल में महत्वपूर्ण पदों पर था। [23]

---

22. मआसिब–उमरा अनु0–ब्रजरत्न दास, (सं0 1993) पृ0:67–71

23 वही, (सं0 1995) पृ0:93–96

अबुल हन तुर्बती ख्वनुस्सल्तनत ख्वाजा :

खुरासान में तुर्वत जिले में पैदा हुआ था। अकबर के समय ख्वाजा शाहजादा दानियाल की सेवा में आया और उसका वजीर तथा दक्षिण का दीवान नियुक्त हुआ। तथा जहाँगीर के समय दक्षिण में बुला लिया गया।[24]

शेख अब्दुन्नवी सद्र :

यह गंगोह के शेख अब्दुल कुद्दूस का पौत्र था। शेख अब्दुन्नवी साहित्यिक विषयों के विद्वानों में अपने समय में अग्रणी था और हदीस के जानने में भी प्रसिद्ध था। चिरितया मत का प्रतिपादक था। अकबर के काल में सदरूस्सुदुर नियुक्ति हुआ। बादशाह से इसकी मित्रता हो गयी।[25]

अब्दुल्ला अंसारी मखदूमुल मुल्क मुल्ला :

इनके पूर्वजों ने मुल्तान से सुल्तानपुर आकर इसे अपना निवास स्थान बनाया। मौलाना अब्दुल कादिर सरहिन्दी से अब्दुल्ला ने पढ़ा और न्याय तथा

---

24. म0उ0भाग-2 अनु0 ब्रजरत्नदास (सं0 1995), पृ0-90-92

25. वही, पृ0: 100-03

धर्मशास्त्र का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। इसकी विद्वता सम्पूर्ण संसार में फैली। यह शेख सलीम चिश्ती का अनुयायी था। अकबर के अटक की ओर जाते समय उसकी सेवा की इसे सरहिन्द में कुछ भूमि इसके पुत्रों के नाम मदद में आरा में मिल गयी। इसकी प्रतिष्ठा अफगानों के समय से अकबर के समय तक होती आयी थी और वह अपने न्याय तथा कार्यो के अनुभव के लिए प्रसिद्ध था और उसकी बुद्धिमता का वृतान्त चारों तरफ फैल गया। इससे मक्का के मुफ्ती शेख इब्नहतर ने आगे बढ़कर स्वागत किया तथा असमय में उसके लिए काबा का द्वार खुलवा दिया। [26]

अली बेग अकबर शाही, मिर्जा :

इसका जन्म तथा पालन बदख्शाँ में हुआ था और यह अच्छे गुणों से विभूषित था। जब यह भारत आया तब इसकी राजभक्ति का सिक्का अकबर के हृदय में जम गया और यह अकबरशाही की पदवी से विभूषित हुआ। दक्षिण

---

26. म0उ0भाग–2 अनु0 ब्रजरत्न दास (सं0 1995) पृ0:128–132

की चढ़ाई में यह शाहजादा मुराद के साथ था। दक्षिण में काफी दिन रहा। जहाँगीर के काल में चार हजारी मंसब के साथ कश्मीर का अध्यक्ष हुआ। बाद भी अवध की जागीर मिली।[27]

अहमद बेग खाँ काबूली :

यह चगताई था और इसके पूर्वज वंश परम्परा से तैमूर के वंश की सेवा करते आये थे। इसका पूर्वज मीर गियासुद्दीन तरर्खान तैमूर का एक सरदार था। यह मिर्जा मुहम्मद हकीम की सेवा में था। मिर्जा की मृत्यु पर यह अकबर के दरबार में आया और इसे सात सदी मंसब मिला। जब कश्मीर मुहम्मद युसूफ खाँ रिजवी से ले लिया गया और भिन्न-भिन्न जागीरदारों में बाँट दिया गया तब यह उनमें मुखिया था। जहाँगीर के काल में यह बड़ा अफसर हो गया और तीन हजारी मंसब के साथ खाँ जी पदवी पायी। यह कश्मीर का प्रांताध्यक्ष भी नियत हुआ था।[28]

---

27. म0उ0भाग-2 अनु0 ब्रजरत्न दास (सं0 1995) पृ0: 296-297

28. वही, पृ0- 263-64

सईद खाँ :

इसको सईद खाँ चगताई भी कहते हैं। कुछ समय तक मुल्तान का राजपाठ रहा और फिर राजकुमार दानवान का अतालीक नियुक्ति हुआ। फिर पंजाब का राज्यपाल और बंगाल और बिहार का सूबेदार था।[29]

मिर्जा युसूफ खाँ :

यह मशहद का सैयद था और अकबर इसे बहुत पसन्द करता था। कश्मीर का सूबेदार नियुक्ति हुआ। यह बहुत जनप्रिय शासक था। तोपखाना का दरोगा भी था। वह राजकुमार मुराद का अटालीक था। मुराद की मृत्यु के उपरान्त उसने दक्षिण के युद्धों और अहमदाबाद की विजय में बड़ी बीरता दिखायी।[30]

---

29. वही, आइने अकबरी अनु0—हरिवंश राय शर्मा (1966) पृ0—235

30. वही, पृ0—237

<u>मुजफ्फरे खाँ तुरबती</u> :

तुरबती खुरासान की एक जनजाति का नाम है। इसका पूरा नाम ख्वाजा मुजपफर अली खॉ तुरबती है। यह बैराम का दीवान था। अकबर ने से इसे परसरोर परगना का आमिल नियुक्त किया। फिर साम्राज्य का दीवान। उस समय राजा टोडरमल की उपाधि दी गयी। आगरा का वकील बनाया गया उसे "जुमल तुस्मुल्वा" की उपाधि दी गयी। आगरा की जामा मस्जिद इसी की बनवायी हुई है। इसलिए लोग आज तक उसको नवाब मुजपफर खॉ की मस्जिद या काजी मस्जिद कहते हैं।[31]

---

31. वही, आइने अकबरी अनु0- हरिवंश राय शर्मा, (1966) पृ0-237

मुस्लिम उमरा वर्ग की सामाजिक जीवन में भूमिका

भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना के समय मुसलमानों को इस देश में आये हुए लगभग आठ सौ वर्ष व्यतीत हो चुके थे और उनका समाज पूर्णतः आन्तरिक एवं वाह्य परिवर्तनों के साथ विकसित हो चुका था। इस काल में मुस्लिम उमरा वर्ग विशेष जीवन शैली एवं सामाजिक भूमिकाओं के प्रति काफी संवेदनशील था। उनका समाज पूर्णतः आन्तरिक व वाह्य परिवर्तनों के साथ विकसित हो चुका था।[32]

प्रत्येक अमीर की "अर्द्ध स्वायत्त सरकार" होती थी जिसमें उसको सैनिक टुकड़ी, अफसर और ऊमला, घरेलू कर्मचारी, हरम, नौकर चाकर और अश्रित वर्ग होता था।[33] इस प्रकार की सभी सरकारें अपने आपमें स्वतंत्र इकाइयां

---

32 राधेश्याम, मध्यकालीन प्रशासन, समाज एवं संस्कृति, (2000) पृ0–207

33. हरिश्चन्द्र, मध्यकालीन भारत, खण्ड–2, पृ0–75

होती थी, क्योंकि शासक के प्रति अमीर के सैनिक या अन्य प्रकार की दायित्वों की पूर्ति के बाद बची आय को खर्च करने के लिए स्वतंत्र होता था।[34]

मुगल बादशाह की अपनी एक विशेष जीवन शैली थी, अधिकांश अमीर उसी का अनुसरण करते थे।

<u>तुलादान</u> :

कल्याण के लिए तथा दीनों को दान देने के अवसर के रूप में सम्राट वर्ष में दो बार तौले जाते थे।[35] विभिन्न वस्तुएं तराजू में रखी जाती थी। सम्राट के सौर जन्म आबान मास का प्रथम दिन बादशाह बारह वस्तुओं से

---

34 हरिश्चन्द्र, मध्यकालीन भारत, खण्ड–2, पृ0–75

35 आइने अकबरी, अनु0, हरिवंश राय शर्मा, पृ0–198

बारह बार तौले जाते थे।[36] सोना, पारा, रेशम, सुगन्ध, तांबा, रूहेतूतितया, औषधि, घी, लोहा, चावल की खीर, सप्तान्न, नमक आदि से तौल होती थी। इसके अतिरिक्त सम्राट की आयु के अनुसार उसी संख्या में भेड़े, बकरिया और मुर्गिया उन गरीब लोगों को दी जाती थी, जो उन्हें पालते थे।[37]

दूसरी बार रजब की पांचवी तिथि को महाराज आठ वस्तुओं अर्थात् चॉदी, रांगा, वस्त्र, सीसा, मेवा, शीरीनी, कड़ुवा तेल और सब्जी से तौले जाते थे। दोनों अवसरों पर सालगिरह का उत्सव मनाया जाता था।[38] राज कुमार तथा बादशाह के पौत्र साल में एक बार तौले जाते थे। इस व्यवस्था के लिए एक पृथक

---

36 आइने अकबरी, अनु0 हरिवंश राय शर्मा, पृ0–198

37 वही

38 वही

लेखाधिकारी तथा खजान्ची नियुक्त किये जाते थे जिससे इस विभाग के व्यय में दुव्यर्वस्था न हो।[39] अमीर तथा प्रान्तीय शासक अपनी हैसियत के अनुसार इस प्रथा का अनुसरण करते थे।

भोज तथा उत्सव :

शासक अतीत काल की सुन्दर रीतियों पर ध्यान देते थे तथा रीतियों की अच्छाई और बुराई पर विचार करते थे। वह विभिन्न श्रेणियों के लोगों के पालन पोषण की दृष्टि से उन्हें उपहार देने तथा भोज देने के अवसर आयोजित करते थे।[40]इस दृष्टि से इस काल में अनेक उत्सवों को मनाया जाता था। जश्न नौरोजी या नौरोज का उत्सव उस दिन प्रारम्भ होता था जब सूर्य अपने वैभव के साथ मेष राशि में प्रवेश करता है। इस अवधि में दो दिन विशेष पर्व मनाये

---

39 वही, पृ0–199 तथा पादिशाह नामा (प्रथम भाग) पृ0–243

40 आइने अकबरी, पृ0–202

जाते थे ओर द्रव्य तथा विभिन्न बहुमूल्य वस्तुएं दान में दी जाती थी।[41] इसके अतिरिक्त प्रमुख त्योहारों में ईदुल फितर, ईद–उद–जुहा, शबे–बरात तथा मोहर्रम के त्योहार होते थे। मुसलमान समाज में संस्कारों का भी अत्यधिक महत्व था। स्त्री के गर्भाधान करने के सातवें मास में उसकी गोद भरी जाती थी तथा उसे नये वस्त्र देकर खुशिया मनायी जाती थी। सन्तान की उत्पत्ति पर सर्वप्रथम उसका मुण्डन या अकीका होता था, यदि बालक होता था तो उसका खतना संस्कार होता था। चार वर्ष चार माह चार दिन की आयु में शिशु विस्मिल्लाह हजानी होती थी। इसी समय उसे अक्षर बोध कराया जाता था। इन सब उत्सवों पर मुगल अमीर अपनी स्थिति के अनुसार जश्न मनाते थे और उपहार वितरित करते थे।[42]

---

41 आइने अकबरी, पृ0–202

42 राधेश्याम, पृ0–213

बालक का 14–15 वर्ष तथा बालिका का 12–13 वर्ष की आयु में विवाह करने की प्रथा थी। विवाह का प्रस्ताव कन्या पक्ष की ओर से न आकर वर पक्ष की ओर से आता था। मुस्लिमों में एक ही माँ की सान्ततियों में विवाह सम्भव नहीं था।[43] विवाह के उपलक्ष्य पर दोनों ही पक्षों में खुशियां मनायी जाती थी और यथा योग्य दान पुण्य किया जाता था।

मृत्यु पर शव के समीप उसकी आत्मा की शान्ति के लिए काजी, कुरान पाठ करता था। मुगल अमीरों के विशेष काजी होते थे। जो इस कार्य को संपादित करते थे। तदुपरान्त शव को स्वच्छ सफेद कपड़े में लपेट कर उसे कब्रिस्तान में ले जाकर दफनाया जाता था। दिवंगत व्यक्ति की शान्ति के लिए उसके पारिवारिक सदस्य तथा सगे सम्बन्धी एकत्र होते थे। इस प्रकार विधि विधान से यह संस्कार मुगल कालीन अमीरों में सम्पन्न किये जाते थे।[44]

---

43 आइने अकबरी, पृ0–203

44 राधेश्याम, पृ0–213

मनोरंजन के साधन :

मुस्लिम समाज में मनोरंजन के विविध साधन थे, जो उनकी आय, आर्थिक दशा तथा मनोवृत्ति के हिसाब से थे। सम्राट व शाही परिवार के सदस्यों की रूचि आखेट व शतरंज खेलने, सैर सपाटे पर जाने, घुड़सवारी, तीरन्दाजी व नौका बिहार करने, संगीत सुनने व नृत्य देखने, उत्तम कविताओं तथा श्रेष्ठ कहानियां सुनने में थी। मुगलकालीन उमरा वर्ग मनोरंजन करने के लिए शाही परिवार का अनुकरण करता था। [45]

शाही परिवार तथा अमीरों द्वारा आखेट में मुख्य रूप से सिंह का आखेट, हाथी का आखेट, चीतों का शिकार, सियार, गोरा का शिकार, हिरण का हिरण से शिकार तथा पक्षियों का शिकार शामल होता था।[46]

---

45 आइने अकबरी, पृ0: 208–229

46 वही

शतरंज के अलावा शाही परिवार के सदस्यों की रूचि चौगान के खेल, इश्कबाजी (कबूतर उड़ाने), चौपड़ बाजी या चौसर बाजी, चन्दन–मन्दन का खेल, कार्ड (गुंजफा) आदि मनोरंजन के साधन प्रचलित थे।[47] मुगल कालीन उमरा वर्ग इन मनोरंजन के साधनों का जमकर प्रयोग करता था और बादशाह की नकल करने की कोशिश करते थे। मुगल काल में अमीरों के बीच मनोरंजन के वे नये–नये साधन जो शासक ईजात करता था उसे ग्रहण करने की होड़ सी रहती थी।

वेशभूषा :

मुस्लिम अमीरों की वेशभूषा हिन्दू अमीरों से भिन्न थी। सम्राट का परिधान लाहौर, आगरा, फतेहपुर सीकरी, अहमदाबाद के शाही कारखानों में तैयार किया जाता था।[48] बादशाह के ध्यान देने से तरह–तरह के वस्त्रों का

---

47 आइने अकबरी, पृ0: 208–229

48 राधेश्याम, पृ0–211, तथा आइने अकबरी, पृ0–90

निर्माण होने लगा था। इस काल में ईरानी, यूरोपीय तथा मंगोल वस्त्रों की अधिकता हो गयी थी।[49] इन परिधानों में तकौचियां, दोतही, शाह अजदा, सुजनी, कलपी, कना, गदर, फुर्जी, फरगुल, चकमन, शलवार, जामा, इत्यादि प्रमुख थे। इन वस्त्रों को ऋतु के अनुसार पहना जाता था।[50] अमीरों की वेशभूषा उनके पद व प्रतिष्ठा के अनुरूप हुआ करती थी। सिर में टोपी या पगड़ी, शरीर पर कबा, लबादा या जामा तथा कमर के नीचे के भाग को ढकने के लिए पजामा या सलवार पहना करते थे।[51] मुगल सम्राट की ओर से उन्हें बहुमूल्य खिलअते, ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतु की खिलअते उपहार स्वरूप दी जाती थी। जिन्हें वे दरबार में आते समय धारण किया करते थे। वे ढीला कुर्ता व पैजामें भी पहना करते थे।[52]

---

49 आइने अकबरी, पृ0-90

50 वही, पृ0: 90-110

51 वही तथा राधेश्याम, पृ0-211

52 आइने अकबरी, पृ0: 90-110

इस काल के समकालीन ऐतिहासिक ग्रन्थों में अनेक अन्य किस्म के परिधानों का उल्लेख मिलता है। जैसे कि बांहदार जैकेट, बिना बांह की जैकेट, पटका रेशम की पेटी, विभिन्न प्रकार की टोपियां, पगड़ियां, इत्यादि। सूफी सन्त या तो निर्वस्त्र रहते थे या न्यूनतम वस्त्र पहनते थे।

खान–पान :

मुगल काल में मुसलमानों का खान–पान व उनकी व्यक्तिगत रूचि जलवायु तथा अमुक प्रदेश में उपलब्ध वस्तुओं तथा उनकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता था। सम्राट उसके परिवार के सदस्य तथा उमरा वर्ग के सदस्यों का खान–पान अन्य वर्गों की तुलना में बिल्कुल भिन्न था। उनके भोजन में मांसाहारी तथा शाकाहारी दोनों प्रकार के व्यंजन होते थे। बाबर ने अपनी मदिरा गोष्ठियों का रोचक विवरण अपनी आत्मकथा बाबरनामा में किया है।[53] प्रीतभोजों में, भुनी हुई भेंड़े, कोटियां, फल तथा शरबत दिये जाते थे।[54]

---

53. बाबरनामा, पृ0–326

54. राधेश्याम, पृ0–210

अबुल फजल ने आइने अकबरी में शाही पाठशाला में पकाये जाने वाले व्यंजनों, पकाने की विधियों तथा उसकी व्यवस्था का सविस्तार वर्णन किया है। उसने सूफियाना या मांस रहित व्यंजनों, मांसाहारी तथा मसालों के साथ पकाये जाने वाले मांसाहारी व्यंजनों का उल्लेख किया है।[55] उसकी सूची में जर्द, बिरियानी, जुरक (खिचड़ी), शीकीबिरंज, कूली, चिरवी, बन्दी जन, पहित, साग, हलवा, सुफियाना या मांस रहित व्यंजनों में काबुली, हुन्दविरियानी, कीमा पुला, शुल्ला बुगरा, कीमा शोरवा, हरीस्म, कश्क, हलीम, कुतव इत्यादि मांस व मसालों के साथ पकाये गये व्यंजनों में बिरियानी, यक्नी, पुल्मा, कबाब, मुसल्लम, मुतजंना, दमपुख्ता, कलिया, मुलगुवा, इत्यादि का उल्लेख मिलता है।[56]

---

55. आइने अकबरी, पृ0: 62–66

56. वही।

इस काल में विभिन्न प्रकार की रोटियों के बारे में जानकारी मिलती है। बड़ी रोटी, छोटी चपाती आदि का विवरण आइने अकबरी में दिया गया है।[57]

शाही भोजन में अचार, फल, मेवा का भी महत्वपूर्ण स्थान था। आम, नीबू, गाजर, लहसुन, प्याज तथा अनेक फलों से तैयार किये गये, मीठे व खट्टे अचार, फलों में खरबूज, सेब, अनार, खजूर, आलूचे, आम, तरबूज, अंगूर, खुबानी, अंजीर, आदि तथा सूखे मेवों में बादाम, पिस्ता, चिरौंजी, मखाने इत्यादि होते थे।[58] साग सब्जियों में परवल, लौकी, कद्दू, करेला, ककूरा, कचालू, सूरज, मूली, गाजर, सिंघाड़ा, कसेरू इत्यादि प्रमुख सब्जियां थीं।[59]

---

57. आइने अकबरी, पृ0: 62-66

58. वही, पृ0: 73-77

59 वही

पेय पदार्थों में देशी– विदेशी मदिरा, फूलों के शरबत, सादा शरबत, मुख्य रूप से उपयोग में लाया जाता था। सुगन्धित पदार्थों, सुपाड़ी, कत्थे व कपूर के साथ पान खाना व खिलाना इस काल में एक आम रिवाज हो गया था।[60] मुगल सम्राटों की रूचि के अनुसार शाही पाठशाला में व्यंजन बना करते थे। वे खान–पान के बहुत शौकीन थे। इस सम्बन्ध में वे सम्राट का जहाँ तक सम्भव हो सकता था, अनुकरण करते थे। मुगल सम्राटों के भोजन में परोसे जाने वाले षटरस व्यंजनों से अमीर अनभिज्ञ नहीं थे। अतएव उनकी पाठशालाओं में भी उसी प्रकार के भोजन उनके व उनके परिवार के सदस्यों के लिए बना करता था।

<u>हरम</u> :

हरम अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है "पुण्य स्थान"। समय के साथ–साथ कुलीन वर्गों के सदस्यों की स्त्रियों के निवास स्थान को मुसलमान देशों में हरम कहा जाने लगा। भारत में जहाँ शासकों की स्त्रियाँ रहती थी, उसे

---

60. राधेश्याम, पृ0– 211

रविनास या अन्त:पुर कहते थे।[61] मुगलकालीन शासकों की जहाँ राजधानी थी वहाँ उनके हरम होते थे।यही स्थित प्रान्तीय शासकों की भी थी।

मुगल शासक बाबर के समय हरम की महिलाएं पर्दा नहीं करती थी। वे उसके साथ सैर-सपाटे, यात्राओं तथा अभियानों पर जाती थी। परगना, समरकन्द व निष्कासन के काल में बाबर का राजनीतिक जीवन बराबर अस्थिर रहा। अतएव उसके परिवार की महिलाओं को कष्टप्रद जीवन व्यतीत करना पड़ा। काबुल विजित करने के उपरान्त उसके जीवन में प्रथम बार स्थिरता आयी। उसके पिता व माता के परिवार की अनेक स्त्रियों ने काबुल में शरण ली।[62] उनके आगमन से बाबर के हरम में स्त्रियों की संख्या में वृद्धि हुई।

---

61 राधेश्याम, पृ0–217

62 वही, पृ0–219

हुमायूँ अपने हरम की प्रत्येक महिलाओं को समय देता था। चौसा के युद्ध केसमय उसके साथ जो महिलाएं थी, उनमें से अनेक अफगानों के द्वारा या तो बन्दी बना ली गयी या मार डाली गयी। कन्नौज के युद्ध के बाद उसका हरम तितर-बितर हो गया था।[63] हुमायू के जीवन के अन्तिम कुछ वर्ष संघर्षमय होने के कारण हरम की महिलाओं का जीवन भी कष्टप्रद था।

अकबर के काल में हरम की अधिकांश महिलाएं काबुल में थी। जब वे हिन्दुस्तान पहुँची तो अकबर का पारिवारिक जीवन प्रारम्भ हुआ। अकबर के हरम में ईरानी, तूरानी, अरबी, राजपूत, उजबेकी आदि जाति की स्त्रियाँ थी।[64] इनके रखने की व्यवस्था करना सम्राट व प्रशासन का उत्तरदायित्व था। अकबर ने उनके रहने की व्यवस्था आगरा, फतेहपुर सीकरी, लाहौर के दुर्गों में निर्मित

---

63. राधेश्याम, पृ0. 219

64 आईने अकबरी, पृ0: 51-54

भवनों में किया था।[65] यह महल भव्य, विशाल एवं सुरक्षित होते थे। बाहर से हरम का प्रबन्ध केन्द्रीय प्रशासन या घरेलू विभाग करता था। हरम के अन्दर की व्यवस्था विभिन्न विभागों के बीच वितरित थी। अन्दर की व्यवस्था महिला अधिकारियों व कर्मचारियों के हॉथों में होती थी।[66]

शासक की ही भॉति तात्कालिक अमीर भी अपने हरम स्थापित करते थे यद्यपि उनके हरमों की भव्यता सम्राट के हरम से कम होती थी, लेकिन जहॉ तक हो सकता था, वे सम्राट का अनुसरण करने की पूरी कोशिश करते थे।

---

65. आइने अकबरी, पृ0: 51-54

66 वही

उपसंहार

मध्यकाल में शासक की शक्ति का मुख्य स्रोत अमीर थे। अमीर ही उसकी शक्ति का आधार स्तम्भ ो और अपनी सार्वभौम शक्ति हेतु शासक को अपने अमीरों पर ही नर्भर रहना पड़ता था। अमीरों से ही उसकी नौकरशाही की संरचना होती थी तथा वे ही उसके सैनिक व असैनक दायित्व का निर्वहन करते ो। इस शोध ग्रन्थ में विभिन्न शासकों के शासनकाल में उमरा वर्ग की स्थिति उसकी कार्य विधि तथा उसके क्रमिक विकास एवं अवनति के स्वरूप को चित्रित किया गया है।

अध्ययन काल 1525–1605 ई0 होने के कारण मुगल शासक बाबर, हुमायूँ तथा अकबर के शासनकाल के अभिजात्य वर्ग (तूरानी) को ही तूरानी अमीरों का अध्ययन करने तथा बाबर का शासन प्रारम्भ होने के पूर्व तत्कालीन हिन्दुस्तान के इस वर्ग का स्वरूप तथा उसकी जटिलता को दर्शाने के लिए प्रथम अध्याय मुगलों से पूर्व सामन्तों की "स्थिति" का अध्ययन किया गया है।

सल्तनत काल के प्रारम्भ से ही उमरा राज्य के आधार स्तम्भ थे। सुयोग्य एवं कर्तव्य परायण अमीरों का होना सुल्तान तथा राज्य के वैभव

के लिए आवश्यक था। निःसंदेह सल्तनत के विकास और उसके सुदृढ़ीकरण में अमीरों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। राज्य के प्रति समर्पित अमीर जो गुलाम वंश के सुल्तानों के वर्ग से ही सम्बद्ध थे, राज्य में अपना विशिष्ट स्थान बनाये हुए थे तथा जन साधारण की तरह सुल्तान की इच्छा के मातहत नहीं थे। एक सुसंगठित दल के रूप में इनका उद्भव इल्तुतमिश के शासन काल में हुआ, जिसे चालीस अमीरों का दल "चिहलगानी" के नाम से जाना जाता है।

इल्तुतमिश की कार्य दक्षता व जागरूकता ने अमीरों को नियंत्रित रखा। किन्तु 1236 ई0 में उसकी मृत्यु के पश्चात अमीरों के बीच सत्ता प्राप्ति के लिए प्रतिस्पर्धा प्रारम्भ हो गयी। इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद उसके चिहलगानी गुलाम शक्तिशाली बन बैठे। चालीस गुलामों में से प्रत्येक एक क्षेत्र पर अधिकार जमाये हुआ था। उनमें से कोई भी एक दूसरे के आगे न तो सिर झुकाता था और न ही दूसरे का आधिपत्य स्वीकार करता था। वे चाहते थे कि सबका अधिकार इक्ता प्रभुत्व एवं वैभव एक दूसरे के बराबर रहे। प्रत्येक अमीर अपने शुभचिन्तक को गद्दी पर बैठाकर राजसत्ता पर नियंत्रण करने का आकांक्षी था। इस प्रकार अलाउद्दीन खिल्जी के सत्ता में आने से पूर्व ही अमीरों की शक्ति एवं उनके

संगठन का उद्भव प्रारम्भ हो गया था। वस्तुतः इल्तुतमिश के काल के अमीरों के स्वच्छन्द व्यवहार एवं कार्यों से राज्य को जो हानि हो रही थी, उसके प्रति सुल्तान गयासुद्दीन बल्बन पूर्ण जागरूक था। यद्यपि बल्बन ने सुल्तान बनने तक चहलगानी अमीरों के संगठन व प्रभाव को योजनाबद्ध तरीके से कुचल दिया था, लेकिन उसने अमीरों के पद एवं प्रतिष्ठा की महत्ता को समुचित स्थान दिया। बल्बन ने अपने पुत्र खाने शहीद को वसीयत देते समय इस बात से सतर्क किया था कि कोई भी साम्राज्य अमीरों के सहयोग के बिना फलीभूत नहीं हो सकता है। साथ ही उसने उसे यह भी आगाह किया कि दूसरों की आलोचना करने वालों तथा अन्य लोगों के कार्यों में त्रुटियां ढूढने वालों को अपने पास न फटकने दे।इस प्रकार बल्बन अमीरों के विकास अथवा उनके अस्तित्व का विरोधी नहीं था। किन्तु अमीरों के सामूहिक संगठन का पनपना वह राज्य हित विरोधी मानता था। इस नियम का उसने अपने राज्य काल में पालन किया। इस प्रकार एक अस्थायी अवधि तक अमीरों की शक्ति पर अंकुश लगा सका परन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात वे राज सत्ता पर पुनः हावी हो गये।

सिहांसनारूढ़ होने के बाद अलाउद्दीन ने विदेशी अमीरों के आतंक पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से भारतीय अमीरों को शासक वर्ग में शामिल किया तथा उन्हें उच्च पद प्रदान किये। उसके उत्तराधिकारी ने भी इसी नीति का अनुकरण किया। वस्तुतः दरबार में भारतीय अमीरों के दल के अतिवादी आचरण तथा खुशरों खॉ एवं उसके सहयोगियों के व्यवहार ने सामान्य मुस्लिम मानस को कष्ट दियसा, जो भारतीय मुस्लिम प्रधानता से आतंकित होकर उनके विरूद्ध कार्य करने लगे।

इन परिस्थितियों ने गियासुद्दीन तुगलक को अपना राज्य स्थापित करने का अवसर प्रदान कर दिया। उसने महसूस किया कि विदेशी तुर्क तथा भारतीय अमीर दोनों ही सत्ता के भूखे हैं और उसने भारत के बाहर से अमीरों को भर्ती करने के विचार को कार्य रूप में परिणति किया। अपनी इस नीति के परिपालन में गियासुद्दीन तुगलक इस सीमा तक बढ़ गया कि उसने सामान्य विदेशियों को भी राज्य के महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त कर दिया। भारत आने वाले ये अमीर "आइज्जा" के नाम से जाने जाते थे।

इन विदेशी अमीरों की स्वार्थ लिप्सा तथा धन लोलुपता की प्रवृत्ति ने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक को अमीरों के प्रति नीति पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर कर दिया। विदेशी मुसलमानों तथा भारतीय अमीरों के उदाहरण तथा अनुभव ने मुहम्मद बिन तुगलक के समक्ष एक ही विकल्प छोड़ा था कि वह धर्म व नस्ल की परवाह किये बगैर हिन्दुस्तान के सामान्य लोगों की योग्यता का परीक्षण करें। इस प्रकार अपे शासन काल के उत्तरार्द्ध में मुहम्मद बिन तुगलक ने अपने प्रशासन को प्रजातांत्रिक स्वरूप प्रदान किया। राज्य के उच्चतम सैनिक व प्रशासनिक पद हिन्दुस्तान की प्रत्येक जाति के लिए खुले थे तथा योग्यता पद प्राप्ति का प्रमुख आधार बन गयी थी।

मुहम्मद तुगलक की इस नीति के शिकार अमीरों को यद्यपि फिरोज के शासन काल में सांत्वना प्राप्त हुई, तथापि अमीर वर्ग का रोष किसी न किसी रूप में परिलक्षित होता रहा।

अमीर वर्ग एवं सुल्तानों के मध्य सेवक व शासक के सम्बन्धों की कड़ी किसी कानूनी आधार पर निहित न होकर सुल्तान की सैनिक एवं संगठन

शक्ति पर निर्भर थी। सुल्तान के निर्बल होने पर मुक्तों द्वारा अपने को स्वतंत्र करना तथा अधिक शक्ति प्राप्त करने के लिए राज्य – विरोधी कार्य करना तत्कालीन राजनीति का स्वाभाविक गुण था। वस्तुतः सुल्तानों ने अमीरों के इस चरित्र व आकांक्षाओं पर अंकुश रखने के लिए प्रशासनिक शक्ति का विकेन्द्रीकरण करना प्रारम्भ किया। इसके अन्तर्गत सैनिक प्रशासन का दायित्व दीवान के अधिकार क्षेत्र से बाहर करना प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था। अलाउद्दीन खलजी की साम्राज्यवादी व्यवस्था का महत्वपूर्ण गुण उस व्यवस्था का निर्माण था, जिसके अन्तर्गत राज्य की नीतियों को कार्य रूप देने के लिए नौकरशाही की रचना सुल्तान करता था। इस काल के पश्चात् दो अफगान शासकों के काल को छोड़कर, राज्य अधिकारियों की स्थिति शासक के सम्बन्ध में सेवक के रूप में बनी रही न कि शासक के भागीदार के रूप में। सभी अधिकारी चाहे वह दिल्ली सल्तनत के खान, मलिक व अमीर हों, अथवा मुगल साम्राज्य का मंसबदार, शाही सत्ता के पैदाइशी होते थे।

सल्तान बहलोल लोदी के शासनकाल में अफगान अमीर वर्ग का उदय दिल्ली सल्तनत की राजनीति में एक नवीन दौर का प्रारम्भ होना था।

अफगान अमीर वर्ग जो लगभग पचहत्तर वर्षों (1451 – 1526) तक शासकीय अमीर वर्ग के रूप में विद्यमान रहा, अपने स्वरूप, संरचना एवं संगठन में तुर्क एवं मुगल अमीर वर्ग से भिन्न था। अफगान अमीरों में अपनी परम्परा एवं जनजातीय पद्धति के प्रति लगाव सर्वसत्ता सम्पन्न निरंकुश शासक के अस्तित्व के विपरीत थे। यद्यपि वे अफगान सरदार जो सदियों से भारत में आ बसे थे उन्होंने निरंकुश शासक की व्यवस्था के साथ फिर भी आत्मसात् कर लिया था। तथापि बहलोल के शासन काल में आने वाले "रोह" अफगान सरदार इस व्यवस्था के साथ मेल नहीं कर सके। चूँकि सुल्तान बहलोल की सत्ता नव अफगान सरदारों पर निर्भर थी, अतः उसे अफगान परम्परा को सम्मान देना पड़ा। इसमें कोई सन्देह नहीं की सुल्तान बहलोल के शासनकाल में लोदी, फूरमुली, नूहानी तथा सेरवानी कबीलों के अफगान सरदारों को उच्च प्रतिष्ठा एवं लाभदायक इक्ता प्राप्त हुए तथा इन सरदारों ने पूर्ववत् अमीर वर्ग का स्थन लिया। नीयाजी एवं सूर कबीलों के अफगानों को प्रमुख पदों से अलग रखा गया। वस्तुतः यह मानना ठीक नहीं होगा कि बहलोल के शासन काल में अमीर वर्ग में केवल अफगान ही थे। शासक वग्र में अफगानों के अतिरिक्त भारतीय मुसलमान एवं हिन्दू शासकों का भी समावेश था। उन पुराने अमीरों को जिन्होंने सुल्तान की स्वामिभक्ति स्वीकार कर ली

थी, उनके इक्ताओं से पदच्युत नहीं किया गया। प्रमुख गैर अफगान अमीरों में अहमद खॉं, मेवाती, अलि खॉं तुर्क, अहमद खॉं शामी, मीर–मुबारिज खॉं के नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त राय प्रताप, राय करण, राय नरसिंह देव आदि हिन्दू शंसक सुल्तान बहलोल लोदी के विश्वास पात्र बने रहे। सामयिक ग्रन्थों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सुल्तान बहलोल का अफगान सरदारों की शक्ति पर निर्भर रहना, अमीर वर्ग की संरचना में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका एवं बाहुल्य को स्पष्ट करता है।

अफगान अमीर वर्ग के गठन एवं स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन सिकन्दर लोदी के शासनकाल में देखने को मिलता है, जब अमीर वर्ग का गठन जनजातीय आधार पर एवं संकुचित धारणाओं से हटकर बृहद दृष्टिकोंण पर आधारित किया गया। सिकन्दर लोदी यह भली भॉंति जानता था कि अफगान बाहुल्यता प्रधान तथा जनजातीय आधार पर स्थापित राज्य भारतीय परिस्थितियों में कारगार नहीं हो सकता। साथ ही राजनय के प्रति सिकन्दर के दृष्टिकोंण ने अमीर वर्ग की संरचना एवं राज्य के प्रति उसकी भूमिका के प्रति व्यवहार में परिवर्तन किया।

सुल्तान के प्रति स्वामिभक्ति गैर अफगान अमीर अपने इक्ताओं के अधिकारी बने रहे। वस्तुतः सिकन्दर एवं उसके उत्तराधिकारी सुल्तान इब्राहिम लोदी के शासनकाल में शासक वर्ग में अफगान अमीरों का बाहुल्य बना रहा तथापि अफगान कबीलों के प्रभाव संख्या एवं राजनीतिक असर की दृष्टि से घटते-बढ़ते रहे। उदाहरण के लिए सुल्तान सिकन्दर लोदी के शासनकाल में लोदी, नूहानी, सेरवानी एवं फूरमुली अफगान सरदारों ने सल्तनत में प्रभावपूर्ण स्थिति स्थापित कर ली थी किन्तु इनके विद्रोहात्मक व्यवहार के कारण इब्राहिम लोदी ने अपने स्वामिभक्त अफगान अमीरों को महत्वपूर्ण पदों एवं इक्ताओं में नियुक्त किया जिससे पुराने अमीर वर्ग के प्रभाव में कमी की जा सके।

मुगलकाल में अमीर वर्ग के संगठन व संरचना में जहाँ एक तरफ स्वरूप में परिवर्तन आता है वहीं दूसरी तरफ इसके संगठन में स्थायित्व की प्रवृत्ति भी देखने को मिलती है जो सल्तनत कालीन अमीर वर्ग से भिन्न थी। एक संस्था के रूप में अमीर वर्ग मुगल प्रशासनिक व्यवस्था की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। यह तथ्य स्वीकार किया जा चुका है कि मुगल अमीर वर्ग बादशाह द्वारा निर्मित

होने के कारण अमीरों के पदों में वृद्धि, कमी एवं पद–मुक्ति का अधिकार पूर्णतः बादशाह के पास निहित था।

सल्तनत काल की प्रशासनिक व्यवस्था का पूर्व अध्यायों में उल्लेख किया जा चुका है। जिस समय बाबर ने 1526 ई0 में पानी का युद्ध जीता व मुगल साम्राज्य की स्थापना की उस समय थोड़े अन्तराल के लिए यह व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो गयी। परन्तु अपने तीन वर्ष और 8 माह के शासन काल में बाबर ने प्रशासनिक कुशलता का परिचय देते हुए इस व्यवस्था में कुछ सुधार किया और इसे पुनः कार्यक्षम बनाया। बाबर की प्रशासनिक व्यवस्था कतिपय मामलों में सल्तनत काल से भिन्न थी। बाबर ने सम्राट की पदवी धारण की थी केन्द्रीय प्रशासन में सर्वोच्च स्थान उसी का था।

तैमूरियों द्वारा शासन करने के एकाधिकार के मामले में वह सजग था अतैव उसने अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुए अधिकारियों की नियुक्तियों पदोन्नतियां व स्थानान्तरण करता रहा तथा उन्हें पदवियों से सुशोभित करता रहा।

जागीरें व उपहार प्रदान करता रहा और उनके सहयोग से प्रशासन चलाता था।

सम्राट के पश्चात केन्द्रीय प्रशासन तन्त्र में दूसरा स्थान वजीर का था इस पद पर ख्वाजा निजामुद्दीन खलीफा था। जो कि अत्यन्त कुशल प्रशासक था और उच्च पद पर आसीन होने के कारण वह प्रशासन के सभी विभागों राजस्व सेना, न्याय आदि की देखभाल करता था। वह प्रशासन का मुख्य आधार स्तम्भ था। सैनिक व्यवस्था की देखरेख के लिए बख्शी होता था जो कि सैनिकों के रखरखाव, भर्ती, प्रशिक्षण इत्यादि का कार्य देखता था और युद्धों के समय सैन्य संचालन का भी कार्य करता था। इस काल में बख्शी ही मुख्य सेना अध्यक्ष एवं सैन्य विभाग का सर्वोच्च अधिकारी होता था। केन्द्रीय प्रशासन में तीसरा अधिकारी सद्र अथवा काजी था जो कि न्यायिक तथा धार्मिक विभाग का कार्य देखते थे। बाबर के घरेलू विभाग में अधिकारियों की चार श्रेणियां थीं। प्रथम श्रेणी में दबीर, बकाबल, शरबतची, यसावल, रिकाबदार, समानची, घडियालची, द्वितीय श्रेणी में काजी, कोतवाल, मुहत्सिव, खातिब तथा बख्शी थे। तृतीय श्रेणी में शाही मुहरदार

परवांची, बाकिया नवीस तथा खिताबदार तथा चतुर्थ श्रेणी में करची, करबेगी, मुसाविर, अश्वारोहियों का सरदार आदि थे। ये सभी अधिकारी बाबर के केन्द्रीय प्रशासन के अंग थे। परन्तु बाबर के अधीन उसके घरेलू विभाग से सम्बद्ध थे।

भारत के बाहर बदख्शां, गजनी, काबुल, कन्धार तथा भारत के मुल्तान भीरा, लाहौर, सियालकोट, दीपालपुर, सरहिन्द तथा हिसार फिरोजा इत्यादि ऐसे प्रदेश थे जहाँ बाबर ने अपने पुत्रों व अमीरों को प्रशासन के लिए नियुक्त किया जो कि प्रान्तपति या गवर्नर के रूप में कार्य करते रहे। शेष साम्राज्य जिस पर उसका अधिकार नहीं हुआ था उसने अपने अमीरों के मध्य बॉट दिया ताकि वे वहॉ जाकर उन प्रदेशों को विजित करें, वहॉ का प्रशासन सम्भाले, वहॉ से भू-राजस्व वसूल करें और उन प्रदेशों को साम्राज्य के अन्तर्गत लाये। जिन प्रदेशों के अपुगान अमीरों ने बाबर की अधीनता स्वीकार कर ली उन्हें अपने प्रदेशों में जागीरदार के रूप में शासन करते रहने दिया गया। इसी प्रकार जिन स्थानीय रूप से स्वतन्त्र हिन्दू जमींदारों ने बाबर की आधीनता स्वीकार कर ली उन्हें भी वहॉ का शासन देखने रहने दिया गया।

बाबर की आत्मकथा में हमें जिन अन्य प्रशासनिक इकाइयों का उल्लेख मिलता है वे थी परगना और ग्राम। सल्तनत काल से ये इकाइयां ज्यों की त्यों चलती आ रही थी। बाबर की परगना और ग्राम। सल्तनत काल से ये इकाइयां ज्यों की त्यों चलती आ रही थी। बाबर की प्रशासन व्यवस्था में अनेक दोष थे। केन्द्रीय प्रशासन में प्रशासनिक विभागों के कार्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने का उसे समय न मिला। साम्राज्य में विभिन्न स्तरों पर प्रशासनिक एकरूपता न थी। बाबर ने राजस्व व्यवस्था की ओर भी ध्यान न दिया। उसके समय में वजहदार या जागीरदार अपने लिए भू–राजस्व एकत्र करते थे। परन्तु उसका दशमांश भी केन्द्रीय कोष में नहीं जमा करते थे। इस कारण केन्द्रीय प्रशासन की वित्तीय दुर्बलता बनी रही। बाबर ने न्याय व्यवस्था की ओर भी कोई ध्यान नहीं दिया जिसके कारण पूर्व प्रचलित न्याय व्यवस्था में जो दोष थे वे बने रहे।

जब हुमायूँ कंधार व काबुल की विजय की ओर अग्रसर हुआ तब उसके आस–पास ईरानी अमीरों का जमघट प्रारम्भ हो गया था। ऐसा लगता था कि काबुल विजय के पश्चात जब हुमायूँ के पुराने अमीरों ने पुनः उसकी सेवा में स्थान प्राप्त किया तब अमीर वर्ग में अन्तर्द्वन्द्व प्रारम्भ हो गया जो हुमायूँ के काबुल निवास के दौरान प्रतिबिम्बित होता है।

जब हुमायूँ गद्‌दी पर बैठा तो उसने केन्द्रीय प्रशासन को सुधारने की ओर ध्यान दिया। उसने सर्वप्रथम अपनी दिनचर्या निर्धारित की। वह अहल–ए–दौलत से रविवार, अहल–ए–सआदत से मंगलवार व बृहस्पतिवार तथा अहल–ए–मुराद से सोमवार तथा बुधवार को मिला करता था। इस प्रकार सप्ताह में केवल दो दिन रविवार व मंगलवार को वह राजकार्य देखा करता था। उसने अधिकारियों व अमीरों का राजकीय स्तर निर्धारित करने के उद्‌देश्य से उन्हें बाहर बारह श्रेणियों में विभाजित किया। उसने राजकीय कार्य देखने के लिए केन्द्र में चार विभाग स्थापित किये– हवाई विभाग, अग्नि विभाग, पानी विभाग तथा थल विभाग। इन विभागों की देखरेख के लिए प्रत्येक विभाग के लिए मन्त्री नियुक्त किये। अग्नि विभाग वजीर हमीद–उल–मुल्क के अन्तर्गत था जो शाही तोपखाना, अस्त्र–शस्त्र आदि का प्रबन्ध करता था। हवाई विभाग लुतफल्लाह के अन्तर्गत था जो कि शाही वस्त्रों, रसोई घर व अस्तबलों का प्रबन्ध करता था। पानी विभाग ख्वाजा हसन के अन्तर्गत था जो कि मदरा, मादक पदार्थो पेये जल आदि का प्रबन्ध करता था। थल विभाग ख्वाजा जलालुद्‌दीन मिर्जा के अन्तर्गत था जो कि कृषि, सार्वजनिक कार्यो, खालसा व शाही महल का प्रबनध करता था।

हुमायूँ का साम्राज्य पूर्ववत् विभिन्न प्रान्तों में विभाजित था। उसके समय दिल्ली, आगरा, जौनपुर, माण्डू, लाहौर तथा कन्नौज आदि प्रान्तीय

राजधानियां थी। इन प्रान्तों के प्रान्तीय गर्वनरों के अन्तर्गत बारह हजार सैनिकों की सेना सहायतार्थ रहती थी। इसी प्रकार उसके समय में प्रशासन की अन्य इकाइयां ज्यों की त्यों बनी रही। वास्तव में 1530–40 तक तथा 1554–56 तक हुमायूँ की प्रशासनिक व्यवस्था में कोई विशेष सुधार न हुए। अपने शासन काल में हुमायूँ अपने आन्तरिक तथा बाह्य शत्रुओं से युद्ध करने में इतना व्यस्त रहा कि प्रशासन की ओर वह तनिक भी ध्यान न दे सका। यही कारण है कि उसके प्रशासन का कोई सुस्पष्ट स्वरूप हमारे सामने नहीं आता है।

1540 में जब शेरशाह ने हुमायूँ को कन्नौज के युद्ध में पराजित किया उस समय मुगल साम्राज्य का प्रशासन अस्त–व्यस्त था गद्दी पर बैठने के बाद शेरशाह ने इस प्रशासन– व्यवस्था में अनेकानेक परिवर्तन व सुधार करके उसे नवीन स्वरूप प्रदान किया।

अपने पिता बाबर की भाँति हुमायूँ भी राजत्व के दैवी सिद्धान्त में विश्वास करता था वह सम्राट को पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था। मंगोल एवम् तेमूरी शासकों की भाँति परिस्थितियों ने यद्यपि उसे साम्राज्य

विभाजन करने को विवश कर दिया, किन्तु एक बार भारत से निष्कासित होने व भारत में वापस आने के उपरान्त उसने दोबारा कभी अपना साम्राज्य अपने भाइयों में विभाजित न किया। मूल रूप में वह साम्राज्य विभाजन के पक्ष में कभी भी नहीं था। सूर्य के प्रति मुगल सम्राटों को विशेष आकर्षण था। ईरान में पारसी सूर्य व अग्नि की पूजा किया करते थे। चंगेज खॉ के वंशज अपने को सूर्य का वंशज कहते थे। हुमायूँ सम्राट को प्रकाश से सम्बन्धित मानता था। इस प्रकार उसे सूर्य के प्रति आस्था थी।

बाबर तथा हुमायू दोनों के ही शासन काल में युद्धों की इतनी अधिकता थी कि इन दोनों शासकों को अपने प्रशासनिक ढॉचे को सुव्यवस्थित करने का उतना अवसर नहीं मिला जितना की उन्हें चाहिए था। बाबर जब भारत में आया तो उस समय उसके लिए सबसे बड़ी चुनौती यहॉ के अफगान अमीर थे। साथ ही राजपूतों से भी उसे पर्याप्त प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। बाबर के साथ अधिकांशतः आने वाले अमीर तूरानी थे। यद्यपि बाबर के शासन काल में उसके वैभव शाली व्यक्तित्व के सामने तो इन अमीरों की कोई खास चालें

नहीं पायी लेकिन इसका असर हुमायूँ के शासनकाल में देखने को मिला। जब तूरानी अमीर अपनी महत्वाकांक्षा के इतना वशीभूत हो गये कि हुमायूँ के लिए शासन प्रबन्ध सुव्यवस्थित करना एक कठिन चुनौती हो गयी। इतिहास के अध्ययन से इस बात का आभास होता है कि इन तूरानी अमीरों के षडयंत्रों का प्रतिफल ही था जब हुमायूँ को 15 वर्षों तक निर्वासितों की भाँति जीवन जीना पड़ा और राज सत्ता से हाथ धोना पड़ा।

हुमायू के शासनकाल में ही भारत से अमीरों का आगमन शुरू हो गया था। इसलिए हुमायूँ के शासनकाल का अन्त होते होते कुछ ईरानी अमीर अवश्य ही उसकी सेवा में आ चुके थे। फिर भी तूरानी अमीरों का वर्चस्व अभी भी बरकरार था।

बाबर के वैभवशाली व्यक्तित्व के सामने जो अमीर व्रिदोह करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते थे वे हुमायूँ के शासन काल में सिर उठाते हुए दिखाई पड़ते हैं। हुमायूँ के भाइयों द्वारा उसके विरूद्ध किये जाने वाला षडयंत्र और उन भाइयों को उकसाने में तूरानी अमीरों की भूमिका से यह स्पष्ट हो जाता

है कि तत्कालीन तूरानी अमीर किस हद तक हुमायूँ के प्रति वफादार थे।

मुगलों की प्रशासन तन्त्र का सर्वाधिक प्रभाव उनकी सेना पर था। जहाँ ये अमीर महत्वपूर्ण स्थानों पर नियुक्त रहते थे। प्रान्तों में नियुक्त अमीर हुमायूँ की अस्थिरता का लाभ उठाकर बार-बार अपनी स्वतन्त्रता घोषित करते रहे तथा विद्रोह का झण्डा बुलन्द करते रहे। इन अमीरों या प्रान्तीय शासकों को नियंत्रित करने के लिए हुमायूँ अपने शासन काल में इधर उधर भागता रहा हुमायूँ की अमीरों के प्रति नीति यह स्पष्ट करती है कि वह उन तूरानियों के प्रति जो बाबर के शासनकाल में आये थे। अब उतना विश्वासनीयता नहीं रह गयी थी ।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि बाबर तथा हुमायूँ का शासन काल विषम परिस्थितियों में मुगल साम्राज्य के लिए एक बड़ी चुनौती के रूप में सामने आया है। यद्यपि परिणति में हुमायूँ को अपनी सत्ता से हाथ धोना

पड़ा परन्तु आने वाले शासकों के लिए एक ऐसा सबक था जिससे प्रेरित होकर ही अकबर ने अपनी शासन व्यवस्था में शक्ति संतुलन के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया।

शोध प्रबन्ध का तीसरा अध्याय अकबर की उन महान उपलब्धियों से भरा पड़ा है। जिसमें अकबर ने मुगल साम्राज्य को स्थायित्व तो प्रदान किया ही साथ ही हिन्दुस्तान में एक मजबूत शासन व्यवस्था की स्थापना की।

वस्तुतः अकबर के शासन काल में भारत आने वाले अमीरों की संख्या उन्हें प्राप्त उच्च पदों के अनुसार काफी थी। अकबर ने इन अमीरों को अपने प्रशासन में उनके पूर्ववत् पदों के समकक्ष पद प्रदान किये गये। अबुल फजल ने आइन में उन अमीरों की स्पष्ट सूची दी है जिन्हें वकील, वजीर, बख्शी एवं सदर के पदों पर नियुक्त किया गया था।

हुमायूँ की मृत्यु के समय अकबर बहुत कम उम्र का था इसलिए बदख्शाँ के अमीर बैरम खाँ के संरक्षण में उसने शासन कार्य प्रारम्भ किया।

प्रारम्भ में बैरम खाँ ही शासन का सर्वेसर्वा था और अकबर के प्रतिनिधि के रूप में वह राजाज्ञा जारी किया करता था, तथा विभिन्न पदों पर अमीरों की नियुक्ति पदोन्नति तथा मंसबों का निर्धारण किया था। यद्यपि बाद में किन्हीं कारणों से जिनमें कुछ अमीरों की भूमिका परिलक्षित होती है। उसके तथा सम्राट के बीच मतभेद हो गये और उसे वकील के पद से हाथ धोना पड़ा। बाद में उसके विद्रोह का दमन करने के लिए अकबर ने दूर तक उसका पीछा भी किया।

तूरानियों की महतवाकांक्षा और स्वार्थलिप्सा ने अकबर को अन्य जातियों का अपने शासन में समावेश करने के लिए प्रेरित किया। अकबर के शासन काल में ईरानी अमीरों का वर्चस्व धीरे–धीरे कायम होने लगा। अकबर के प्रशासन में एक लम्बे समय तक इन ईरानियों का वर्चस्व बना रहा। जिसमें मुगल अमीर वर्ग में ईरानी अमीरों का वह दल प्रमुख स्थान प्राप्त किये था जो हुमायूँ हिन्दुस्तान से ईरान भागने पर तथा पुनः हिन्दुस्तान जीतने पर उसके साथ था। ईरानियों के इस केन्द्रीय दल का उच्च पदों पर नियुक्त होना तथा सफविद ईरान में उत्पन्न परिस्थितियों के कारण पैदा हुई स्थिति से वहाँ के अमीरों

का भारत में संरक्षण प्राप्त करना दो ऐसे महत्वपूर्ण तथ्य थे जिनके कारण ईरानी अमीर वर्ग मुगल अमीर वर्ग में निरन्तर वृद्धि होती रही। वस्तुत. ईरानी अमीरों द्वारा अकबर को निःसंकोच समर्थन देना एक महत्वपूर्ण तथ्य है।

इख्तदार आलम खाँ द्वारा पेश की गयी तालिका से स्पष्ट होता है कि 1965 से 1975 ई0 के मध्य ईरानी अमीरों का कीर्तिशाली जो वस्तुतः आकमिस्क न होकर तात्कालिक स्थितियों एवं निश्चित नीति का प्रतिफल था उदय हुआ।

भारतीय मुसलमानों का मुगल अमीर वर्ग में 1565 ई0 से प्रभाव बढ़ना प्रारम्भ हो गया था। अकबर द्वारा प्रशासन की बागडोर अपने हाथ में लेने के साथ ही राजपूतों की भी शाही सेना में दखलंदाजी प्रारम्भ हो चुकी थी। प्रमुख राजपूतों कुलों तथा शेखजादाओं की शाही सेना में उपस्थिति 1561 ई0 तथा उसके बाद सहजता से देखी जा सकती है। इस अवधि में अकबर ने विभिन्न तरीकों से इन वर्गों के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने का सफल प्रयत्न किया। अकबर द्वारा राजपूतों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करना

इस लक्ष्य की प्राप्ति की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था। इस प्रकार मुगल अमीर वर्ग अपने विकास के प्रथम चरण बाबर, हुमायू तथा अकबर के शासन काल में एक सुसंगठित बहुजातीय समूह के रूप में उभर कर सामने आया। इस अमीर वर्ग में तूरानी (उमर एशियाई), ईरानी (परिशियाई) अफगान, शेखजादा (भारतीय मुसलमान), राजपूत आदि शामिल थे।

मुगल अमीर वर्ग में विभिन्न जाति व धर्म के लोगों का समावेश वास्तव में ऐतिहासिक परिस्थितियों का परिणाम था। यद्यपि बाबर और हुमायूँ के शासन काल में कुछ वर्गों तक ही सत्ता की शक्ति केन्द्रित रहने के बाद उत्पन्न हुई समस्याओं से अकबर भलीभाँति परिचित था और उसने एक ऐसी व्यवस्था को जन्म दिया जिनमें सभी वर्गों के बीच शक्ति संतुलन स्थापित हो सके। यद्यपि सुनिश्चित शाही नीति ने भी इसके विकास में योगदान दिया। सम्भवतः अकबर की नीति इन सभी तत्वों को शाही सेवा में संगठित करना था। अकबर के शासन काल में अमीर वर्ग के संगठन की एकता में भिन्नता का समावेश था। भिन्नता का यह तत्व भावना प्रधान था परन्तु इससे मानसिक उत्तेजना ने भी जन्म लिया।

इसी मानसिक कष्ट की अभिव्यक्ति 1581 का विद्रोह। बादशाह द्वारा प्राथमिकता दिये जाने से अमीर वर्ग के जातीय गुटों में एक दूसरे के प्रति वैमनस्यता का भाव उजागिर होने लगा था।

सामयिक ऐतिहासिक परिस्थितियों एवं निश्चित रानीतिक उद्देश्यों के साथ अकबर के शासन काल में जिस अमीर वर्ग का उद्भव हुआ वह जहाँ एक तरफ उदार निरकुंश राज्य के स्वरूप को प्रकट करता है, वहीं दूसरी तरफ राष्ट्रीय समन्वय का चित्र दिखलाता है।

अपनी शासन व्यवस्था को सुदृढ़ीकरण प्रदान करने के लिए अकबर ने मंसब व्यवस्था का इजात किया। जिसके जरिये वह विभिन्न जातीय तत्वों को व्यवस्थित कर उसने सद्भावना पैदा करने का कार्य किया। जिससे अमीर वर्ग की कार्य क्षमता में वृद्धि की जा सके और साथ ही वह पूरी तरह से शाही अनुकम्पा पर भी निर्भर रहें। सम्भवतः अकबर यह चाहता था कि अमीर वर्ग के विभिन्न जातीय धार्मिक एवं प्रान्तीय गुटों के मध्य शक्ति संतुलन

इस सीमा तक बना रहे कि बादशाह अमीर वर्ग के किसी एक गुट पर निर्भर न रहे। अकबर के साथ राजपूतों के समझौतों के सम्बन्ध में सतीश चन्द्रा ने ठीक ही कहा है कि उसका राजपूतों के साथ समझौता किसी हद तक पुराने अमीर वर्ग की शक्ति को संतुलित करने का सकारात्मक प्रयास था। किसी एक वर्ग की स्वामिभक्ति के प्रति अकबर पूर्णतः आश्वस्त नहीं था इसीलिए उसने ऐसी व्यवस्था का प्रारूप खड़ा किया जिसमें कोई एक वर्ग इतना शक्तिशाली न हो सके कि वह बादशाह की सत्ता को ही चुनौती दे।

वस्तुत. यह समझौता राजपूतों की व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की प्राप्ति एवं सम्बन्धित राजपूत राज्यों में सुव्यवस्था स्थापित करने के लिए सार्थक प्रमाणित हुआ। जिसकी उपलब्धि अन्यथा अप्राप्ति थी। इस तरह से अकबर द्वारा राजपूत शासकों के साथ सहयोग की नीति ने मुगल साम्राज्य के अमीर वर्ग की संरचना में नवीन तत्व का समावेश किया जिससे बहुत से राजपूत अमीर प्रशासनिक संरचना में नवीन तत्व के रूप में शामिल हुए और राजा एवं राज सत्ता के अंग बन गये। अकबर के काल के 1575–1595 ई0 के मुगल अमीर वर्ग

ने हिन्दू शासकों (मंसबदारों) की स्थिति काफी महत्वपूर्ण हो गयी थी। इस काल में 500 तथा इससे अधिक के कुल 184 मंसबदारों में राजपूत मंसबदारों की संख्या 27 थी और इनके अतिरिक्त तीन और हिन्दू मंसबदार थे। अकबर की यह नीति वास्तव में मुगल नीति की आधार शिला रही। तुर्कों के आगमन से पूर्व ही उत्तरी भारत में राजपूत शासक वर्ग की बागड़ोर संभाले हुए थे। इसके अतिरिक्त ये राजस्थान में राजवंशों के सृजनकर्ता थे और उत्तरी भारत के विस्तृत क्षेत्र में राजपूत अपना प्रभव स्थापित किये हुए थे। इस तरह राजपूतों के साथ समझौते का महत्व केवल कुछेक स्थानीय राजपूत शासकों के साथ आपसी सुविधा तक ही सीमित नहीं था, वरन् मुस्लिम एवं गैर- मुस्लिम अमीर वर्ग को मिश्रित करने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण एवं दूरगामी कदम था।

मुगल दरबार में राजपूतों को प्राप्त पदों से सम्बन्धित आँकड़ों के अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि जिस नीति का निमार्ण अकबर ने किया था वह बाद मुगल शासकों के शासन काल में विकसित होती रही।

वास्तव में अकबर महान् के अन्तर्गत राजस्व सिद्धान्त का पूर्ण रूप से विकास हुआ। अकबर ने अपने पूर्वजों से कुछ विचार व परम्पराएं विरासत में प्राप्त की थी। अकबर के विचार में सम्प्रभुता मुसलमान समाज व अमीरों द्वारा न तो किसी को भेंट में दी जा सकती है और न ही रूढ़िवादी इस्लामी सिद्धान्त के अनुसार ही वह हो सकती है उसकी सम्प्रभुता वंशानुगत थी। अकबर के विचार में सम्प्रभुता मुसलमान समाज व अमीरों द्वारा न तो किसी भेंट में दी जा सकती है और न ही रूढ़िवादी इस्लामी सिद्धान्त के अनुसार ही वह हो सकती है। उसकी सम्प्रभुता वंशानुगत थी। यह उसका जन्मसिद्ध अधिकार था तथा योग्यता के कारण्सा उसे प्राप्त हुई। उसके शासन काल के प्रख्यात इतिहासकार अबुल फजल ने उसके राजत्व सिद्धान्त पर यथेष्ट रूप से प्रकाश डाला। अबुल फजल के अनुसार बादशाह दो शब्दों "पाद" (स्थायी) शाह (स्वामी) से बना है । अतः पादशाही स्थायी स्वामी का प्रतीक है। इस महान पद की महत्ता के सम्बन्ध में उसने कहा है कि ईश्वर की दृष्टि में इस पद से महान अन्य कोई पद नहीं। वास्तव में अकबर को ऐसे राजत्व सिद्धान्त की आवश्यकता थी जिसका आधार केवल इस्लाम धर्म या राजनीति न होकर दार्शनिक

हो। उसका इनाम–ए–आदिल होने का दावा न तो रूढ़िवादी सुन्नियों और न ही शियाओं को सन्तुष्ट कर सकता था। उसे ऐसे राजत्व सिद्वान्त की परम आवश्यकता थी जो कि हिन्दू व मुसलमानों की विचारधारा को सन्तुष्ट कर सके क्योंकि वह केवल मुसलमानों का ही नहीं वरन् हिन्दुओं व अन्य जातियों का भी शासक था। उसके राजत्व सिद्धान्त का प्रतिपादन अबुल फजल ने किया। एक निष्ठावान शासक के राजत्व सिद्धान्त के क्या पहलू होने चाहिए, उसकी व्याख्या अबुल फजल ने अकबर नामा व आईने–ए–अकबरी में जगह–जगह की है।

तैमूरी शासकों की भाँति अकबर राजा के दैवी उत्पत्ति के सिद्धान्त में विश्वास रखता था। अबुल फजल ने इसकी यत्र–तत्र चर्चा की है। अकबर अपने को ईश्वर की प्रतिच्छाया कहा करता था। अबुल फजल के शब्दों में राजसत्ता ईश्वर से स्फुटित होने वाला प्रकाश है तथा विश्व प्रकाशक सूर्य की एक किरण है। वह पूर्णता की पुस्तक का तर्क है तथा सभी गुणों का सार है। आधुनिक भाषा में इस फर्रे– इजोदी (दैवी ज्योति) तथा प्राचीन भाषा में किया खुरा (पवित्र प्रकाश चक्र) कहा गया है। बिना किसी मध्यस्थता के ईश्वर इसे

सम्राटों को प्रेषित करता है और इस ज्योति की उपस्थिति में लोग अधीनतापूर्वक श्रद्धा से अपना मस्तक भूमि की ओर झुका लेते हैं। सम्राट परमात्मा की शक्ति का प्रतीक होता है। वह परमात्मा रूपी सूर्य का प्रकाश फैलने वाली किरण होता है। अबुल फजल के अनुसार ईश्वर की दृष्टि से राजसत्ता से बढ़कर कोई नहीं नहीं होता। बंगाल में दाऊद अफगान के विद्रोह का दमन करते समय अकबर ने कहा कि ईश्वर की परिच्छाया होने के कारण हम केवल कुछ ही प्राप्त कर सकते हैं और अधिकत देते हैं। हम क्षमा करने में बदले की भावना नहीं रहती ।

अकबर ने अमीरों को उनकी योग्यतानुसार मंसब देकर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित कर उन्हें सैनिक तथा असैनिक उत्तरदायित्व सौंपकर उमरा वर्ग को संगठित किया। अकबर की मंसब प्रणाली ने सैनिक व गैर सैनिक तत्वों को समेट लिया। उसमें न केवल प्रतिष्ठित योद्धा तथा सेनानायक ही थे वरन् कुशल प्रशासक, कवि साहित्यकार, कलाकार, जमींदार, जागीरदार, अधिकारी इत्यादि भी थे। जिन्हें राजाश्रय प्राप्त था। इन विभिन्न तत्वों को मिलाने वाले

[illegible]

इस प्रकार अकबर ने अपने शासन काल के दौरान विभिन्न जातियों का समावेश कर अपने शासन प्रबन्ध को किसी एक वर्ग की धुरी बनने से बचाया। वहीं दूसरी ओर हिन्दुस्तान को एक सुदृढ़ शासन प्रणाली भी प्रदान की ।

बाबर तथा हुमायूँ के बाद हिन्दुस्तान को संगठनात्मक ढाँचे में ढालना अकबर की सबसे बड़ी चुनौती थी जिसको उसने बड़ी ही सहजता से लिया और शाही दरबार में प्रत्येक जातियों के प्रतिनिधियों को समाहित कर एक नये युग की शुरूआत की। इस काल में तूरानी अमीरों का महत्व धीरे-धीरे काफी कम हो गया था और उनका स्थान ईरानियों भारतीय मुसलमानों तथा राजपूतों ने ले लिया था।

इस शोध ग्रन्थ का चौथा अध्याय मुगल काल के तूरानी अमीरों कवियों, साहित्यकारों आदि का विवरण प्रस्तुत करता है तथा उनके रहन-सहन आदि का उल्लेख करता है। तत्कालीन इतिहास के अध्ययन से यह स्पष्ट होता

का शासन आते आते काफी सिमट गयी थी। बाबर, हुमायूँ तथा अकबर के काल के प्रमुख अमीरों जिनमें तूरानियों की महत्ता थी। इस शोध ग्रन्थ के विषय को देखते हुए समाहित किया गया है। उनका जीवन शैली, रहन–सहन, खान–पान वेशभूषा, मनोरंजन के साधन हरम आदि विषयों पर भी इस अध्याय में विस्तृत चर्चा की गयी है।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल के अमीर शासन द्वारा प्रदत्त वस्त्रों को दरबार में आने के समय धारण किया करते थे तथा अपने सिर पर पगड़ी लगाया करते थे। इन अमीरों के कमर में पेटी बांधे जाने का उल्लेख भी मिलता है। सम्राट का वस्त्र विशेष किस्म का होता था और वह राजसत्ता की विशेष वस्त्र शाला में तैयार किया जाता था। उस समय रेशमी, सूती तथा जरी के काम से युक्त वस्त्रों की अधिकता थी। निःसन्देह अमीर वर्ग अपने शासक के अनुकरण में ही अपनी वेश भूषा का निर्धारण करता था।.

प्रमुख उत्सव एवं त्योहारों में तुला दान, ईदुदजुहा, ईदे–मिलाद,

पर दान पुण्य करने की परम्परा का निर्वाह करते थे। साल में दो बार सम्राट को तौला जाता था और उसे गरीबों में वितरित किया जाता था।

प्रमुख संस्कारों में गोद भराई, विस्मिल्लाह खानी, विवाह एवं मृत्यु के बाद के संस्कार शामिल थे।

मनोरंजन के साधनों में आखेट, शतरंज का खेल, घुड़सवारी तथा विभिन्न उत्सवों पर होने वाली प्रतियोगिता प्रमुख थी।

इस काल के शासक एवं अमीर वर्ग में खान-पान के प्रति विशेष रूचि थी। शासक का भोजन शाही पाकशाला में बनता था। कुछ शासक हरम में अपनी स्त्रियों के साथ अमीरों के साथ भोजन करने में रूचि रखते थे। इस काल में शाक सब्जी, फल फूल, सूखे मेवे, मसाले तथा विभिन्न प्रकार की रोटियों का उल्लेख तथा पेय पदार्थों में मदिरा और शरबत आदि का उल्लेख मिलता है।

बाबर के शासन काल में उसके द्वारा आयोजित की जाने वाली मदिरा गोष्ठियों का उल्लेख बाबरनामा में मिलता है। हुमायूँ अफीम का सेवन करता था तथा अन्य खाने-पीने की चीजों के प्रति वह निरूत्साहित रहता था। अकबर विभिन्न प्रकार के व्यंजनों के निर्माण तथा उसके खाने का शौकीन था।

इस काल के शासकों के अपने हरम थे जिसमें उनके परिवार की स्त्रियां निवास करती थी। हुमायू के निर्वासन के समय उसके हरम में स्त्रियों का अभाव हो गया था परन्तु अकबर के हरम में बहुत सी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है जिसमें राजपूत स्त्रियाँ भी शामिल थी। अकबर ने अपने हरम आगरा, फतेहपुर सीकरी आदि स्थानों पर स्थापित कर रखा था और इन हरम की व्यवस्था राजसत्ता तथा सम्राट का दायित्व होता था।

हरम के अन्दर दास दासियों एवं सेवक-सेविकाओं का जमावड़ा होता था जबकि हरम को बाहर से शाही अधिकारी सुरक्षा प्रदान करते थे। हरम की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए अकबर ने एक विशेष विभाग की स्थापना की थी। जिससे उसके आय और व्यय का निश्चित लेखा जोखा

तैयार रहे और कोई अधिकारी अपव्यय न कर सके। हरम के अन्दर महिला सुरक्षा कर्मी तैनात रहती थी। जिससे हरम के अन्दर की स्त्रियों को बाहरी दुनिया की खबर नहीं हो पाती थी।

हरम व्यवस्था में रहने वाली स्त्रियों को सुख-सुविधाएं तो सभी मिलती थी परन्तु उनकी प्राकृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन नहीं थे। इसलिए कई स्त्रियों पर चरित्र दोष लगाये जाने का भी उल्लेख मिलता है।

ऐसा समझा जाता है कि इस काल में हरम की स्त्रियां अधिकतर हरम के अन्दर ही अपना जीवन जीती थी। यद्यपि अकबर के शासन काल में इन स्त्रियों को कुछ मुक्ति दिये जाने का संकेत मिलता है जबकि वह उन्हें सैर-सपाटे के लिए बाहर ले जाता था।

राजकुमारियों के विवाह कम होते थे। परिणामस्वरूप या तो अधिकांश राजकुमारियों हरम के अन्दर पैदा हुई बच्चों के पालन पोषण में अपना जीवन व्यतीत कर देती थी या तो धार्मिक पूजा पाठ में संलग्न हो जाती थी।

इस काल में अमीर वर्ग अपने शासक की भाँति अपने हरम स्थापित करता था और उसी तर्ज पर उसकी व्यवस्था देता था। प्रान्तीय शासन में उन्हें इसी प्रकार की व्यवस्था दिये जाने का उल्लेख तत्कालीन इतिहासकारों द्वारा दिया गया है।

इस सम्पूर्ण अध्याय में मुगल काल के 1525 से 1605 ई0 के सामाजिक जीवन के कुछ पहलुओं पर प्रकाश डालने तथा तत्कालीन शासक वर्ग के साथ शासन प्रबन्ध में भागीदारी करने वाले अधिकारियों एवं अमीरों की जीवन शैली की ओर इंगित किया गया है।

***

परिशिष्ट – 1

तुरानी कवि .

आसफी कवि :

सुल्तान हुसेन मिर्जा के यहाँ आसफी नामक एक कवि था। आसफी उसका उपनाम था। वह वजीर का लड़का था। कवि ने जो सेर लिखी उसमें प्रेम का बहुत अभाव था। 1506–07 ई0 में खुरासान में बाबर से मिला था।[1]

पीनाई कवि

यह हेरी का रहने वाला था। इसके पिता का नाम उस्ताद मुहम्मद सब्जबीना था। उसकी गजलों में सुन्दरता पर अधिक बल दिया गया। 1496 ई0 में बाबर से मिला था। करशी के किले में कत्ले आम में मार डाला गया।[2]

---

1. बाबरनामा: रूपान्तरकार केशव प्रसाद ठाकुर, पृ0: 211–212

2. वही, पृ0: 212–213

मौलाना सैफी बुखारी :

बुखारा का रहने वाला था। वह मुल्ला था और लोगों के बीच अपनी मुल्लाई का प्रचार करता था। दो संग्रह में एक भी कहानियां तथा दूसरे संग्रह में रूबाइयां एकत्रित की थी।[3]

अब्दुल्लाह :

वह जाम का निवासी था। हातिमी उसका उपनाम था। सिकन्दर नामा के आधार पर तीमूरनामा लिखा। लैला मजनू नामक मसनवी अधिक मशहूर हुई।[4]

मीर हुसैन मुअम्बाई :

उसका सम्पूर्ण जीवन मुअम्बा लिखने में व्यतीत हुआ। वह फकीर स्वभाव का आदमी था। किसी से उसका ईर्ष्या भाव नहीं था।[5]

---

3. बाबरनामा: रूपान्तरकार- केशव प्रसाद ठाकुर 1968, पृ0:213

4 वही, पृ0: 213-214

<u>पीर मोहम्मद बदख्शी</u> :

उसने मुअम्बे के विषय में एक किताब लिखा। वह स्वभाव का अच्छा आदमी था और उत्तम श्रेणी का एक मित्र था। 1511–12 में समरकन्द में बाबर से मिला एवं उसके साथ शामिल हो गया।[6]

<u>युसुफवदी</u> :

यह परगना का रहने वाला था। वह शायरी करता था और गजले लिखा करता था।[7]

<u>आही कवि</u> :

यह गजले अच्छी लिखता था उसने एक दीवान का संग्रह किया था।[8]

---

6 बाबरनामाः रूपान्तरकार– केशव प्रसाद ठाकुर, 1968, पृ0:211–212

7. वही, पृ0–214

8. वही, पृ0–214

<u>मोहम्मद सालेह</u> :

शायरी में यह गजले लिखता था। उसकी गजले रसीली, चुभती हुई और मौके की होती थी। काव्य के नियमों के अनुसार उसकी गजलों में कुछ अशुद्धियां भी पायी जाती थी। तुर्की शेरे भी लिखता था।वह कुछ कठोर स्वभाव का था।[9]

<u>मैली हेरवी</u> :

इसका नाम मिर्जा कुली थी। यह व्यक्ति तुर्क वंश का था और प्रसन्नचित्त लोगों के समूह में निवास करता था।[10]

<u>दरवेश बहराम</u> :

यह तूर्की नस्ल का है और बयान जनजाति में उत्पन्न हुआ है। पैगम्बर खिज्र का उसे दर्शन हुआ है और प्रकाश प्राप्त किया। संसार का त्याग करके वह भिश्ती बन गया।[11]

---

9 बाबरनामा: रूपान्तरकार- केशव प्रसाद ठाकुर 1968, पृ0-214

10. आइने अकबरी अनु0-हरिवंश राय शर्मा (1995) पृ0-261

11. वही, पृ0-265

सबूही चगताई .

इसका काबुल में पालन पोषण हुआ। एक क्रान्तिमय वयोवृद्ध व्यक्ति जिसके हाथ में छड़ी थी उसे जगाक और कविता करने की आज्ञा दी । चूँकि उसमें कविता लिखने की शक्ति नहीं थी। इसलिए उसको स्वप्न समझकर उठा और दूसरे स्थान पर सो गया परन्तु उसी वीर ने जगाया और फिर वही आज्ञा दी।[12]

यादगारे हालती .

यह तूरानी है। यह स्वार्थी व्यक्ति है।[13]

---

12. बाबरनामा: रूपान्तरकार– केशव प्रसाद ठाकुर, 1968, पृ0–266

13. वही, पृ0–270

परिशिष्ट –2

अकबर के काल के कुछ मुख्य संगीतज्ञों का उल्लेख निम्न तालिका में है :

नाम	जन्म स्थान उपाधि सम्बन्ध	विशेष विवरण
मियाँ तानसेन	ग्वालियर	अतीत हजार वर्ष में ऐसे दूसरे गायक का जन्म भारत में नहीं हुआ।
बाबा रामदास	"	"
सुभान खाँ	"	"
श्री ज्ञान खाँ	"	"
मिया चाँद	"	"
विचित्र खाँ	सुभान खाँ का भ्राता	"
मुहम्मद खाँ	दाड़ी	सरमन्दल (एक प्रकार ठोल) बजाने वाला
बाज बहादुर	मालवा का शासक	अद्वितीय गायक
शिहाब खाँ	ग्वालियर	बीन बजाने वाला
दाउद	दाड़ी	गायक

सरोद खाँ	ग्वालियर	गायक
मिया लाल	"	"
तान तरंग खाँ	आत्मज मियाँ तानसेन	"
मुल्ला इसहाक	दाढ़ी	"
उस्तादोस्त	मशहद	बाँसुरी बजाने वाला
नानक जार्जू	ग्वालियर	गायक
परवीन खाँ	आत्मज नानक जार्जू	बीन बजाने वाला
सूरदास	आत्मज रामदास	गायक
चाँद खाँ	ग्वालियर	"
रंगसेन	आगरा	कर्ना (एक प्रकार की बांसुरी बजाने वाला)
शेख दावन	दाढ़ी	"
रहमतुल्ला	भ्राता मुल्ला इसहाक	गायक
मीर सैयद अली	मशहद	सांरगी बजाने वाला
उस्ता युसूफ	हेरात	तंबूरा बजाने वाला
कासिम	उपाधि (कोहबर) एक चगताई जनजाति	उसने कुबुज और रबाब के के मध्यवर्ती एक बाजे का आविष्कार किया।

ताराबेग	किवचाक	कुम्बुज बजाये वाला
सुल्तान हाफिस हुसैन	मशहद	गाटा और भाव बताता था
बहराम कुली	हेरात	सांरगी बजाता है
सुल्तान हाशिम	मशहद	तम्बूरा बजाता है।
उस्ता शाह मुहम्मद	"	सुर्ना बजाता है
उस्ता मुहम्मद अमीन	"	तम्बूरा बजाता है
हाफिज ख्वाजा अली	"	गाटा और भाव बताता है।
मीर अब्दुल्ला	भ्राता अब्दुल हई	कानून (एक बाजा जिसमें बहुत से तार लगे रहते हैं) बजाता है।
पीर जादा	भ्रातृज मीर दवाम खुरासानी	गाटा और भाव बताता है
उस्ताद मुहम्मद सेन	"	तम्बूरा बजाता है

इसमें से अधिकांशतः तूरानी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मूल स्रोत		लेखक
ग्रन्थ का नाम :		
तबकाते नासिरी		मिनहाजुस्सिराज
रेहला	इब्नबतूता	इब्नबतूता
फुतूहूस्सलातीन		ईसामी
तुर्क मलिकों की जीवनियां		मिनहाज
तारीखे शेरशाही		अब्बास खॉ शेरवानी
तारीखे रशीदी		मिर्जा हैदर दौगलात
तारीखे मुबारक शाही		याहिया सरहिन्दी
तारीखे मुहम्मदी		मुहम्मद जकी
तबकाते अकबरी		
तारीखे फरिश्ता		मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह
मुन्तखबुत तवारीख		अब्दुल कादिर
तारीखे दाउदी		अब्दुल्ला
वाक्यात – ए– मुश्ताकी		रिजकुल्लाह मुश्ताकी

बाबरनामा	बाबर
तारीखे खाने जहानी	ख्वाजा निजामतुल्ला हावी
आइने अकबरी	अबुल फजल
अकबरनामा	अबुल फजल
मआसिरूल उमरा	नबाब सहसुजदौला शहरनवाज खॉ
हुमायू नामा	गुलबदन बेगम
मीराते अहमदी	अली मोहम्मद खॉ
फुतुहाते-फिरोजशाही	फिरोजशाह तुगलक (अग्र मेहदी हुसेन द्वारा संपादित)
फतवाए जहादारी	जियाउद्दीन बरनी
तारीखे फिरोजशाही	बरनी

<u>अन्य स्रोत</u> :

दिल्ली सुल्तनत	हबीब, निजामी

सम आस्पेक्टस आफ मुस्लिम एडमिनिस्ट्रेशन इन इण्डिया	आर0, पी0 त्रिपाठी
मुगल शासन पद्धति	जदुनाथ सरकार
	नेल्सन राइट
खल्जी	किशोरी सरन
मध्यकालीन भारत	स्टेनले लेनपूल
तुगलक डायनेस्टी	आगा मेंहदी हुसेन
तुगलक कालीन भारत	अतहर अब्बास रिजवी
भारतीय इतिहास का सर्वेक्षण	के0एम0 पणिकर
भारतीय इतिहास का सर्वेक्षण	के0एम0 पणिकर
उत्तर तैमूर कालीन भारत	सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी
दिलोकल	ई0सी0बेली
मोहम्मद डायनेस्टी	
ए कम्प्रेहेंसिव हिस्ट्री आफ इण्डिया	हेनरी बेवरीज
दि आक्सफोर्ड हिस्ट्री आफ इण्डिया	वी0ए0 स्मिथ

दि मंसब सिस्टम एण्ड दि मुगल आर्मी	अब्दुल अजीज
नोबेल्टी अण्डर द सुल्तनत आफ देहली	एस0बी0पी0 निगम
सल्तनत कालीन सामाजिक तथा आर्थिक इतिहास	राधेश्याम
न्यामतुल्लाज़ हिस्ट्री आफ दि अफगान्स	नील्द भूषण राय
मध्यकालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक संस्थाएं	घनश्याम दत्त शर्मा
मुगल किंगशिप एण्ड नोबेलिटी	आर0पी0 खोसला
मध्यकालीन प्रशासन, समाज व संस्कृति	राधेश्याम
भारत में मुगल साम्राज्य	एस0आर0 शर्मा
भारत का इतिहास इलियट, डाउसन	
बाबर एण्ड डापरिस्ट एण्ड डिस्पाट	एस0एमू0 एडवर्डस
एन एम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी	रशब्रुक विलियम
मुगल नोब्लिलिटी अण्डर औरंगजेब	अथर अली

पार्टीज एण्ड पालिटिक्स एट द मुगल कोर्ट	सतीश चन्द्र
मुगलाकीन भारत (हुमायूँ)	सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी
अकबर	मेलीसन
द नोबिलिटी अण्डर अकबर इक्तिदार आलम खॉ एण्ड द डेवलपमेन्ट ग्रोथ आफ ईरानी एलिमेन्ट इन अकबर नोबिलिटी	अफजल हुसैन
दि मुगल एम्परर हुमायूँ	आर0एस0 अवस्थी
	ईश्वरी प्रसाद
हिस्ट्री आफ इण्डिया	एलफिसंटन
राजपूत पालिटिक्स	जी0 डी0 शर्मा
द सेण्ट्रल स्ट्रक्चर आफ मुगल एम्पायर	इब्न हसन
अकबर द ग्रेट	ए0एल0 श्रीवास्तव
प्रोविंशियल गर्वनमेन्ट आफ दि मुगल्स	पी0शरण

मध्यकालीन भारत	हरिश्चन्द्र वर्मा
अकबर रिजम्पसन आफ जागीर्स	महेन्द्र पाल सिंह
ऐग्रेरियन सिस्टम ——	मोर लैण्ड
ऐग्रेरियन सिस्टम आफ मुगल इण्डिया	इरफान हबीब
शर्की सुल्तानों का इतिहास	डा0 शेफाली चटर्जी
दि आर्मी आफ द इण्डियन मुगल्स	विलियम इरविन

***